RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

# सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा



श्री 1008 महामंडलेश्वर

श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज

श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

स्व. पं. पू.1008 श्री रामानन्द जी

तपोवन मंदिर, मोरा गांव, सूरत



वर्ष-12 अंक:16 ता. 09 जूलाई 2023, रविवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत ( गुजरात ) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi


## भारतीय सेना ने दिखाया चीन को दम, टैंकों की दहाड़ से गूंज उठी पूर्वी लद्दाख की घाटी

**नई दिल्ली।** चीन और पाकिस्तान की नापाक हरकतों को नाकाम करने के लिए भारतीय सेना सीमा पर सदैव मुस्तैद रहती है। समय-समय पर अभ्यास भी करती रहती है। सेना ने दुनिया की सबसे ऊंची नदी घाटियों में से एक बड़ी संख्या में टैंक और बख्तरबंद वाहन तैनात कर सिंधु नदी को पार करने और दुश्मन के ठिकानों पर हमले करने के लिए पूर्वी लद्दाख में अभ्यास किया। टी-90 और टी-72 टैंकों और बीएमपी पैदल सेना के लड़ाकू वाहनों सहित भारतीय सेना ने एक टैंक फॉर्मेशन बनाया। आपको बता दें कि पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले सिंधू नदी पूरे लद्दाख सेक्टर के माध्यम से चीनी सेना द्वारा नियंत्रित तिब्बती क्षेत्र से होकर बहती है। सेना के अधिकारियों ने कहा कि इस तरह के अभ्यास आकस्मिक परिस्थितियों की तैयारी के लिए किए जाते हैं। साथ ही घाटियों के रास्तों से होते हुए भारतीय इलाकों में कब्जा करने की दुश्मनों की कोशिश को नाकाम करने के लिए सेना को तैयार किया जाता है। भारतीय सेना दुनिया की उन चुनिंदा सेनाओं में से एक है जो 16,000 फीट तक की ऊंचाई पर बड़ी संख्या में टैंकों का संचालन करती है। चीनी सैनिकों ने सैनिकों को हटाकर पूर्वी लद्दाख सेक्टर में टैंकों के साथ आक्रामकता दिखाना शुरू कर दिया, तो भारतीय सेना ने पूर्वी लद्दाख सेक्टर में बड़ी संख्या में टैंक और बख्तरबंद लड़ाकू वाहन तैनात कर दिया। इस इलाके में खुली घाटियां हैं जो टैंक से युद्ध के लिए बहुत अनुकूल हैं। भारतीय सेना पाकिस्तान से सटी सीमा यानी कि पंजाब सेक्टर में बड़े पैमाने पर इस तरह के अभ्यास करती है। पहले ऐसा माना जाता था केवल मैदानी और रेगिस्तानी इलाकों में ही टैंक युद्ध होंगे, लेकिन हाल के दिनों में यह मानसिकता बदल गई।

### 'आपकी ईडी टीवी चैनलों पर झूठी खबरें चलवा रही'

# एके ने सिसोदिया पर ईडी के दावे को लेकर पीएम मोदी पर बोला हमला

**नई दिल्ली।** दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा अपने पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया की संपत्तियों की कुर्की पर दिए गए बयान को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला बोला। केजरीवाल ने आरोप लगाया कि पीएम मोदी सिसोदिया को बदनाम करने के लिए ईडी का इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि एजेंसी को दिल्ली के पूर्व मंत्री के खिलाफ कुछ भी नहीं मिला। केजरीवाल ने शुक्रवार रात ट्वीट कर कहा, प्रधानमंत्री जी, जब आपको मनीष सिसोदिया के खिलाफ कुछ नहीं मिला तो आपने ईडी के जरिये मनीष को बदनाम करना चालू कर दिया? आपकी ईडी शाम से टीवी चैनलों पर झूठी खबरें चलवा रही है कि मनीष सिसोदिया की 52 करोड़ की संपत्ति जब्त की गई। ईडी ने असल में जो

संपत्ति जब्त की है, उसके कागजात ये रहे। टोटल 80 लाख की संपत्ति जब्त की है, वो भी 2018 के पहले की, जब एक्साइज नीति बनी ही नहीं थी। पूरी संपत्ति एक नंबर की है।

उन्होंने कहा, लोगों ने कभी सोचा नहीं था कि एक दिन ऐसा आएगा जब भारत जैसे महान देश का ऐसा प्रधानमंत्री मिलेगा जो इस तरह खुलेआम झूठ बोलकर अपने राजनीतिक प्रतिद्वंदियों को खत्म करने की कोशिश करेगा। असली भ्रष्टाचारी कौन हैं, ये आप भी जानते हैं। हिम्मत है तो उन्हें पकड़ कर दिखाइए।

इससे पहले शुक्रवार को ईडी ने शुक्रवार को कहा कि दिल्ली आबकारी नीति से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आम आदमी पार्टी (आप) नेता मनीष सिसोदिया, अमनदीप सिंह ढल, राजेश जोशी, गौतम मल्होत्रा और अन्य से संबंधित 52.24 करोड़ रुपये की चल और अचल संपत्ति अस्थायी रूप से कुर्क की है। इसमें 11.49 लाख रुपये बैंक जमा राशि के अलावा सिसोदिया दंपति की दो अचल संपत्ति कुर्क की गई हैं।

आम आदमी पार्टी (आप) की वरिष्ठ नेता आतिशी ने कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आम आदमी पार्टी के नेता मनीष सिसोदिया जी के बारे में झूठी खबरें फैलाई जा रही हैं। मीडिया में स्टोरी प्लांट की जा रही हैं कि मनीष सिसोदिया की करोड़ों की संपत्ति जप्त हो गई है, जबकि 3 जुलाई का ईडी का जो ऑर्डर है, जिसके तहत ये प्रॉपर्टी जप्त/अटैच हुई है, वो खुद दिखा रहा है कि मनीष सिसोदिया जी का एक बैंक अकाउंट है और दो फ्लैट्स अटैच हुए हैं।

गौरतलब है कि सिसोदिया को इस साल 26 फरवरी को दिल्ली शराब नीति मामले में सीबीआई ने गिरफ्तार किया था और 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया था। ईडी ने बाद में 9 मार्च को तिहाड़ जेल में घंटों पूछताछ के बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया था। सीबीआई ने सिसौदिया पर शराब विक्रेताओं को भारी रकम के बदले अनुचित लाभ पहुंचाने का आरोप लगाया था।

## बारिश के कारण अमरनाथ यात्रा का नया जत्था नहीं हुआ रवाना

### जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग बंद

**जम्मू।** जम्मू-कश्मीर में हो रही भारी बारिश के कारण शनिवार को भगवती नगर यात्री निवास आधार शिविर से अमरनाथ यात्रा के नए जत्थे को अनुमति नहीं दी गई। अधिकारी ने यह जानकारी दी हैं। उन्होंने बताया कि इस बीच, बारिश के कारण हुए भूस्खलन होने से रामबन जिले में जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग बंद हो गया हैं।

अधिकारी ने बताया, भारी बारिश और कश्मीर घाटी में मौसम की खराब स्थिति के कारण शनिवार सुबह जम्मू के भगवती नगर आधार शिविर से पवित्र गुफा के लिए कोई जत्था रवाना नहीं हुआ।

उन्होंने कहा कि खराब मौसम के कारण श्रीनगर से बालटाल और पहलगाम मार्गों के लिए यात्रा पहले ही शुक्रवार को निलंबित कर दी गई थी और बालटाल तथा पहलगाम आधार शिविरों में तीर्थयात्रियों की भीड़ को रोकने के लिए आज सुबह जम्मू से कोई भी जत्था रवाना नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि आज सुबह भारी बारिश के कारण रामबन में भूस्खलन भी हुआ, जिससे राष्ट्रीय राजमार्ग को बंद करना पड़ा है। रामबन की वरिष्ठ पुलिस

अधीक्षक मोहिता शर्मा ने ट्वीट किया, एनएच 44 पर विभिन्न हिस्सों में भारी बारिश के साथ-साथ भूस्खलन, और पत्थर गिरने की घटना हुई है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय राजमार्ग को अगली मिलने तक बंद कर दिया गया है। यात्री टीयूसी से मंजूरी मिलने पर यात्रा की योजना बनाये।

## आदिपुरुष विवाद पर मनोज मुंतशिर ने मांगी माफी, अब हनुमान जी को भी कहा भगवान

**मुंबई।** निर्देशक ओम राउत की फिल्म आदिपुरुष, 16 जून को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। फिल्म की रिलीज से पहले जहां दर्शकों में इसको लेकर काफी उत्साह था तो वहीं रिलीज के बाद फिल्म को काफी ट्रोल किया गया। फिल्म के डायलॉग्स को भद्दा कहा गया, और किरदारों के लुक्स की वजह से सनातन धर्म का मजाक उड़ाने तक के आरोप मेकर्स पर लगाए गए। मेकर्स के साथ ही फिल्म के लेखक मनोज मुंतशिर ने आदिपुरुष को काफी सपोर्ट किया लेकिन अब उन्होंने आखिरकार माफी मांग ली है।

**क्या है मनोज मुंतशिर का ट्वीट**

मनोज मुंतशिर ने ट्विटर पर आदिपुरुष विवाद पर रिएक्ट करते हुए माफी मांगी है। मनोज मुंतशिर ने अपने ट्वीट में लिखा, मैं स्वीकार करता हूं कि फिल्म आदिपुरुष से जन भावनायें आहत हुई हैं। अपने सभी भाइयों-बहनों, बड़ों, पूज्य साधु-संतों और श्री राम के भक्तों से, मैं हाथ जोड़ कर, बिना शर्त क्षमा मांगता हूं। भगवान बजरंग बली हम सब पर कृपा करें, हमें एक और अटूट रहकर अपने पवित्र सनातन और महान देश की सेवा करने की शक्ति दें।

**कैसा है सोशल मीडिया रिएक्शन**

लेखक मनोज मुंतशिर को सोशल मीडिया यूजर्स काफी ट्रोल कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, %पहले तो बड़ा सपोर्ट कर रहा था, अब क्या हुआ, गिरगिट जैसे रंग बदल रहा। एक दूसरे ने लिखा, दोस्तों इसकी बातों में मत आना, काम मिलना बंद हो गया तो तेवर बदल रहे हैं। एक ने आदिपुरुष के डायलॉग के अंदाज में लिखा, ये तेरी बुआ का बगीचा है, जो पहले हमारे धर्म और भगवानों का मजाक उड़ाया और अब माफी मांगने आया है। मनोज मुंतशिर के लिए कुछ ट्विटर यूदर्स ने भद्दे शब्दों का भी इस्तेमाल किया है। वहीं कुछ यूजर्स ने उनकी इस माफी को सराहा है।

**हनुमान भगवान नहीं, भक्त हैं...**

याद दिला दें कि फिल्म रिलीज के बाद मनोज ने हर तरह से खुद को सही साबित करने की कोशिश की थी, जिससे विवाद और बढ़ गया था। मनोज ने ये तक कह दिया था कि हनुमान भगवान नहीं, भक्त हैं । वहीं एक दूसरे बयान में उन्होंने कहा था, कुछ लोग हैं जो फ़िल्म को आज से नहीं डे-वन से टारगेट कर रहे हैं। हमने कभी फिल्म को शुद्धता के पैमाने पर सेल नहीं किया। हमने आज तक ये नहीं बोला कि हम ऐसी फ़िल्म बना रहे हैं जो प्रामाणिक तौर पर उसी भाषा का प्रयोग कर रही है जो भाषा वाल्मिकी ने लिखी थी।

## बंगाल पंचायत चुनाव में हिंसा-आगजनी, बैलेट पेपर जलाए, 24 घंटों में 4 की हत्या

**कोलकाता।** पश्चिम बंगाल के 22 जिलों की 73,887 ग्राम पंचायत सीटों में से 64,874 पर शनिवार सुबह 7 बजे मतदान जारी है। सेंट्रल फोर्सेस की तैनाती के बाद भी अलग-अलग इलाकों से आगजनी-हिंसा और बैलेट पेपर जलाने की खबरें आ रही हैं। पिछले 24 घंटों में चुनावी हिंसा में चार लोगों की मौत हो गई है। सबसे ज्यादा झड़प और हिंसा की खबरें मुर्शिदाबाद जिले से हैं। यहां के बेलडांगा और तूफानगंज में शनिवार सुबह एक-एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई। ऐसी ही घटना शुक्रवार रात रेजीनगर में हुई। यहां बम विस्फोट में एक व्यक्ति मारा गया। TMC ने दावा किया है कि ये तीनों कार्यकर्ता उनकी पार्टी के थे। उधर, खारग्राम गांव में कांग्रेस कार्यकर्ता की चाकू मारकर हत्या करने की बात सामने आई है। सुबह वोटिंग शुरू होते ही कूच बिहार के सितांई में बारावीटा प्राइमरी स्कूल में बने पोलिंग बूथ में तोड़फोड़ की गई और बैलट पेपर्स में आग लगा दी गई। वहीं, राज्य में पंचायत चुनाव के लिए नामांकन शुरू होने के बाद, यानी 9 जून के बाद अब तक हिंसक घटनाओं में 18 लोगों की मौत चुकी है।

**मतदान शुरू होने से पहले ही लंबी लाइनें**

**लगीं**-बंगाल पंचायत चुनाव में लोगों की वोटिंग को लेकर जबर्दस्त उत्साह देखने को मिला। यहां से जो फोटो और वीडियो सामने आए हैं, उनमें मतदान शुरू होने के पहले ही लोगों की लंबी लाइन लग चुकी थीं। साउथ 24 परगना के बसंती इलाके में तो लोग बारिश में छाता लेकर खड़े थे। वोटर्स में महिलाओं की संख्या ज्यादा नजर आई।

## धर्मांतरण कराने वाले अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का खुलासा, पाकिस्तानी कनेक्शन खंगाल रही पुलिस

**गाजियाबाद।** गाजियाबाद में धर्म परिवर्तन कराने वाले अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का खुलासा हुआ है। यह नेटवर्क लोगों का धर्मांतरण कराकर उन्हें जिहादी बनाता था। शुरुआती जांच में युवती समेत चार लोगों के धर्म परिवर्तन का मामला सामने आया है। पुलिस ने इस मामले में तीन लोगों को हिरासत में लिया है। कुछ दिनों पहले भी गेमिंग ऐप से धर्मांतरण का मामला सामने आया था। ताजा मामले में हिरासत में लिए गए एक युवक की वॉट्सऐप चैट से पता चला है कि यह नेटवर्क पाकिस्तान, नेपाल समेत कई देशों में फैला है। इस मामले का खुलासा नोएडा में नौकरी करने वाली एक युवती के धर्मांतरण की जांच के दौरान हुआ। खोड़ा निवासी एक व्यक्ति ने दो दिन पहले पुलिस से शिकायत की थी, जिसमें

**● गाजियाबाद में लोगों का धर्म परिवर्तन कराकर उन्हें जिहादी बनाने वाले अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का खुलासा हुआ है।। शुरुआती जांच में युवती समेत चार लोगों के धर्म परिवर्तन का मामला सामने आया है।**

उसने बताया कि उसकी बेटी दो वर्ष से नोएडा सेक्टर-60 की एक कंपनी में नौकरी कर रही है। वहां राहुल अग्रवाल एक्जीक्यूटिव के पद पर कार्यरत है। करीब पांच-छह महीनों से उनकी बेटी अजीब हरकतें कर रही थी। नजर रखने पर पता चला कि वह दूसरे धर्म के रीति-रिवाज अपना रही थी। पिता के विरोध करने पर बेटी ने धर्मांतरण कर लेने की बात कहते हुए उन पर भी धर्म बदलने का दबाव डाला। बेटी का मोबाइल फोन खंगालने पर पता चला कि राहुल उसे दूसरे समुदाय के रीति-रिवाज सिखा रहा था। पुलिस के मुताबिक, ट्रांस हिंडन में रहने वाले राहुल अग्रवाल ने 2016 में धर्म परिवर्तन कर अपना नाम राहिल रख लिया था। उसके मोबाइल फोन से उकसावे वाली चैट मिलीं। वह पाकिस्तानी कट्टपंथियों की तकरीरें भी सुनता था।

**भरोसा हासिल कर जिहाद के लिए उकसाते थे**-गिरोह जरूरतमंद लोगों को चिह्नित कर छह महीने तक ब्रेनवॉश करता था। शुरुआत में मदद के जरिए भरोसा हासिल कर धर्मांतरण के लिए प्रेरित किया जाता था। धर्मांतरण के बाद उन्हें जिहाद के लिए तैयार किया जाता था। नेटवर्क धर्मांतरण करने वाले लोगों को अधिक से अधिक लोगों को अपने धर्म में शामिल करने के लिए भी प्रेरित करता था।

**पाकिस्तान कनेक्शन खंगाल रही पुलिस**-अभी तक चार लोगों के धर्मांतरण की बात सामने आई है। इनमें युवती का धर्म परिवर्तन कराने वाला राहुल भी शामिल हैं। राहुल से पूछताछ कर धर्मांतरण का पाकिस्तानी कनेक्शन खंगाला जा रहा है, वह किन लोगों के संपर्क में था, इसका पता लगाया जा रहा।

# उत्तर भारत के लिए मौसम विभाग की बड़ी चेतावनी, अगले 4-5 दिन भारी बारिश; एहतियात बरतने के निर्देश

**नई दिल्ली।** देश की राजधानी में शनिवार के दिन की शुरुआत बारिश के साथ बेहद सुहावनी हो गई। इसके साथ ही यह तय हो गया है कि दक्षिण-पश्चिमी मॉनसून अभी राष्ट्रीय राजधानी में सक्रिय था। वहीं, शुक्रवार को मौसम विभाग ने उत्तरी भारत में अगले चार से पांच दिन तक भारी बारिश की चेतावनी जारी की है। आईएमडी द्वारा जारी चेतावनी के मुताबिक अगले चार-पांच दिनों तक उत्तरी भारत में जबर्दस्त बरसात हो सकती है। इसके अलावा अन्य राज्यों में भी सक्रिय मॉनसून का असर देखने को मिलेगा।

**उत्तर से दक्षिण तक बरसात**

इसके साथ ही मौसम विभाग ने उत्तर भारत के लोगों को भारी बारिश को लेकर एहतियात बरतने का निर्देश भी जारी किया है। इसमें कहा गया है कि जम्मू, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आठ से नौ जुलाई तक जोरदार बरसात की चेतावनी है। इसके लिए तैयार रहें और बचाव के लिए जरूरी उपाय करके रखें। उधर कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले में शुक्रवार तड़के भूस्खलन में एक महिला की मौत हो गई जबकि उडुपी जिले में एक पेड़ गिरने से एक बाइक सवार व्यक्ति की जान चली गई। इसके बाद इन दोनों तटीय जिलों में

बारिश के कारण हुए हादसों में इस हफ्ते जान गंवाने वालों की संख्या आठ हो गई है। पुलिस ने बताया कि शुक्रवार तड़के दक्षिण कन्नड़ जिले के बंटवाल तालुक स्थित सजिपमुन्नूर गांव के नंदवारा में भारी बारिश के कारण पहाड़ी का एक हिस्सा एक घर पर गिर गया, जिससे एक महिला की मौत हो गई। उसने बताया कि महिला की पहचान मोहम्मद नामक व्यक्ति की पत्नी जरीना (47) के रूप में हुई। इससे पहले उनकी बेटी सफा (20) को अग्निशमन एवं बचाव विभाग के कर्मियों और पुलिस ने मलबे से निकाल लिया था।

**कर्नाटक में यहां असर**

उडुपी जिले में अन्य घटना में, एक बड़ा पेड़ एक बाइक सवार पर गिर पड़ा जिससे उसकी मौत हो गई। वह गुरुवार रात करकला-पडुबिद्री राज्य राजमार्ग पर बेलमन शहर से गुजर रहा था तभी उसकी बाइक पर पेड़ गिर पड़ा। सूत्रों ने बताया कि एक अन्य घटना में, उडुपी के पास कल्लियाणपुरा-संथेकट्टे जंक्शन पर राष्ट्रीय राजमार्ग 66 पर निर्माणाधीन अंडरपास का एक हिस्सा बुधवार रात लगातार बारिश के कारण ढह गया। वहीं, वन विभाग ने शुक्रवार से दक्षिण कन्नड़ जिले के बेलथांगडी तालुक में गदाई कल्लू में ट्रैकिंग पर प्रतिबंध लगा दिया है क्योंकि पहाड़ी तक जाने वाला रास्ता फिसलन भरा हो गया है।

## टी-90 और टी-72 टैंकों के साथ सेना ने पूर्वी लद्दाख में किया विशेष अभ्यास

नई दिल्ली । चीन और पाकिस्तान अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आते हैं। इस कारण भारतीय सेना सीमा पर हमेशा सतर्क और मुस्तैद रहती है। साथ ही समय-समय पर अभ्यास भी करती है। फिर भारतीय सेना ने दुनिया की सबसे ऊंची नदी घाटियों में से एक सिंधु नदी को पार करने और दुश्मन के ठिकानों पर हमले करने के लिए पूर्वी लद्दाख में अभ्यास किया। यह अभ्यास बड़ी संख्या में टैंक और बख्तरबंद वाहन के साथ किया गया। रिपोर्ट्स के मुताबिक शनिवार को टी-90 और टी-72 टैंकों और बीएमपी पैदल सेना के लड़ाकू वाहनों सहित भारतीय सेना द्वारा शक्तिशाली टैंकों को सिंधु नदी को पार करने के लिए विशेष अभ्यास किया गया। बता दें कि सिंधु नदी पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले पूरे लद्दाख सेक्टर के माध्यम से चीनी सेना द्वारा नियंत्रित तिब्बती क्षेत्र से बहती है। सेना के अधिकारियों ने कहा कि इस तरह के अभ्यास आकस्मिक परिस्थितियों की तैयारी के लिए किए जाते हैं। जहां उन्हें इस क्षेत्र में घाटियों के मार्गों का उपयोग करके भारतीय क्षेत्रों पर कब्जा करने की कोशिश करने पर विरोधियों के खिलाफ कार्रवाई करनी होती है। भारतीय सेना दुनिया की उन चुनिंदा सेनाओं में से एक है जो 16,000 फीट तक की ऊंचाई पर और बड़ी संख्या में टैंकों का संचालन करती है। जब चीनी सेना ने अपने प्रशिक्षण अभ्यास सैनिकों को हटाकर पूर्वी लद्दाख सेक्टर में आक्रामकता दिखाना शुरू कर दिया, तब भारतीय सेना ने पूर्वी लद्दाख सेक्टर में बड़ी संख्या में टैंक और बख्तरबंद लड़ाकू वाहन लाए। मालूम हो कि लद्दाख में बड़ी खुली घाटियां हैं जो टैंक युद्ध के लिए बहुत अनुकूल हैं। पहले, भारतीय सेना पाकिस्तान के मोर्चे पर पंजाब सेक्टर में बड़े पैमाने पर इस तरह के अभ्यास करती थी।

## मानसून में हिमालयी क्षेत्रों में पर्यटकों के जाने पर रोक

देहरादून। आपातकालीन परिचालन केंद्र की ओर से हरिद्वार, नैनीताल और पिथौरागढ़ जिलों के डीएम निर्देश जारी कर बारिश के कारण नदियों का जलस्तर बढ़ने पर विशेष सावधानी बरतने को कहा गया है। आदेश में कहा गया हैं कि उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पर्यटकों को जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसके अलावा इस अवधि में लोगों के किसी भी विपदा में फंसे होने की स्थिति में उन्हें खाद्य सामग्री और स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी। आपदा प्रबंधन सचिव डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा के निर्देश पर राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र की ओर से डीएम को निर्देश जारी किए गए हैं। केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट में बाणगंगा (रायसी) हरिद्वार, धौलीगंगा (कनज्योति) पिथौरागढ़ और कोसी (बेतालघाट) नैनीताल नदियों में जलस्तर में हो रही वृद्धि को देखते हुए सुरक्षा के विशेष उपाय अपनाने को कहा गया है। इसमें आवागमन में नियंत्रण रखने, किसी भी आपदा, दुर्घटना की स्थिति में त्वरित स्थलीय कार्रवाई करते हुए सूचनाओं का आदान-प्रदान करने, आपदा प्रबंधन आईआरएस प्रणाली के नामित समस्त अधिकारियों एवं विभागीय नोडल अफसरों को हाई अलर्ट में रहने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अलावा राजस्व उपनिरीक्षकों, ग्राम विकास अधिकारियों, ग्राम पंचायत अधिकारियों को अपने क्षेत्रों में बने रहने के लिए कहा गया है। सभी थाना-चौकियों को भी आपदा संबंधी उपकरणों एवं वायरलेस सहित हाई अलर्ट में रहने को कहा गया है। इस अवधि में किसी भी अधिकारी और कर्मचारी को मोबाइल फोन स्विच ऑफ नहीं करने, छाता, टार्च हेलमेट और कुछ आवश्यक उपकरण एवं सामग्री अपने वाहनों में रखने के लिए कहा गया है।

## मोतिहारी में जहरीली शराब से दो लोगों की मौत

मोतिहारी । बिहार के मोतिहारी जिले में फिर से जहरीली शराब के तांडव का शक है। यहां अस्पताल में इलाज के दौरान एक मरीज मौत हो गई। मृतक के घरवालों ने दावा किया है कि उसकी मौत शराब पीने के बाद हुई, घरवालों के मुताबिक मृतक ने जहरीली शराब पी थी। इसके पहले एक पूर्व सैनिक की शराब पीने से मौत हो गई थी। जिस शख्स की मौत हुई है उसका नाम उमेश पटेल है। उमेश पटेल धवही इलाके का रहनेवाला था। तबीयत बिगड़ने के बाद उसके घरवाले उमेश को सदर अस्पताल लाया गया था। लेकिन शनिवार को इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। अब पुलिस को भी पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार है जिससे पता चल सके कि क्या वाकई उमेषश की मौत जहरीली शराब से हुई। इसके पहले अप्रैल में भी पूर्वी चंपारण में जहरीली शराब का कहर बरपा था। उस वक्त अरेराज और सदर इकाइयों के दो एसएचओ सहित तुरकौलिया, सुगौली, पहाड़पुर, हरसिद्धि के साथ एक और जगह के थानेदार को भी सस्पेंड कर दिया गया था। वो जहरीली शराब कांड 14-15 अप्रैल 2023 को हुआ था। उस कांड में 37 लोगों की जान चली गई थी।

## गुजरात एटीएस ने कच्छ में बीएसएफ यूनिट के चपराशी को पकड़ा, पाक को भेजता था खुफिया जानकारी

अहमदाबाद। गुजरात एटीएस ने कच्छ में बड़ी कार्यवाही करते हुए नीलेश वडिया नामक एक शख्स को पकड़ लिया। गिरफ्तार नीलेश कच्छ में बीएसएफ यूनिट में चपराशी है और भारत की खुफिया जानकारी पाकिस्तानी हेन्डलर को भेजता था। पाकिस्तान भारत की खुफिया और संवेदनशील जानकारी हासिल कर कुछ करे उससे पहले ही गुजरात एटीएस ने एक बड़े षडयंत्र का पर्दाफाश कर दिया। पाकिस्तान ने कच्छ में बीएसएफ यूनिट में बतौर चपराशी काम करने वाले नीलेश को अपना मुहरा बनाया था। अपने हेन्डलर के जरिए पाकिस्तान गुजरात के बीएसएफ की यूनिट में काम करनेवाले नीलेश से खुफिया जानकारी मंगवाता था। लेकिन इसकी भनक गुजरात एटीएस को लग गई और उसने नीलेश को गिरफ्तार कर लिया। जानकारी के मुताबिक नीलेश ने भारत की खुफिया जानकारी पाकिस्तान को पहुंचाने के बदले में रु. 25 हजार से भी अधिक की रकम ली थी। नीलेश ने एक युवती का फेक आईडी भी बनाया था। नीलेश की गतिविधियां संदिग्ध लगने पर एटीएस पिछले काफी समय से उसकी एक्टिविटी पर नजर गड़ाए हुई थी। नीलेश का मोबाइल के मोबाइल की एफएसएल जांच में हकीकत सामने आई है। फिलहाल नीलेश के खिलाफ ऑफिशियल सिक्रेट एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। फिलहाल गुजरात एटीएस पूरे मामले की जांच कर रही है।

## 21 खालिस्तानियों के नाम मोस्टवांटेड की लिस्ट में दर्ज, एनआईए करेगा कार्रवाई

नई दिल्ली । राष्ट्रीय जांच एजेंसी एनआईए ने विदेश में बैठे खालिस्तानी आतंकियों की लिस्ट जारी की है। इस लिस्ट में कनाडा, अमेरिका और पाकिस्तान में मौजूद आतंकियों के नाम शामिल है। मिली जानकारी के अनुसार एनआईए ने करीब 21 खालिस्तानियों के नाम मोस्टवांटेड की लिस्ट में दर्ज किए हैं। जांच एजेंसी की वेबसाइट पर इन खालिस्तानियों के नाम फोटो के साथ डाले गए हैं। इस लिस्ट में लखबीर सिंह लंडा, मनदीप सिंह, सतनाम सिंह, अमरीक सिंह समेत कनाडा, अमेरिका और पाकिस्तान में मौजूद कई आतंकी शामिल किए गए है। एनआईए सूत्रों के मुताबिक, विदेशों में बैठे खालिस्तानियों पर चुन चुन कर कार्रवाई होगी। इसके लिए एनआईए की 5 सदस्यीय टीम जल्द ही 17 जुलाई के बाद अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को जाएगी, जहां काउंसलेट में हुए हमले की जांच करेगी। खुफिया सूत्रों के मुताबिक एनआई, इंटेलीजेंस ब्यूरो और राज्यों की पुलिस के साथ सुरक्षा एजेंसियों ने एक डॉजियर तैयार किया है। इसमें हाल ही में ब्रिटेन, अमेरिका और कनाडा के दूतावास में हुए हमले के मामले में एनआईए ने खालिस्तान समर्थक आतंकियों की पूरी लिस्ट तैयार की है।

## बालासोर ट्रेन हादसा : सीबीआई ने रेलवे के तीन गिरफ्तार अधिकारियों से शुरू की पूछताछ

भुवनेश्वर । केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की एक टीम ने शनिवार को बालासोर ट्रिपल ट्रेन त्रासदी के सिलसिले में गिरफ्तार किए गए तीन रेलवे अधिकारियों से पूछताछ शुरू की। सीबीआई ने सीनियर सेक्शन इंजीनियर (सिग्नल) अरुण कुमार मोहंता, सेक्शन इंजीनियर (सिग्नल) मोहम्मद अमीर खान और टेक्नीशियन पप्पू कुमार को गिरफ्तार किया था। सीबीआई गिरफ्तारी के बाद तीनों को भुवनेश्वर ले आई और उनके स्वास्थ्य जांच के बाद सीबीआई अदालत में पेश किया गया। गिरफ्तार सभी अधिकारियों से पूछताछ के लिए सीबीआई को पांच दिन की रिमांड मिली है। सूत्रों ने बताया कि गिरफ्तार अधिकारियों से सीबीआई की एक विशेष टीम भुवनेश्वर के बाहरी इलाके में एक पुलिस स्टेशन में पूछताछ कर रही है।

# अनुच्छेद-370 को निरस्त करने जितना आसान नहीं है यूसीसी को लागू करना : गुलाम नबी आजाद



**श्रीनगर। (एजेंसी)।** पूर्व केंद्रीय मंत्री गुलाम नबी आजाद ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को लागू करने की योजना को लेकर केंद्र सरकार को आगाह करते हुए शनिवार को कहा कि इसका सभी धर्मों पर असर पड़ेगा। यहां पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने यह भी कहा कि यूसीसी को लागू करना ''अनुच्छेद-370 को निरस्त करने जितना आसान'' नहीं होगा। डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी (डीपीएपी) के अध्यक्ष आजाद ने कहा, ''यूसीसी को लागू करने का सवाल ही नहीं है। यह अनुच्छेद-370 को निरस्त करने जितना आसान नहीं है। सभी धर्म इसमें शामिल हैं। सिर्फ मुसलमान ही नहीं, बल्कि सिख, ईसाई, आदिवासी, जैन और पारसी, इन सभी लोगों को नाराज करना किसी भी सरकार के लिए अच्छा नहीं होगा।''

उन्होंने कहा, ''इसलिए मैं सरकार को सलाह देता हूं कि वह यह कदम उठाने के बारे में सोचे भी नहीं।'' डीपीएपी अध्यक्ष ने जम्मू कश्मीर प्रशासन द्वारा भूमिहीनों को भूमि देने की नीति की घोषणा का स्वागत किया लेकिन मांग की कि केंद्र शासित प्रदेश के गरीब निवासियों को ही जमीन दी जाए न कि बाहरी लोगों को। उन्होंने कहा, ''जमीन दी जानी चाहिए लेकिन एक शर्त है। हम घोषणा का स्वागत करते हैं लेकिन जमीन केवल जम्मू कश्मीर के गरीब निवासियों को ही दी जानी चाहिए। यह महत्वपूर्ण है।''

जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री ने केंद्र शासित प्रदेश में जल्द विधानसभा चुनाव कराने की भी पैरवी की। आजाद ने कहा, ''हम 2018 में विधानसभा भंग होने के बाद से इंतजार कर रहे हैं। तब से हम चुनाव कराए जाने का इंतजार कर रहे हैं। जम्मू कश्मीर के लोग राज्य में लोकतांत्रिक ढांचा बहाल करने का इंतजार कर रहे हैं।'' उन्होंने कहा, ''किसी लोकतंत्र में केवल निर्वाचित प्रतिनिधि ही लोगों के लिए काम कर सकते हैं। यहां या देश में कहीं भी अधिकारी छह महीने से ज्यादा वक्त तक प्रशासन नहीं चला सकते। निर्वाचित प्रतिनिधि होना महत्वपूर्ण है। हम लगातार यह मांग करते रहे हैं कि जल्द से जल्द चुनाव कराए जाए।''

महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में घटनाक्रम पर आजाद ने कहा, ''मैं शरद पवार का काफी सम्मान करता हूं, मैं चाहता हूं कि उनकी पार्टी मजबूत रहे। लेकिन आंतरिक स्थिति के कारण जो भी हुआ है, हम उससे खुश नहीं हैं। हालांकि यह उनका आंतरिक मामला है।'' इससे पहले, आम आदमी पार्टी (आप) के नेता नजीर अहमद याटू और उनके समर्थक डीपीएपी में शामिल हो गए तथा आजाद ने उनका पार्टी में स्वागत किया। याटू पहले पीडीपी से भी जुड़े रहे हैं।

## फिर सुप्रीम कोर्ट की चौखट पर पर पहुंचा उद्धव ठाकरे गुट

नई दिल्ली । महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाले समूह को 'शिवसेना' पार्टी का नाम और चुनाव चिह्न देने के चुनाव आयोग के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई की मांग कर शिवसेना के उद्धव ठाकरे गुट ने शनिवार को सुप्रीम कोर्ट के सामने एक 'लेटर ऑफ अर्जेंसी' पेश किया। अपनी ताजा याचिका में उद्धव गुट ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री शिंदे के नेतृत्व वाला समूह शिवसेना के प्रतीक का 'अवैध रूप से' उपयोग कर रहा है। यह कदम महाराष्ट्र विधान परिषद की उपाध्यक्ष और शिव सेना (यूबीटी) नेता नीलम गोरे के मुख्यमंत्री शिंदे के नेतृत्व वाली शिव सेना में शामिल होने के एक दिन बाद आया है। शिंदे ने पार्टी के अधिकांश विधायकों को तोड़कर अपने साथ कर लिया और महाराष्ट्र में भाजपा के समर्थन से सरकार बना ली।



इससे उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री पद से हटना पड़ा। उसके बाद से ही शिवसेना के दोनों गुटों में तनातनी चल रही है। इससे पहले महाराष्ट्र के पूर्व सीएम ठाकरे ने चुनाव आयोग के फैसले को 'चोरी' और 'लोकतंत्र की हत्या' कहा था और आदेश पर रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। वहीं शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के सांसद संजय राउत ने दावा किया था कि एनसीपी नेता अजित पवार के राज्य सरकार में शामिल होने के बाद से शिंदे के नेतृत्व वाली प्रतिद्वंद्वी शिवसेना के 17-18 विधायक उनकी पार्टी के संपर्क में हैं। वहीं शिंदे की शिवसेना सरकार में मंत्री उदय सामंत ने राउत के दावे का खंडन करते हुए कहा कि उद्धव ठाकरे गुट के 13 में से छह विधायक उनके संपर्क में हैं।

# पीएम मोदी ने कहा, केसीआर मतलब सबसे भष्ट्र सरकार

### -कांग्रेस और बीआरएस दोनों की वंशवादी पार्टी

**हैदराबाद (एजेंसी)।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को अपने तेलंगाना दौरे के दौरान भाजपा की एक विशाल जमसभा को संबोधित किया। इस मौके पर पीएम मोदी ने के चंद्रशेखर राव की सरकार पर जबरदस्त तरीके से निशाना साधा। उन्होंने कहा कि तेलंगाना में वर्तमान सरकार ने 4 काम किए हैं, पीएम मोदी और बीजेपी सरकार को गाली देना, उन्होंने एक परिवार को सत्ता का केंद्र बनाया, उन्होंने तेलंगाना के आर्थिक विकास को उथल-पुथल में धकेल दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि केसीआर ने तेलंगाना को भ्रष्टाचार में डुबा दिया, तेलंगाना में ऐसी कोई परियोजना नहीं है जो न हो भ्रष्टाचार के आरोप नहीं हैं। पीएम मोदी ने साफ तौर पर कहा कि केसीआर सरकार सबसे भ्रष्ट सरकार है।

पीएम मोदी ने कहा कि वारंगल की धरती जनसंघ के समय से ही हमारी विचारधारा का मजबूत किला रही है। आज भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के रूप में खड़ी है और इस साकार करने में तेलंगाना के लोगों ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि केसीआर सरकार यानि सबसे भ्रष्ट सरकार। बल्कि अब केसीआर सरकार के दिल्ली तक भ्रष्टाचार के तार फैल गए हैं। उन्होंने कहा कि हम पहले दो राज्यों या दो देशों की सरकारों के बीच विकास से जुड़े समझौतों की खबरें सुनते थे। लेकिन ये पहली बार हुआ है, जब दो राजनीतिक दलों और दो राज्य सरकारों के बीच भ्रष्टाचार की डील के आरोप लगे हैं। उन्होंने कहा कि इन सभी वंशवादी पार्टियों की नींव भ्रष्टाचार में है, वंशवादी कांग्रेस पार्टी के भ्रष्टाचार को पूरे देश ने देखा है, और पूरे तेलंगाना में बीआरएस द्वारा राज्य में भ्रष्टाचार का स्तर देखा गया है... बीआरएस और कांग्रेस दोनों ही तेलंगाना के लोग के लिए खतरनाक हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि तेलंगाना में भ्रष्टाचार का जो खुला खेल चल रहा है, इसका सबसे बड़ा नुकसान, यहां के युवाओं को उठाना पड़ा है। तेलंगाना स्टेट पब्लिक सर्विस कमीशन स्कैम के बारे में कौन नहीं जानता? केसीआर सरकार ने सरकारी नौकरियों को अपने नेताओं की तिजोरी भरने का माध्यम बना लिया है। कांग्रेस पर निशाना साधकर पीएम मोदी ने कहा कि आजकल कुछ लोग चुनाव से पहले, जनता को गुमराह करने के लिए झूठी गारंटी लेकर आ रहे हैं। लेकिन भाजपा चुनाव जीतने के लिए झूठी बातें या झूठे गारंटी कार्ड नहीं बांटती।

## महंगाई को नियंत्रित करें, यूसीसी जैसे गैर जरूरी मुद्दों पर ऊर्जा बर्बाद ना करें: मायावती

**नयी दिल्ली। (एजेंसी)।** बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने शनिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधते हुए कहा कि पार्टी और उसकी सरकार को समान नागरिक संहिता (यूसीसी) जैसे ''गैर-जरूरी'' मुद्दों पर अपनी ऊर्जा और संसाधन खर्च करने के बजाय महंगाई को नियंत्रित करने तथा गरीबी दूर करने के लिए काम करना चाहिए। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री ने 21वें विधि आयोग के विचारों से भी सहमति जताई, जिसने 2018 में कहा था कि यूसीसी ''इस स्तर पर न तो आवश्यक है और न ही वांछनीय है।'' यहां अपनी पार्टी की पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ इकाइयों की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए बसपा प्रमुख ने आरोप लगाया कि भाजपा और उसकी सरकारें अपनी कमियों से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए सांप्रदायिक, जातिवादी और विभाजनकारी नीतियां लागू कर रही हैं।

बसपा के एक बयान में मायावती के हवाले से कहा गया, ''सभी लोगों पर यूसीसी थोपना भी उनका नया कदम है, जो वर्तमान स्थिति को देखते हुए न तो आवश्यक है और न ही उपयोगी है।'' समान नागरिक संहिता का उद्देश्य धर्मों, रीति-रिवाजों और परंपराओं पर आधारित पर्सनल लॉ के स्थान पर धर्म, जाति, पंथ, यौन अभिरूचि और लिंग से परे सभी के लिए एक समान कानून लाना है। पर्सनल लॉ और विरासत, गोद लेने और उत्तराधिकार से संबंधित कानूनों के इसके दायरे में आने की संभावना है।

बाइसवें विधि आयोग ने 14 जून को राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दे पर सार्वजनिक और मान्यता प्राप्त धार्मिक संगठनों सहित हितधारकों से विचार मांगकर यूसीसी पर एक नयी परामर्श प्रक्रिया शुरू की थी। पिछले हफ्ते भोपाल में पार्टी कार्यकर्ताओं की एक बैठक को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यूसीसी की जोरदार पैरवी करते हुए कहा कि संविधान सभी नागरिकों के लिए समान अधिकारों की बात करता है। कई विपक्षी दलों ने अगले आम चुनाव से पहले यूसीसी मुद्दे को उठाने की भाजपा की मंशा पर संदेह जताया है।

## गुस्साए ऊंट ने मालिक का सिर चबा डाला, तड़प-तड़प कर मौके पर मौत

**चूरू (एजेंसी)।** राजस्थान के चूरू जिले में एक ऊंट का खौफनाक पागलपन सामने आया है। यहां गुस्साए ऊंट ने अपने ही मालिक की जान ले ली। गुस्साया ऊंट का अपने मालिक का सिर चबा गया। इससे ऊंट मालिक ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। मालिक को मौत के घाट उतारने के बाद ऊंट वहीं बैठा रहा। इसके बाद में ग्रामीणों ने जैसे-तैसे करके शव को ऊंट के पास से हटाया।

दिल दहला देने वाली घटना चूरू जिले के अजीतसर गांव में हुई। वहां एक ऊंट ने अपने मालिक की जान ले ली। ऊंट के हाथों मौत का शिकार हुए शख्स 48 साल का रामलाल था। ग्रामीणों के अनुसार ऊंट ने खेत में अचानक अपने मालिक पर हमला बोल दिया। उसके बाद उसके सिर को अपने मुंह में लेकर चबा गया। इससे रामलाल तड़प उठा लेकिन वह कुछ नहीं कर पाया।

ऊंट ने रामलाल के सिर को इस कदर चबा डाला कि उसने मौके पर ही तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया। रामलाल के परिजनों और ग्रामीणों को पता चला तब वे खेत में पहुंचे। वहां के हालात देखकर वे कांप उठे। लेकिन किसी ने ऊंट के पास जाने की हिम्मत नहीं की। बाद में सावधानीपूर्वक लोगों ने रामलाल को वहां से हटाया। इस दौरान लोगों ने उसका वीडियो भी बना लिया। ऊंट बार-बार अपने मालिक के शव पर मुंह को घुमा रहा था। परिजन और ग्रामीण रामलाल को लेकर स्थानीय अस्पताल पहुंचे। जहां डॉक्टर्स ने रामलाल को मृत घोषित कर दिया।

# इस्तीफा देने के सवाल पर शिंदे ने दी सफाई, फडणवीस से देर रात मिले सीएम

### -उथल-पुथल की अफवाह पर आदित्य ...न

एनसीपी नेता प्रफुल्ल पटेल ने कहा कि अजित पवार को सर्वसम्मति से पार्टी अध्यक्ष चुना गया और उन्होंने शरद पवार द्वारा नई दिल्ली में आयोजित पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक को अनौपचारिक करार दिया। दूसरी तरफ शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे ने दावा किया कि सीएम एकनाथ शिंदे को इस्तीफा देने के लिए कहा गया है। हालांकि, शिंदे ने जोर देकर कहा कि महाराष्ट्र में शिवसेना-भाजपा सरकार में अजित पवार की एंट्री से उन्हें कोई खतरा नहीं है। महाराष्ट्र में बड़े घटनाक्रम की बात करें तो उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शुक्रवार देर रात सीएम एकनाथ शिंदे के साथ उनके आवास पर बैठक की। यहां शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना-बीजेपी-एनसीपी (अजित पवार गुट) सरकार में उथल-पुथल की अफवाह पर आदित्य ठाकरे ने कहा कि मैंने सुना है कि सीएम एकनाथ शिंदे को इस्तीफा देने के लिए कहा गया है। हो सकता है कि सरकार में कुछ बदलाव देखने को मिले। हालांकि एनसीपी अजित पवार के नेतृत्व वाले गुट के नेता प्रफुल्ल पटेल ने शुक्रवार को पार्टी में विभाजन की खबरों का खंडन किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि अजित पवार को सर्वसम्मति से पार्टी अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। पटेल ने कहा कि एनसीपी ने 30 जून को देवगिरी में कई विधायकों और एमएलसी की मौजूदगी में एक बैठक की। उस बैठक में अजित पवार को नेता चुना गया। इसके बाद उन्होंने प्रफुल्ल पटेल को राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया। ये कोई बंटवारा नहीं है। विधायिका और संगठन बहुमत के साथ अजित पवार का समर्थन करते है। प्रफुल्ल पटेल ने यह भी कहा कि गुरुवार को दिल्ली में शरद पवार द्वारा आयोजित पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक आधिकारिक नहीं थी। वहीं महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) प्रमुख राज ठाकरे ने मुंबई में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे से उनके आवास वर्षा पर मुलाकात की। शिंदे ने बैठक के बारे में ट्वीट किया और कहा कि दोनों नेताओं ने नासिक जिले में कृषि ऋण, मुंबई में बीडीडी चॉल के पुनर्विकास में स्थानीय निवासियों के मुद्दों और राज्य एजेंसी सिडको द्वारा घर की कीमतों में कमी पर चर्चा की।

# राजनीतिक दलों ने बंगाल में पंचायत चुनाव में हिंसा की निंदा की, भाजपा ने की राष्ट्रपति शासन की मांग

**कोलकाता। (एजेंसी)।** पश्चिम बंगाल में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए शनिवार को मतदान जारी है और विभिन्न जिलों में चुनाव संबंधी हिंसा में 11 लोग मारे गए हैं। सभी पार्टियों ने एक सुर में चुनाव संबंधी हिंसा में लोगों की मौत की निंदा की है। विपक्षी दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाये जाने की मांग की है। चुनाव संबंधी हिंसा में अपने छह समर्थकों को खोने वाली सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने विपक्षी दलों पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाया और मतदाताओं की सुरक्षा करने में विफलता के लिए केंद्रीय बलों की आलोचना की।

दूसरी ओर, कांग्रेस की पश्चिम बंगाल इकाई के अध्यक्ष अधीर चौधरी ने आरोप लगाया कि टीएमसी के 'गुंडे' खुलेआम घूम रहे हैं और लोगों का जनादेश लूट लिया गया है। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) की पश्चिम बंगाल इकाई के सचिव मोहम्मद सलीम ने दावा किया कि केंद्रीय बलों की उचित ढंग से तैनाती नहीं की गई है। मध्यरात्रि के बाद से मारे गए लोगों में टीएमसी के छह सदस्य, और भाजपा, माकपा, कांग्रेस और आईएसएफ के एक-एक कार्यकर्ता और एक अन्य व्यक्ति शामिल थे, जिसकी पहचान नहीं हो सकी है। राज्य की मंत्री शशि पांजा ने पूछा, ''बीती रात से चौंकाने वाली घटनाओं की सूचना मिल रही है।

भाजपा, माकपा और कांग्रेस ने साठगांठ की थी और केंद्रीय बलों की तैनाती की मांग की थी। आखिर वे कहां तैनात हैं? तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की हत्या की जा रही है। केंद्रीय बल कहां हैं?'' टीएमसी ने एक बयान में कहा कि आठ जून को पंचायत चुनाव की घोषणा होने के बाद से 27 लोग मारे गए हैं और उनमें से 17 लोग तृणमूल से हैं, जो कुल मौतों का 60 प्रतिशत से अधिक है। इसमें कहा गया है, ''यदि तृणमूल कांग्रेस वास्तव में हिंसा भड़काती है, जैसा कि मीडिया आरोप लगा रही है, तो उनके कार्यकर्ताओं को निशाना क्यों बनाया जाता और उनकी हत्या क्यों की जाती है? विपक्ष ने हार मान ली है और अब वह मीडिया में अपने सहयोगियों का इस्तेमाल करके यह कहानी गढ़ने का प्रयास कर रहा है कि हिंसा ने चुनाव को किस तरह प्रभावित किया।'' बयान में कहा गया है कि पूरे पश्चिम बंगाल में 60 हजार से अधिक बूथ हैं लेकिन केवल 60 बूथ पर ही मतदान प्रक्रिया के दौरान व्यवधान पड़ा है और हिंसा की एक भी घटना की सूचना नहीं मिली है। राज्य विधानसभा में विपक्ष के नेता एवं भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने मांग की कि राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाया जाए।

उन्होंने कहा, ''राज्य सरकार के तहत स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव संपन्न होना बहुत मुश्किल है। यह तभी संभव है जब राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाया जाये या अनुच्छेद 355 का इस्तेमाल किया जाये।'' संविधान की धारा 355 में कहा गया है कि राज्यों को आंतरिक अशांति और बाहरी हमले से बचाना संघ का कर्तव्य है। भाजपा नेता राहुल सिन्हा ने दावा किया कि राज्य निर्वाचन आयोग (एसईसी) राज्य की तृणमूल कांग्रेस सरकार के निर्देशानुसार काम कर रहा है और वह अपने कर्तव्यों का पालन करने में पूरी तरह से विफल रहा है। उन्होंने कहा, ''जिस तरह से वे आज मतदान करा रहे हैं उससे यह स्पष्ट है। कई बूथ पर कोई केंद्रीय बल तैनात नहीं है, जबकि कुछ



में राज्य पुलिस की भी मौजूदगी नहीं है। मुझे तस्वीरें और वीडियो भी मिले हैं जहां सीसीटीवी तारों से भी नहीं जुड़े थे। इससे वास्तव में उपद्रवियों को हिंसा करने में मदद मिली।'' माकपा नेता सलीम ने कहा, ''कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद केंद्रीय बलों की उचित ढंग से तैनाती नहीं की गई है।''

माकपा के वरिष्ठ नेता सुजान चक्रवर्ती ने दावा किया, ''हथियारों का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा है और इन सभी घटनाओं के पीछे सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस का हाथ है। उन्होंने चुनाव के दिन व्यवधान पैदा करने और मतपेटियों की लूट के इरादे से पहले ही इसकी साजिश रच ली थी। लेकिन मुझे यह देखकर खुशी है कि कुछ जगहों पर लोगों ने इसका विरोध किया।'' चक्रवर्ती ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, ''मैं यह देखकर हैरान हूं कि कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश के मुताबिक केंद्रीय बलों की तैनाती नहीं की गई। ऐसा लगता है कि कुछ समझौता हुआ है... यह पूरी तरह से अदालत के आदेश का उल्लंघन है।'' कांग्रेस नेता अधीर चौधरी ने कहा कि चुनाव एक मजाक बन गया है क्योंकि ''टीएमसी के गुंडे खुलेआम घूम रहे हैं और लोगों का जनादेश लूट लिया गया है।

## ट्विटर ने लॉ फर्म पर किया मुकदमा

सैन फ्रांसिस्को । ट्विटर ने माइक्रो-ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म का प्रतिनिधित्व करने वाली एक लॉ फर्म पर मुकदमा दायर किया है। दरअसल, एलन मस्क ने 44 बिलियन डॉलर में प्लेटफॉर्म खरीदने की अपनी डील से पीछे हटने की कोशिश की थी। पिछले साल मस्क द्वारा कंपनी का अधिग्रहण करने के अपने समझौते को समाप्त करने की कोशिश के बाद ट्विटर के पिछले प्रबंधन ने कॉर्पोरेट लॉ फर्म को काम पर रखा था। रिपोर्ट्स के मुताबिक विलय एवं अधिग्रहण मुकदमों की शीर्ष लॉ फर्म वाचटेल, लिप्टन, रोजेन एंड काट्ज़ को ट्विटर से नौ करोड़ डॉलर फीस मिली, जो सोशल नेटवर्क के अनुसार अन्यायपूर्ण संवर्धन था। ट्विटर अब चाहता है कि यह फीस वापस की जाए। ट्विटर की मूल कंपनी एक्स कॉर्प द्वारा सैन फ्रांसिस्को सुपीरियर कोर्ट में मुकदमा दायर किया गया है। मुकदमे में कहा गया है कि लॉ फर्म ने कैश रजिस्टर से फंड तब लिया जब चाबियां मस्क को सौंपी जा रही थीं, जो एक्स कॉर्प के मालिक हैं। मुकदमे के साथ प्रस्तुत दस्तावेजों के अनुसार, ट्विटर के बोर्ड और अधिकारियों ने नौ करोड़ डॉलर के भुगतान को मंजूरी दे दी क्योंकि लॉ फर्म मस्क को कंपनी खरीदने के समझौते का पालन कराने में सफल रही थी।

## धोखाधड़ी करने वाले 1100 छात्रों को भारत भेजेगा अमेरिका

न्यूयॉर्क। टैक्सास एवं न्यूयॉर्क की लगभग दो दर्जन अमेरिकन यूनिवर्सिटी में फर्जी तरीके से दाखिला लेने वाले छात्रों की सूची, अमेरिकी प्रशासन ने तैयार कर ली है। लगभग 1100 भारतीय छात्र 1 साल से अमेरिका में रहकर पढ़ाई कर रहे थे। इन सभी ने वहां पर पार्ट टाइम जॉब के लिए रजिस्ट्रेशन भी करा लिया था। भारत के एक होटल में फर्जी तरीके से विभिन्न विश्वविद्यालयों की परीक्षा आयोजित कराई गई। जब इन छात्रों ने अमेरिका के कॉलेजों में दाखिला लिया। उसके बाद विश्वविद्यालय के सामने इनकी असलियत खुल गई। जाँच होने पर यह मामला उजागर हुआ है। इनमें से अधिकांश छात्र गुजरात के हैं। भारत में ऑनलाइन परीक्षा के नाम पर यह घोटाला किया गया। इस परीक्षा में हाईटेक तरीके से परीक्षा में फर्जीवाड़ा कराया गया था। होटल के कमरे में लैपटॉप और ब्लूटूथ की सहायता से परीक्षार्थियों से परीक्षा का नाटक कराया गया था। लैपटॉप के नीचे स्पाई कैमरे लगाए गए थे। ब्लूटूथ की बोर्ड से छात्र की ओर से आंसर लिख दिए जाते थे। परीक्षा के दौरान अमेरिका में बैठे परीक्षकों को शक ना हो, इसके लिए छात्रों से कहा जाता था,कि वह परीक्षा के समय में टाइपिंग करने का नाटक की बोर्ड में करते रहें। फर्जी परीक्षा दिलाकर परीक्षार्थियों को अच्छे नंबर दिलाई जाते थे। लाखों रुपए परीक्षार्थियों से लेकर उनका एडमिशन विदेशों के कॉलेजों में कराया गया था। जब यह छात्र वहां पढ़ने गए, वहाँ इनका शिक्षा का स्तर बहुत कम था। इसके बाद विश्वविद्यालय ने इसकी जांच कराई,और मामला खुलकर सामने आया। अब अमेरिका से 1100 छात्रों को वापस भारत भेजा जा रहा है।

## जिब्राल्टर के पास हैं सबसे ज्यादा गाड़ियां, अमेरिका-जापान को भी पीछे छोड़ा

लंदन । दुनिया का एक देश ऐसा भी है जिसके लोगों के पास सबसे ज्यादा गाड़ियां हैं। उसने अमेरिका, जापान और चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। इस देश में हरेक 1000 लोगों पर 1,300 गाड़ियां हैं। जिब्राल्टर देश ऐरिया में भले ही छोटा है, लेकिन यहां संपन्नता अधिक है। गौरतलब है कि जिब्राल्टर स्पेन के दक्षिणी तट पर स्थित के ब्रिटिश कॉलोनी है। इस पर सन 1713 से ब्रिटेन का कब्जा है। मात्र 6.8 वर्ग किमी में फैले जिब्राल्टर की आबादी मात्र 32,669 है। विश्व सांख्यिकी के मुताबिक जिब्राल्टर में प्रति 1,000 लोगों पर 1,444 गाड़ियां हैं। इनमें कार, वैन, बस, फेट और दूसरे तरह के ट्रक शामिल हैं लेकिन टू वीलर को इसमें शामिल नहीं किया गया है। इस लिस्ट में दूसरे नंबर पर सैन मरीनो का नाम है। यूरोपीय देश लिंकटेंस्टिन में प्रति 1,000 व्यक्तियों पर गाड़ियों की संख्या 1,193 है। अंडोरा में यह संख्या 1,050, मोनैको में 910 और न्यूजीलैंड में 884 है। इस लिस्ट में अमेरिका सातवें नंबर पर है। दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी वाले देश अमेरिका में प्रति 1,000 लोगों पर 831 गाड़ियां हैं। कनाडा और फिनलैड में यह आंकड़ा 790 है। इसी तरह माल्टा में प्रति 1,000 लोगों पर 786 गाड़ियां हैं। लक्जमबर्ग में यह आंकड़ा 784 और ऑस्ट्रेलिया में 782 है। इटली में प्रति 1,000 लोगों पर 755 गाड़ियां, एस्तोनिया में 720, पोलैंड में 687, फ्रांस में 668, चेक रिपब्लिक में 648, जर्मनी में 628 और स्पेन में 627 गाड़ियां हैं। एशिया में प्रति 1,000 लोगों में सबसे ज्यादा गाड़ियां जापान में हैं। वहां 1,000 लोगों पर 624 गाड़ियां हैं। यूके में यह संख्या 600, कतर में 591, मलेशिया में 542, साउथ कोरिया में 485, रूस में 395, इजरायल में 390, यूएई में 354, तुर्की में 254 और चीन में 226 है। इसके मुताबिक भारत में 1,000 लोगों पर 59 गाड़ियां हैं। पाकिस्तान की बात करें तो वहां 1,000 लोगों के पास 29 गाड़ियां हैं जबकि बांग्लादेश में यह संख्या 27 है। नॉर्थ कोरिया में प्रति 1,000 लोगों पर केवल एक गाड़ी है।

## दरिंदें पति ने पत्नी की हत्या कर....खोपड़ी का एशट्रे बनाया

मैक्सिको सिटी । कहते हैं कि एक लड़की मां-बाप के बाद अपने पति पर ही सबसे ज्यादा विश्वास करती है, लेकिन अगर वह ही हैवान बन जाए तब क्या होगा। हालात ये हैं कि जिन पर सबसे ज्यादा भरोसा किया जाता है, वहीं जान के दुश्मन बनते जा रहा है। मैक्सिको से ऐसा मामला सामने आया है,जहां रिश्तों से विश्वाश ही उठ जाएगा। मैक्सिको सिटी में 32 साल के एक शख्स ने ना सिर्फ अपनी पत्नी की हत्या की बल्कि उसका भेजा निकाल लिया। इतना ही नहीं दरिदें पति ने पत्नी की खोपड़ी का एशट्रे तक बना डाला। इस दरींदे को पत्नी की हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया है। बताया जा रहा है कि उसकी शादी पिछले साल मारिया मोंटसेराट के साथ हुई थी। मारिया पहले से शादीशुदा थी, उसकी पांच बेटियां हैं। आरोपी ने बताया कि उसने पत्नी की हत्या सांता मुएर्टे और एक शैतान के आदेश पर किया मैक्सिको और अमेरिका में सांता मुएर्टे को मृत्यु का अवतार कहा जाता है। पत्नी की हत्या के बाद आरोपी ने शव को टुकड़े किए फिर अवशेषों को प्लास्टिक की थैलियों में भर दिया। शव के कुछ हिस्सों को उसने गड्ढे में फेंक दिया। वहीं बाकी को घर में रख लिया। उसने अपनी पत्नी के दिमाग का हिस्सा खा लिया और उसकी टूटी हुई खोपड़ी को ऐशट्रे के रूप में इस्तेमाल कर लिया।

## भारत ने नेपाल की राजनीति में कभी हस्तक्षेप नहीं किया : ओली

नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री केपी ओली ने कहा कि प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड' की एक हालिया टिप्पणी को लेकर भारत को विवाद में नहीं घसीटा जाना चाहिए जिसमें प्रचंड ने कहा था कि नेपाल में भारतीय कारोबारी सरदार प्रीतम सिंह ने उन्हें प्रधानमंत्री बनाने के प्रयास किए थे। प्रचंड ने कहा था, 'उन्होंने (सिंह ने) एक बार मुझे प्रधानमंत्री बनाने का प्रयास किया था।' प्रचंड ने एक किताब के विमोचन कार्यक्रम में कहा, 'उन्होंने मुझे प्रधानमंत्री बनाने के लिए कई बार दिल्ली की यात्रा की और काठमांडू में राजनीतिक नेताओं के साथ कई दौर की बातचीत की।' उनकी टिप्पणी ने विवाद खड़ा कर दिया है और कई हलकों से इसकी आलोचना हुई है और संसद की कार्यवाही भी ठप कर दी गई है। प्रचंड की टिप्पणी पर ओली ने कहा, 'भारत अच्छी तरह से जानता है कि नेपाल में सरकार गठन में हस्तक्षेप करना नेपाल की संप्रभुता का उल्लंघन होगा और उसने ऐसा नहीं किया है और न ही करेगा।' उन्होंने यह भी दावा किया कि सिंह ने प्रचंड के उस बयान को खारिज कर दिया है जिसमें उन्होंने कहा था कि सिंह ने सीपीएन-यूएमएल अध्यक्ष को प्रधानमंत्री बनाने के लिए दिल्ली की यात्रा की थी। ओली के मुताबिक, सिंह ने कहा है, मैं प्रचंड को प्रधानमंत्री बनाने के लिए दिल्ली नहीं गया था। मुझे नहीं पता कि प्रधानमंत्री ऐसा क्यों कह रहे हैं, लेकिन मैं उन्हें प्रधानमंत्री बनाने के लिए कभी दिल्ली नहीं गया।' ओली ने काठमांडू में यूएमएल की छात्र शाखा द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सिंह ने संवाददाता सम्मेलन में उक्त टिप्पणी की। ओली ने कहा, 'भारत ऐसा कभी नहीं कहता लेकिन हमारे प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि नेपाल की संप्रभुता नेपाली जनता या संसद में नहीं है और सरकार संसद से नहीं बनती बल्कि दिल्ली जाने से बनती है।'' उन्होंने कहा कि प्रचंड का बयान हमारी राष्ट्रीय संप्रभुता और राष्ट्रवाद के लिए झटका है।

मैक्सिकों में एक ऑफशोर ऑयल प्लेटफार्म में लगी आग को बुझाने के लिए पानी की बौछारें करती हुईं नौकाएं।

## पुतिन और शी जिनपिंग की मुलाकात पर बाइडेन ने क्यों कहा संभल जाए

वॉशिंगटन । अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग को संभलने का संकेत दिया है। एक इंटरव्यू के अनुसार बाइडेन ने शी को कहा कि वे सावधान रहे क्योंकि वह पश्चिमी निवेश पर निर्भर है। यह बात शी भी कई बार कह चुके हैं कि उनकी अर्थव्यवस्था पश्चिमी निवेश पर निर्भर करती है। बाइडेन ने उन्हें सावधान तब किया जब उनकी और पुतिन की बैठक हुई। बाइडेन ने कहा, यह मैंने कोई धमकी नहीं दी है यह मेरा आंकलन है। जब से रूस और यूक्रेन में युद्ध हुआ है, 600 अमेरिकी नागरिक रूस से बाहर निकल गए हैं

और आपने मुझे बताया है कि आपकी अर्थव्यवस्था यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका के निवेश पर निर्भर करती है, इसकारण सावधान रहें। पुतिन और शी जिनपिंग ने इस साल मार्च में मुलाकात की थी। दोनों देशों ने मित्रता के गर्मजोशी भरे शब्दों में पश्चिम की आलोचना करते हुए अपनी बातचीत की। इस दौरान जिनपिंग और पुतिन के बीच साढ़े चार घंटे तक बातचीत चली। इस बैठक का अमेरिका ने विरोध किया। ताइवान, यूक्रेन में रूस के युद्ध, उन्नत प्रौद्योगिकियों पर बढ़ते अमेरिकी निर्यात प्रतिबंध और चीन की राज्य के नेतृत्व वाली औद्योगिक नीतियों सहित राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों पर अमेरिका-चीन की टेंशन बढ़ गई है।

## रूसी आक्रमण के 500 दिन पूरे होने पर काला सागर द्वीप से जेलेंस्की ने कसा तंज, यूक्रेन को बताया बहादुर देश

**इस्लामाबाद (एजेंसी)।** रूस और यूक्रेन के बीच करीब 17 महीने से जंग जारी है। 24 फरवरी 2022 को इस जंग की शुरुआत उस वक्त हुई थी जब रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन के खिलाफ अपनी सेनाओं को विशे। सैन्य ऑपरेशन करने का आदेश दिया था। वलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने काला सागर द्वीप का दौरा किया जिसके रक्षकों ने आक्रमण की शुरुआत में एक रूसी युद्धपोत को ललकारा था। यूक्रेन पर मास्को का आक्रमण 500वें दिन तक पहुंच गया था। उन्होंने कहा कि आज हम स्नेक आइलैंड पर हैं, जिसे पूरे यूक्रेन की तरह कब्जा करने वाले कभी नहीं जीत पाएंगे, क्योंकि हम बहादुरों का देश हैं। उन्होंने कहा कि मैं यहां इस विजय स्थल से इन 500 दिनों के लिए हमारे प्रत्येक सैनिक को धन्यवाद देना चाहता हूं।

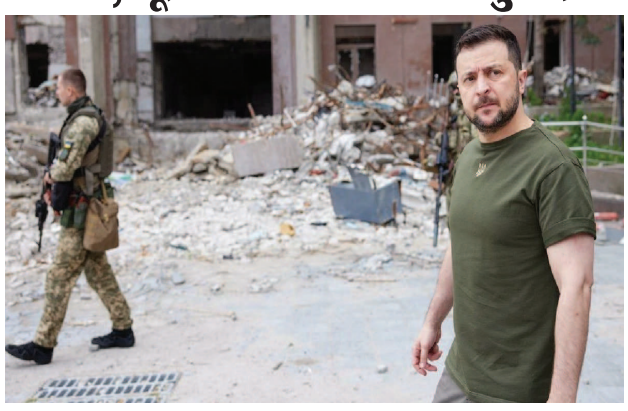

बता दें कि साल 2014 में रूस ने काला सागर पर क्रीमिया प्रायद्वीप पर अपना कब्जा जमा लिया था। मगर रूस इसे पूर्वी-दक्षिणी यूक्रेन में अपने विशेष सैन्य अभियान के दायरे से बाहर मानते हुए आया है। रूस ने 24 फरवरी, 2022 को अपना आक्रमण शुरू करने के तुरंत बाद स्नेक द्वीप पर कब्जा कर लिया। बाद में एक रेडियो एक्सचेंज वायरल हो गया जिसमें यूक्रेनी सैनिकों को रूस के हमलावर युद्धपोत के चालक दल से यह कहते हुए सुना गया कि वे अपने आत्मसमर्पण की मांग कर रहे थेय यूक्रेनी सैनिकों को बंदी बना लिया गया लेकिन बाद में उन्हें रूसी बंदी से बदल दिया गया। कीव ने पिछले साल जून में द्वीप पर दोबारा कब्ज़ा कर लिया।

एक न्यूज एंजेसी के मुताबिक, 24 फरवरी 2022 से लेकर 21 मई 2023 तक इस युद्ध में करीब 15,117 नागरिकों की जान चली गई। वहीं अमेरिका के खुफिया दस्तावेजों के मुताबिक इस युद्ध में करीबन 3,54,000 रूसी और यूक्रेनी सैनिक मारे गए और घायल हुए हैं।

## ऑस्ट्रेलिया में फ्लॉप साबित हुआ खालिस्तानियों का प्रदर्शन

**मेलबर्न (एजेंसी)।** कनाडा, यूके और अमेरिका की ही तरह ऑस्ट्रेलिया में भी खालिस्तानियों ने एक प्रोटेस्ट मार्च का आयोजन किया था। यहां पर मेलबर्न में भारतीय दूतावास के बाहर खालिस्तानियों ने प्रदर्शन का मन बनाया था। मगर जानकारी के मुताबिक यह प्रदर्शन पूरी तरह से फ्लॉप साबित हुआ। मेलबर्न की सेंट किल्डा रोड पर हुई रैली में खालिस्तानियों ने कुछ भारतीयों के साथ मारपीट और धक्का मुक्की भी की। जो पोस्टर भारतीय दूतावास के बाहर लगे थे उनमें एक एके-47 राइफल नजर आ रही थी। पोस्टर पर किल इंडिया लिखा हुआ था और बंदूक की फोटो को देखने से लगता था कि जैसे इस पर पाकिस्तानी झंडा बना हुआ है। मेलबर्न में ही 29 जनवरी को खालिस्तान समर्थकों और भारत समर्थकों के बीच झगड़ा हुआ था। खालिस्तानी समर्थक पंजाब की आजादी के लिए जनमत संग्रह के नाम पर इकट्ठा हुए थे। पिछले दिनों जाने-माने कनाडाई पत्रकार टेरी मिलेवस्की ने ट्वीट किया था। कि खालिस्तानियों ने भारतीय राजनयिकों को हत्यारा बताने के लिए दुनिया भर में रैलियां करने की योजना बनाई है। उन्होंने बताया था कि खालिस्तानी सैन फ्रांसिस्को, बर्मिंघम, ओटावा में भारतीय राजनियकों पर नजर रख रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक भारत ने राजनयिकों की तस्वीर वाले पोस्टरों पर खासी चिंता जाहिर की है। मेलबर्न में भारतीय वाणिज्य दूतावास ने विदेश मामलों और व्यापार विभाग (डीएफएटी) और ऑस्ट्रेलियाई संघीय पुलिस (एएफपी) के अधिकारियों के साथ दो अलग-अलग ब्रीफिंग की है। सूत्रों के मुताबिक भारतीय अधिकारी इस बहुत गंभीरता से ले रहे हैं और संबंधित ऑस्ट्रेलियाई अधिकारियों से लगातार संपर्क में हैं। शुक्रवार को भी भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजित डोभाल ने अपने ब्रिटिश समकक्ष के सामने खालिस्तान का मुद्दा उठाया।

## चीन से बातचीत के लिए हमेशा तैयार, तिब्बत की आजादी नहीं मांग रहे, दलाई लामा का आया बयान

**ब्रुसेल्स (एजेंसी)।** धर्मशाला। तिब्बत के आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा ने चीन से बातचीत की शनिवार को इच्छा जताई, साथ ही स्पष्ट किया कि वह चीन से तिब्बत की आजादी की मांग नहीं कर रहे हैं। दिल्ली के लिए रवाना होने से पहले कांगड़ा हवाईअड्डे पर उन्होंने संवाददाताओं से कहा, चीन बदल रहा है और उसे अब यह अहसास हो चुका है कि तिब्बत के लोग बहुत शक्तिशाली हैं।

उन्होंने कहा, तिब्बत की समस्या से निपटने के लिए वह (चीन) मुझसे संपर्क करना चाहते हैं और मैं भी बिल्कुल तैयार हूं। एक सवाल के जवाब में दलाई लामा ने कहा, मैं चीन के साथ बातचीत के लिए हमेशा तैयार हूं और वर्षों पहले यह स्पष्ट कर चुका हूं कि हम पूर्ण आजादी नहीं मांग रहे हैं। हम चीन गणराज्य का हिस्सा रहेंगे।'' तिब्बती आध्यात्मिक गुरु लद्दाख के लिए रवाना होने से पहले दो दिन दिल्ली में ही रुकेंगे।

## विरोधियों की लाख कोशिशों के बावजूद पाक राजनीति का सितारा बने हुए हैं इमरान

### -3 अरब डॉलर का कर्ज देने वाले आईएमएफ अधिकारियों ने की मुलाकात

**काठमांडू (एजेंसी)।** सत्ताबदर होने के बाद से लगातार पाकिस्तान की राजनीति में एक नाम लगातार सुर्खियों में रहता है। कभी खुद पर हुए हमले की वजह से तो कभी दर्ज हुए 100 से अधिक मुकदमे और गिरफ्तारी को लेकर। पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान विरोधियों कि तमाम कोशिशों के बावजूद राजनीति का सितारा बने हुए हैं। अब पाकिस्तान को 3 अरब डॉलर की कर्ज का ऐलान करने वाले अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष यानी आईएमएफ के अधिकारियों ने इमरान खान से मुलाकात की है। जिसके लिए आईएमएफ के अधिकारी खास तौर से लाहौर पहुंचे थे। दरअसल, आईएमएफ ने पाकिस्तान के लिए घोषित अरबों के बेलआउट पैकेज के लिए वहां कि प्रमुख राजनीतिक दलों का समर्थन मांगा है। जिसमें इमरान खान की पीटीआई, सत्तारूढ़ पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज, पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी शामिल है।

### इमरान की तस्वीर को कर दिया गया ब्लर

आईएमएफ बैठक के लाइव प्रसारण के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री और पीटीआई अध्यक्ष इमरान खान की तस्वीर को धुंधला करने के लिए पाकिस्तानी मीडिया की जमकर आलोचना हुई है। शीर्ष समाचार चैनल एआरवाई को पाकिस्तान में पीटीआई समर्थकों से गंभीर प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ रहा है। चैनल पर दिखाए गए फाइल फुटेज में पूर्व पीएम इमरान खान की तस्वीर को सेंसर और धुंधला कर दिया गया है। आईएमएफ प्रतिनिधि और पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी की फुटेज एकदम क्लियर थी।

### चीन से 3.5 अरब डॉलर, सऊदी और यूएई से 3 अरब डॉलर मिलेंगे

नकदी संकट से गुजर रहे पाकिस्तान ने विदेशी कर्जों के भुगतान के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) को एक वित्तपोषण योजना सौंपी है जिसमें आठ अरब डॉलर का इंतजाम कर लिए जाने की सूचना दी गई है। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान सरकार ने आईएमएफ को छह अरब डॉलर के बजाय आठ अरब डॉलर के विदेशी कर्ज भुगतान का इंतजाम करने की जानकारी दी है। समाचारपत्र द एक्सप्रेस ट्रिब्यून में शनिवार को सूत्रों के हवाले से प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक, आईएमएफ को सौंपी गई वित्तपोषण योजना में चीन से 3.5 अरब डॉलर मिलने की बात कही है। इसके अलावा सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) से क्रमशः दो अरब और एक अरब डॉलर पाकिस्तान को मिलेंगे।

## अब चांद की मिट्टी खोदने में जुटे रूस व चीन, स्पेस में तैनात करेंगे परमाणु हथियार

**मॉस्को (एजेंसी)।** पृथ्वी पर तो परमाणु हथियार तैनात कर ही दिए हैं, अब चांद की मिट्टी खोद कर रूस और चीन स्पेस में भी परमाणु हथियारों का जखीरा रखने की व्यवस्था करने में जुट गए हैं। लेकिन इसके अंजाम को विशेषज्ञ बेहद खतरनाक मान रहे हैं। खबरों के मुताबिक रूस और चीन पृथ्वी के बाद अब अंतरिक्ष में परमाणु हथियार तैनात करना चाहते हैं और इसके लिए दोनों देश चंद्रमा के दोहन में एक दूसरी की मदद कर रहे हैं। इन देशों की ओर से किए जा रहे निवेश पर यूके स्पेस कमांड के प्रमुख, एयर वाइस मार्शल पॉल गॉडफ्रे ने स्पेस एक्सप्लोरेशन में ऐसी आशंका व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि ये देश चुपचाप अरबों डॉलर का निवेश अंतरिक्ष की खोज में कर रहे हैं। उन्होंने आशंका जताई है कि इस निवेश का इस्तेमाल घातक शस्त्रागार बनाने और चांद का खनन करके महत्वपूर्ण खनिज निकालने में हो सकता है।

उन्होंने खुलासा किया कि हमारे जीवनकाल में ही एस्टेरॉयड का खनन एक वास्तविकता बन सकता है। उन्होंने आगाह किया कि चीन का लक्ष्य चांद के मिनरल का दोहन करना है। उन्होंने कहा कि साल 2020 में चीन ने चेंजसाइट-वाई नाम का एक नया फास्फेट खनिज खोजा था, जो न्यूक्लियर फ्यूल के रूप में इस्तेमाल हो सकता है। इस खोज के बाद चीन अब अंतरिक्ष में मिनरल की खोज और उन्हें निकालने में और भी तेजी लाएगा। उन्होंने रूस की सैटेलाइट जैमिंग क्षमता पर चिंता जताई। उनका कहना है कि रूस इसके जरिए संचार लिंक को तोड़ने और वैश्विक वित्तीय बाजारों पर कहर बरपाने में सक्षम है। अमेरिकी स्पेस कमांड के जनरल जेम्स डिकिंसन के साथ उन्होंने यह जानकारी दी।

हालांकि लंबे समय से माना जा रहा है कि अमेरिका चीन के मुकाबले स्पेस रेस में पीछे हो गया है। इसके जवाब में जेम्स डिकिंसन ने जोर देकर कहा कि पेंटागन अपनी स्पेस क्षमताओं को लेकर आश्वस्त है। जेम्स डिकिंसन ने चीन की जगह रूस को एक समस्या माना। उन्होंने कहा कि रूस के पास एंटी सैटेलाइट मिसाइल है जो 28,000 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से घूम रहे किसी भी अंतरिक्ष यान को निशाना बना सकती है। चीन की प्रगति के बारे में बोलते हुए जनरल डिकिंसन ने उसके हाइपरसोनिक मिसाइल पर चिंता जताई।

## आज से भारत के दौरे पर लोकतंत्र-मानवाधिकार मामलों की प्रभारी राजनयिक, उठ सकते हैं ये बड़े मुद्दे

**वॉशिंगटन । (एजेंसी)।** लोकतंत्र और मानवाधिकार की प्रभारी वरिष्ठ अमेरिकी राजनयिक अभिव्यक्ति और संघ की स्वतंत्रता, महिलाओं एवं लड़कियों और कमजोर समूहों को शामिल करने पर नागरिक समाज संगठनों के साथ बातचीत के लिए 8 से 14 जुलाई तक भारत और बांग्लादेश का दौरा करेंगे। विदेश विभाग ने शुक्रवार को एक विज्ञप्ति में कहा कि भारत में वह अमेरिका-भारत की गहरी होती साझेदारी पर चर्चा करने के लिए वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों से भी मिलेंगी।

नागरिक सुरक्षा, लोकतंत्र और मानवाधिकार के अवर सचिव और तिब्बती मुद्दों के लिए अमेरिकी विशेष समन्वयक उज़रा ज़ेया अभिव्यक्ति और संघ की स्वतंत्रता, और महिलाओं और लड़कियों को शामिल करने पर नागरिक समाज संगठनों के साथ बातचीत करने के लिए 8 से 14 जुलाई तक भारत और बांग्लादेश की यात्रा करेंगी। विकलांग व्यक्तियों और कमजोर समूहों, जिनमें हाशिए पर मौजूद धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यक शामिल हैं।

विज्ञप्ति में कहा गया है, ÷भारत में, वह वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों से मुलाकात कर अमेरिका-भारत साझेदारी को गहरा करने और स्थायी करने पर चर्चा करेंगी, जिसमें वैश्विक चुनौतियों के साझा समाधान, लोकतंत्र, क्षेत्रीय स्थिरता और मानवीय राहत पर सहयोग को आगे बढ़ाना शामिल है।

संपादकीय

# याद रखें हम ये तीन बात जो हैं जीवन की सौगात

हमारी जीवन यात्रा के दौरान कई ऐसे प्रसंग घटित होते हैं कि हमारा सुख-चैन समाप्त हो जाता है।जो पास में है उसका सुख भोगने केबजाय जो अप्रिय घटित हुआ उसी तरफ़ मन बार-बार जाता है और हम व्यथित होने लगते हैं। चाहे किसी की खुशी का कारण न बनसको पर किसी के दर्द का मरहम जरूर बनकर देखना शायद उनकी दुआओं से आपके अपने घाव ही भर जाएँ । अत: जन्दिगी कोहमेशा एक फूल की तरह जीना चाहिए जो खुशबू भी दूसरों को देता है और और टूटता भी दूसरों के लिए ही है। चील की ऊँची उड़ान देखकर चिड़िया कभी भी डिप्रेशन में नहीं आती हैं वो सदा अपने अस्तित्व में मस्त रहती है क्योंकि पता है उसे सदाबहार जीवन का सहीसे सार । वह बंद कभी होते नहीं उम्मीदों के द्वार । वैसे ही इंसान भी वर्तमान में जीने वाला सदा सुखी रहता है । जिस क्षण उसे मरना है, या वह मर जाएगा लेकिन वह आज क्यों मरूं ? यह जीने की सही से कला सीख जाए। अपमान, शोक, वियोग, हानि, असफलता आदि- आदि तमाम स्थितियां आती रहती हैं और जाती भी रहती है। पर वास्तविकता में सही मायनों में जीना तभी हीं सार्थक है जब जीवनको कलात्मकता से जीया जाए। कठिन से कठिन विकट स्थिति में विवेक पूर्वक और सही से धैर्यपूर्वक निर्णय ले। हम सं विषम हरपरिस्थिति में सं रहतें हुवें , अपनी इन्द्रियों कों अपने वश में करतें हुवें , हम भौतिकता सें आध्यात्मिक की और अग्रसर होतें हुवें, अपनीआत्मा कों उज्जवल करतें हुवें, हम अपने परम् लक्ष्य की और अग्रसर हों।

प्रदीप छाजेड़
( बोरावड़ )

## आज का राशीफल

| | |
|---|---|
| मेष | पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। आपके वर्चस्व तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। |
| वृषभ | जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। रुके हुए कार्य सम्पन्न होंगे। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। नए अनुबन्ध प्राप्त होंगे। |
| मिथुन | प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं। आर्थिक लाभ होगा। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। |
| कर्क | पारिवारिक जनों के मध्य सुखद समाचार मिलेगा। रोजी रोजगार के प्रयास सफल होंगे। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। |
| सिंह | व्यावसायिक योजना सफल होगी। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। वाणी की सौम्यता से रुके हुए कार्य सम्पन्न होंगे। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। नए अनुबन्ध प्राप्त होंगे। |
| कन्या | जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। आय के नए स्त्रोत बनेंगे। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे। |
| तुला | पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें। यात्रा में अपने सामान के प्रति सचेत रहें चोरी या खोने की आशंका है। |
| वृश्चिक | आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। व्यावसायिक दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा। रुपए पैसे के लेन-देन में सावधानी रखें। विरोधियों का पराभव होगा। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है। |
| धनु | पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। |
| मकर | राजनैतिक दिशा में किए गए प्रयास फलीभूत होंगे। व्यावसायिक व पारिवारिक समस्याएं रहेंगी। आर्थिक संकट से गुजरना होगा। वाणी की सौम्यता आपको सम्मान दिलायेगी। |
| कुम्भ | बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। टकराव की स्थिति आपके लिए हितकर नहीं होगी। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे। धन आगमन होगा। कुटुम्बजनों का सहयोग मिलेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। |
| मीन | कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। भारी व्यय का सामना करना पड़ेगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। |

# जल स्वराज भविष्य की आशा, सुरक्षा

(लेखक-रमेश चंद शर्मा)

स्वराज, स्वराज्य, अपने पर अपना राज, इसमें विशेषकर आजकल जल स्वराज की चर्चा चल रही है। हम सभी जानते है कि जल ही जीवन है। जल से जीवन की उत्पत्ति प्रारंभ हुई। जल दुनिया में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, मगर खाने पीने प्रयोग में लेने के लिए शुद्ध साफ सुथरा निर्मल जल सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है। जल स्वराज की दृष्टि में है - आने वाला कल, भावी पीढ़ी, नया इंसान, नया समाज, एक नई दुनिया, इन जैसी संभावनाओं से हरा भरा, खुशहाल ऐसा ब्रह्माण्ड जहां प्राणियों, वनस्पति, जीव-जंतु, पशु पक्षी, पेड़-पौधे सभी के लिए सहजता, सरलता, सुविधा से शुद्ध साफ सुथरा निर्मल जल उपलब्ध हो।

जल स्वराज से दुनिया में चारों ओर प्रेम ही प्रेम, विविधता ही विविधता, संवेदना, संवाद, सहजता, सरलता, शांति, सौहार्द, जय जगत, अन्तर्सांस्कृतिक संबंध फले फूलेंगे, सही ढंग से विकसित होने के द्वार खुलेंगे। जल स्वराज इस राह का एक भागीरथ प्रयास है, भीष्म प्रतिज्ञा है, आप हम सबका भविष्य है।

जल की यात्रा विश्वव्यापी है। जो बूंद से शुरू होकर पहाड़, जंगल, मैदान, गांव देहात, शहर नगर होती हुई, जोहड़, तालाब, झील, भू-जल, कुआं, बावड़ी भरते हुए नदियों से मिलकर सागर, समुद्र तक जाती है। मजेदार बात यह है कि वहां जाकर भी रुकती नहीं है। फिर से भांप, गैस, बादल, वर्षा की बूंदें बनकर अनन्त यात्रा पर निकल पड़ती है। रास्ते में अनेक धाराओं को समेटते हुए आगे बढ़ती है। जल चक्र की यह यात्रा सतत श्रृंखलाबद्ध ढंग से, सातत्यपूर्वक सदैव जारी है। प्रकृति के साथ की गई छेड़छाड़ के कारण कभी बाढ़ के रूप में पानी की अधिकता से तो कभी सुखाड़ के रूप में पानी की कमी, अभाव में संकट का कारण भी बनती है। इसके पीछे हमारी नासमझी, नादानी, नालायकी, निक्कमापन, लोभ, लालच, स्वार्थ, शोषण, दोहन, लूट की प्रवृत्ति जिम्मेदार है।

जल की यात्रा विश्वव्यापी है। जो बूंद से शुरू होकर पहाड़, जंगल, मैदान, गांव देहात, शहर नगर होती हुई, जोहड़, तालाब, झील, भू-जल, कुआं, बावड़ी भरते हुए नदियों से मिलकर सागर, समुद्र तक जाती है। मजेदार बात यह है कि वहां जाकर भी रुकती नहीं है। फिर से भांप, गैस, बादल, वर्षा की बूंदें बनकर अनन्त यात्रा पर निकल पड़ती है। रास्ते में अनेक धाराओं को समेटते हुए आगे बढ़ती है। जल चक्र की यह यात्रा सतत श्रृंखलाबद्ध ढंग से, सातत्यपूर्वक सदैव जारी है।

गांधी जी ने जल को लेकर अपने समय में आज से बहुत पहले सतर्क किया था, चेतावनी दी थी, जागरूक किया था। जल के सद्प्रयोग, सही उपयोग का अपने जीवन में उदाहरण पेश किया। जल स्वराज एक दृष्टि, सोच, समझ, संभावना से जुड़ने का अथक सार्थक प्रयास का अवसर है। आओ मिलकर उठे, जागे, एक कदम आगे बढ़ाएं, साथ चलने का संकल्प लें। जल स्वराज संदेश दे रहा है कि हमें जिसने बनाया, उसने ही सबको बनाया है, हम सबके है, सब हमारे है, फिर यह दूरी क्यों, कैसे? सारा जहान हमारा, हम है सारे जहान के।

जल स्वराज को जानने, पहचानने, समझने समझाने के लिए जल संरक्षण, संवर्धन, सुरक्षा के साथ साथ जल की व्यापकता, पवित्रता, समझ, महत्व को दृष्टि में रखना होगा। आओ जल स्वराज के लिए बूंद की यात्रा को जानें, समझे।

बूंद के आसपास और चारों ओर जीवन ही जीवन। जीवन से भरी बूंद। जब कुछ नहीं था, तब बूंद थी। सब जगह चारों ओर बूंद ही बूंद। जहां देखो वहां बूंद। बूंदें सब जगह छाई हुई थी। चारों ओर बूंद का साम्राज्य था। जल ही जल। पानी ही पानी। बूंद मतलब जल की माया, छाया, काया का स्वरुप जो भी कहें बूंद में छिपा है, जीवन का संचार। बूंद से निकला जीवन, जीव फैल गया चहुं दिश। सभी दिशाओं में हर जगह विविधता के साथ। प्रारंभ हुई विविधता भरी सृष्टि, प्रकृति। पंच महाभूत जल, थल, नभ, हवा, आग से मिलकर। पंचतत्व से रचित यह संसार सात समुद्र पार तक फैल गया। प्रकृति ने करोड़ों वर्षों की साधना से यह सुंदर विश्व हमें सौंपा। बूंद से सागर तक की इस महा यात्रा, महात्म्य को जानना, सोचना- समझना, सहजना, सम्मान के साथ अपनाना, संरक्षण, संवर्द्धन करना जरूरी है।

लाखों विशेषकर हजारों वर्षों से चली आ रही यह प्राकृतिक व्यवस्था पिछले कुछ वर्षों में बुरी तरह से टूटी। तोडी गई। कारण सत्ता, संसाधनों का केन्द्रीयकरण बना। औद्योगिक क्रांति, तकनीकी की गति, पूंजी की महत्ता, संग्रह ने इसको बल प्रदान किया। समाज को किनारे कर दिया गया। समाज कर्त्तव्य हीन बन गया। बस्तियां बेतरतीब महानगर में तब्दील होने लगी। ग्रामोद्योग, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग की जगह बड़े पैमाने पर विशाल केन्द्रीत उद्योगों का जाल फैला। एकदम आश्चर्यजनक ढंग से कारपोरेट घरानों में भंयकर बढ़ोतरी हुई। विकास के नाम पर सत्ता, संपत्ति के मकड़जाल पहाड़ की तरह खड़े होने लगे। प्रदूषण मुक्त लघु उद्योग, हस्तकला, लघु कार्यों का विनाश हुआ। सत्ता और बड़े उद्योगों के गठबंधन ने प्रकृति और इंसान को भी एक संसाधन मानकर मनमानी अंधी लूट की। एक तरफ संपत्ति के पहाड़, किले, अटारिया जगमगाने लगे और दूसरी ओर भंयकर, घातक गहरे गड्ढे

फैलने लगे। असमानता की खाई महासागर की तरह फैलने लगी। समाज केवल नाम के लिए रह गया। आश्चर्य की बात है कि इस व्यवस्था को फैलाने, बढ़ाने, संरक्षित, संवर्द्धन करने के लिए कानून का डंडा, दबाव भी जोर से चला। बूंद, जल की जीवंत जीवन कहानी को समझना, जानना है तो इस मकड़जाल, स्थिति को सामने रखना होगा। हमारा समाज, देश पानीदार रहा है। पानी की समाज की एक अद्भुत अपनी समझ रही है। तालाब, जोहड़, कुंड, कुएं, बावड़ी, नौले, नाले, धौरे, झरनें, नदियां जैसे जलस्रोत सहित जल की समझ, पकड़ ने भारत को हरा-भरा, खुशहाल बनाकर रखा। विविधता से भरा हमारा देश, समाज प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका में रहा। प्राकृतिक सौंदर्य, भौगोलिक स्थिति, मौसम, जलवायु, ऋतुएं, रहन-सहन, खान-पान, सोच-समझ, भेष-भूषा, बोलचाल, बोलियां, भाषा, काम-धंधे, कृषि, पशुपालन सब विविधता से भरपूर रहा। हमारी बस्तियां जल के आसपास बनती गई, विशेषकर नदियों के किनारे। मानव जीवन क्रम जल के आसपास विकसित होते हुए, आगे बढ़ा। जल के परिणामस्वरूप ही वनस्पति, पशु-पक्षी, कीड़े- मकोड़े, जीव-जंतु, जंगल-पहाड़, नदी-नालों से भरा प्रकृति का निराला स्वरुप साफ, खुशहाल नजर आता है।

जल का भारतीय संस्कृति, जीवन, साहित्य में विशेष स्थान रहा है। जल का महत्व इससे और स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय समाज ने नदियों को मां का दर्जा दिया है। गंगा मैया, यमुना मैया, नर्मदा मैया, कावेरी मैया के नाम से नदियों को पुकारा जाता रहा है। नदी को लोकमाता का सम्मान दिया गया।जल के बिना जीवन संभव नहीं है। प्यास हो, भोजन हो, खेलना हो, तैरना हो, आना जाना हो, मृत्यु हो, तर्पण हो, पूजा पाठ हो, खेत हो, बागवानी हो, उद्योग हो, निर्माण कार्य हो सबमें जल चाहिए। अगर संकल्प या शपथ ग्रहण हो तब भी विश्वास जाहिर करने के लिए जल का उपयोग किया जाता। जल हाथ में लेकर असत्य नहीं बोला जा सकता, यह विश्वास अब टूटा है।

जल देवता - आपो देवता को परमात्मा की शक्ति, सामर्थ्य माना गया। धरती, पाताल, आकाश तीनों लोकों को जल पवित्र, निर्मल, शुद्ध, जीवंत बनाता है। प्रकृति, सृष्टि की रचना सृजनशीलता पंचतत्वों से हुई है। जल की इसमें सबसे अहम् भूमिका है। मानव भी पंचतत्वों से ही मिलकर बना है। सृष्टि की तरह मानव में भी दो-तिहाई भाग जल का है।

प्रकृति एवं मानव सभ्यता के विकास में जल की अहम् भूमिका है। प्रकृति में जल का अपार भंडार होते हुए भी मानव उपयोग के लिए जल सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है। वैज्ञानिक बताते हैं कि पृथ्वी पर उपलब्ध जल का केवल 2.5त्न हिस्सा ही सीधे उपयोग में लाने लायक है। जबकि इसका भी दो-तिहाई हिस्सा बर्फ के रूप में सोया हुआ है। जल के बिना जीव संसार की कल्पना ही संभव नहीं की जा सकती है। जल है तो जीवन है। जल से ही सब प्रकार के प्राणी, जीव, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, जीव-जंतु जीवन पाते है। जल का अपना जीवन, संस्कार, इतिहास है। दुनिया में जल विभिन्न रूपों में विद्यमान है। कहीं नमकीन, खारा जल समुद्र, सागर में लहलहा रहा है। कहीं जल हिमखंड में सोया हुआ है। कहीं जल तालाब, जोहड़, पोखर, झील में शांत, गंभीर बैठा है। कहीं जल कुएं, बावड़ी, धरती के पेट में छुपा हुआ है। कहीं जल झरने, नदी, नाले में गतिमान होकर, उछल कूद कर, छलांगें लगा कर खेलता हुआ गति ही जीवन है का संदेश दे रहा है।

# रेतीले धोरों के बीच झरता है देवी मैया का नेह, मरुस्थल में महक रहा आस्था का उद्यान

- डॉ. दीपक आचार्य

पश्चिमी राजस्थान का समूचा क्षेत्र दैवीय शक्तियों और दिव्य ऊर्जाओं से आप्लावित माना जाता है। समूचे क्षेत्र में शाक्त उपासना कोने-कोने में विद्यमान होने के साथ ही देवियों और लोक देवियों के प्रति श्रद्धा और आस्था का ज्वार सदियों से उमड़ता रहा है। मरुस्थलीय क्षेत्रों में देवी की कृपा और स्नेह वृष्टि के कई प्रपात हैं जहाँ दिव्य और दैवीय ऊर्जा कण-कण में विद्यमान है। देवी के प्रमुख तीर्थ धामों के साथ ही जन-जन में देवी उपासना का जो प्रभाव देखा जाता है, वह अपने आपमें विलक्षण है। इन्हीं में एक है जैसलमेर जिले का दूरस्थ और रेतीले टीलों के बीच बसा हुआ गांव बेरसियाला। यहाँ अवस्थित जगत जननी माँ जगदम्बा का मन्दिर जन-मन को सुकून देने के साथ ही जीवन में आने वाली समस्याओं और विभिन्न प्रकार की अड़चनों को दूर करने का माध्यम बना हुआ है। और यह सब संभव हो पाया है देवी मैया के साधक पं. श्री विनोद सारस्वत की बदौलत, जिनकी प्रेरणा से स्थापित यह मन्दिर आज दूर-दूर तक जाना जाता है। बहुत दूर-दूर से श्रद्धालु यहां आते हैं और जीवन का आनंद पाते हैं। भारत-पाक सीमा पर सीमावर्ती जिले जैसलमेर में रेतीले धोरों के बीच अवस्थित इस गांव में बहता है श्रद्धा-भक्ति का ज्वार। यहां के जगत जननी माँ जगदम्बा का मन्दिर है, जहाँ प्राच्यविद्यामर्मज्ञ पं. श्री विनोद सारस्वत जी ने दशकों तक साधना कर देवी की कृपा पायी।

**ब्रज भूमि से आकर जगायी देवी साधना की अलख**

मीलों तक पसरे रेगिस्तान में रेतीले टीलों के बीच अपने परिश्रम, त्याग और तपस्या का परिचय देते हुए पं. श्री विनोद सारस्वत ने ऐसा सुकूनदायी और ऊर्जस्वित धर्म धाम स्थापित कर दिया है जो न केवल आस-पास के क्षेत्र बल्कि दूर-दूर तक श्रद्धा-भक्ति का ज्वार उमड़ाता रहा है। अन्यथा कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि निर्जन रेतीले समन्दर में सुकून की हरियाली का ऐसा मंजर देखने को मिल सकता है जहां आकर आत्मतोष और शाश्वत शान्ति का अहसास तन-मन को आह्लादित कर देने वाला होगा।

**लोक सेवा का व्रत**

देवी कृपा से प्राप्त दिव्य एवं दैवीय ऊर्जा शक्ति का उपयोग वे जन हितार्थ करने में कभी पीछे नहीं रहते। यही कारण है कि दूर-दूर से भक्तजन देवी मन्दिर के दर्शनार्थ एवं पं. श्री विनोद सारस्वत जी से जीवन और जगत के समाधान पाने के लिए आते रहते हैं।

**आकर्षण जगाता है चौंसठ योगिनी यंत्र**

इस मन्दिर में चौंसठ योगिनी यंत्र के साथ ही विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं जिनका रोजाना पूजन-अर्चन होता है। चौंसठ योगिनी का यहां स्थापित यंत्र अपने आप में विलक्षण और अन्यतम होने के साथ ही 64 योगिनियों की कृपा से साक्षात् कराता है।

**रेत के समन्दर में भक्ति का दरिया**

जगत जननी माँ जगदम्बा मन्दिर जहाँ स्थापित है, उस क्षेत्र को परोपकार धाम की संज्ञा दी गई है। इसमें देवी मैया की सुन्दर मूर्ति है। इनके साथ ही पूरे मन्दिर में विभिन्न देवी-देवताओं की आकर्षक प्रतिमाएं स्थापित हैं। इनमें भैरवनाथ, धन्वन्तरि, सरस्वती, शिव-पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, हनुमानजी, राधा-कृष्ण, राम, लक्ष्मण, जानकी आदि की मूर्तियां प्रमुख हैं। मन्दिर परिसर के पृष्ठ भाग में एक और छोटा सा शिवालय है जिसमें कृष्ण वर्ण का शिवलिंग, पार्वती, नन्दी, गणेश एवं कार्तिकेय की श्वेत मूर्तियां स्थापित हैं। सवेरे शाम यहाँ आरती होती है।

वर्ष भर विभिन्न अवसरों पर यज्ञ और अनुष्ठानों का क्रम यहां बना रहता है। रेगिस्तान में जीवन की हरियाली का संचार यहां देखा जा सकता है।

पं. श्री विनोद सारस्वत मूलतः शिक्षाविद् हैं और राजकीय सेवाओं के सिलसिले में वे बेरसियाला आए तथा शिक्षा विभाग में सेवारत रहते हुए ही बेरसियाला में रहकर देवी साधना की और एक मन्दिर की संकल्पना को पूर्ण किया।

**सेहत और सुकून का अहसास**

सिद्ध संत-महात्माओं और वैद्यों के सान्निध्य में रहते हुए उन्होंने आयुर्वेद के सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान पाया। आज वे बेहतर नाड़ी वैद्य होने के साथ ही रोगोपचार में आयुर्वेद के प्रयोग और पराविद्याओं से रोग एवं समस्या निवारण में सिद्ध हैं। उनकी इसी खासियत को जानकर दूर-दूर से लोग उनके पास इस रेगिस्तानी क्षेत्र में आते हैं और समाधान पाते हैं।

मरुस्थल में ऐसे खूब सारे देवी धाम हैं जो भक्तों की अगाध आस्था और विश्वास की कीर्तिपताका फहराते रहे हैं।

- डॉ. दीपक आचार्य
35, महालक्ष्मी चौक,
बांसवाड़ा-327001
(राजस्थान)

# भ्रष्टाचार के बिना कांग्रेस सांस नहीं ले सकती

(लेखक - सनत जैन)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछले एक दशक से कांग्रेस पर भ्रष्टाचार को लेकर जमकर प्रहार कर रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस के बारे में कहा कि भ्रष्टाचार के बिना कांग्रेस सांस भी नहीं ले सकती है। उन्होंने कांग्रेस पार्टी को भ्रष्टाचार की गारंटी का पर्याय बताया है। 2013 से वह लगातार कांग्रेस को भ्रष्टाचार के मामले में घेरते से आ रहे हैं। प्रधानमंत्री 2023 में भी उन्हीं आरोपों में कांग्रेस को घेरने का प्रयास कर रहे हैं। इसमें उन्हें कितनी सफलता मिलेगी, इसको लेकर हर आदमी अब चर्चा करने लगा है। 2014 के पहले सीएजी की काल्पनिक रिपोर्ट के आधार पर कांग्रेस को भ्रष्टाचार की पार्टी कहा गया था। जिन मामलों में कांग्रेस को भ्रष्टाचार की पार्टी निरु पित किया गया था, उनमें 2जी घोटाला, कोयला घोटाला, 90 दशक के बोफ़र्स घोटाले, सहित दर्जनों घोटाले बताकर कांग्रेस को भ्रष्टाचार की पार्टी बना दिया था। पिछले 2 लोकसभा चुनाव में इन्हीं आरोपों के बल पर भारतीय जनता पार्टी को कांग्रेस को कमजोर करने में बड़ी सफलता भी मिली थी। इससे इंकार नहीं किया जा सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की केन्द्र सरकार को 10 साल होने जा रहे हैं। भ्रष्टाचार को खत्म करने की गारंटी उन्होंने 2014 में दी थी। 10 साल बाद भी उन्हीं आरोपों के आधार पर 2024 का लोकसभा चुनाव जीत पाना शायद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए अब संभव नहीं होगा। उन्होंने 60 माह में भारत का कायाकल्प करने और अच्छे दिन लाने का स्वप्न मतदाताओं को दिखाया था। मतदाताओं ने उन्हें 5 साल के स्थान पर 10 साल का समय दे दिया। अर्थात 60 माह की जगह 120 माह दे दिए। 2014 के लोकसभा चुनाव के जो वायदे उन्होंने किए थे, उस पर मतदाताओं ने भरोसा किया था, लेकिन वह सारे वायदे वर्तमान में जुमले साबित हो रहे हैं। बेरोजगारी, महंगाई निरंतर बढ़ रही है। पेट्रोल, डीजल और गैस की कीमतें भी इन 9 वर्षों में बड़ी तेजी के साथ बढ़ी हैं। आम आदमी पर कर्ज का बोझ बढ़ता चला जा रहा है। सरकार को 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन बांटना पड़ रहा है। सरकारी योजनाओं के बिना आम आदमी अपना जीवन नहीं जी सकता है। यहां तक कि मनरेगा योजना में ग्रामीण अंचलों के गैर संगठित मजदूरों को जो मजदूरी मिल जाती थी। वह भी अब संभव नहीं हो पा रही है। बात करें घोटालों की तो एक भी घोटाला अदालतों में साबित नहीं हो पाया। कोयला घोटाला और 2जी घोटाले में जांच एजेंसियां न्यायालय में सबूत ही पेश नहीं कर पाई। जिसके कारण आरोपी न्यायालय से दंडित नहीं हुए। 10 साल की सरकार होने के बाद भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भ्रष्टाचारियों पर कोई कार्यवाही नहीं कर पाए। मतदाता इसमें उनकी विफलता को ही देख रहे हैं। पिछले 10 वर्षों के भाजपा के शासनकाल में भी जो घपले और घोटाले के आरोप लगे हैं। उनकी जांच कराने के स्थान पर चुप्पी साध लेने से भाजपा की विश्वसनीयता कम हुई है। भ्रष्टाचार के मामले में जनता कांग्रेस पार्टी के बारे में यह मानने लगी है, कि उसके ऊपर जानबूझकर आरोप लगाए, वह सत्यता पर आधारित नहीं थे। यदि होते तो न्यायालयों से उन्हें दंडित किया जाना चा हिए था। ईडी और सीबीआई को यूपीए की मनमोहन सरकार के समय तोता बताया गया था, लेकिन ईडी और सीबीआई की जांच एजेंसियां अभी जो काम कर रही हैं। उसमें वह कई महीनों और कई सालों तक चार्जशीट भी न्यायालयों में प्रस्तुत नहीं हो रही हैं। केवल विप क्षियों की जांच हो रही है। जिसके कारण भ्रष्टाचार की गारंटी को लेकर प्रधानमंत्री जिस तरह से अभी विपक्षियों को घेर रहे हैं। उसका असर अब मतदाताओं में वैसा होता नहीं दिख रहा है। जो 2014 और 2019 में दिखा था। कहावत है, जिन रास्तों पर चलकर सफलता मिलती है, वही रास्ते हमें असफलता की ओर ले जाते हैं। समय अपनी गति से आगे बढ़ता जाता है। लेकिन अपनी सफलता को उसी समय पर बांध कर रखना चाहते हैं। यह संभव नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 2024 का लोकसभा चुनाव जीतना है तो उन्हें भ्रष्टाचार के स्थान पर अब नए मुद्दे तलाश करने होंगे। भ्रष्टाचार का मुद्दा अब मतदाताओं को प्रभावित नहीं कर पा रहा है। हाल ही में भोपाल यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एनसीपी के नेताओं को 70000 करोड़ के घोटाले का भ्रष्टाचारी बताया था। उन्हीं को भाजपा ने महाराष्ट्र की सरकार में शामिल कर लिया है।

इसमें भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विश्वसनीयता मतदाताओं की नजरों में घटी है। प्रधानमंत्री ने जो आरोप विपक्षी दलों पर मध्यप्रदेश में लगाए थे। उसी तरह के आरोप उन्होंने छत्तीसगढ़ और तेलंगाना की राज्य सरकारों पर भी लगाए हैं।

जब से कंप्यूटर आया है, तब से बाहर जाकर खेलने की तो जैसे फुरसत ही नहीं मिलती तुम बच्चों को। पर क्या तुम जानते हो कि आउटडोर खेल तुम्हारे संपूर्ण विकास के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। क्या खेलोगे, किसके साथ और कब...यह सब आज हम तुम्हें बता रहे हैं।

# बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं आउटडोर खेल

घर के बाहर जाकर खेलने के काफी फायदे हैं। तुम अपने दोस्तों के और करीब आते हो, टीमवर्क समझ आता है और तुम खूब बढ़ते हो। आउटडोर खेल ऐसे नहीं होते जिन्हें सर्दी-गर्मी के हिसाब से खेला जाए। तुम किसी भी खेल को कभी भी खेल सकते हो। बैडमिंटन, फुटबॉल, क्रिकेट के अलावा कई पारंपरिक खेल भी खेल सकते हो।

## ट्रेजर आइलैंड

डोरेमॉन में तुमने इसका नाम सुना होगा। वहां जाकर नोबिता और उसके दोस्त मस्ती करते हैं। लेकिन हम जिस ट्रेजर आइलैंड की बात कर रहे हैं, उसे अलग-अलग जगहों पर कई तरह के नामों से जाना जाता है। इस गेम में दो टीम बनानी होती हैं। इसमें पहली टीम किसी भी चीज को खजाना बना कर छुपा देती है। फिर पहली टीम, दूसरी टीम के लिए क्लू बनाती है। उन क्लूज़ को फॉलो करते हुए उस खजाने तक पहुंचना होता है। इसमें तुम टाइमिंग भी शामिल कर सकते हो। जो भी टीम खजाने को ढूंढने में सफल हो जाती है, वह जीती हुई मानी जाती है।

## छुपन-छुपाई

यह खेल सबसे पुराना है। तुम्हारे मम्मी-पापा ने भी इसे बचपन में जरूर खेला होगा। इसमें खूब सारे बच्चे एक साथ इकट्ठे होते हैं। एक बच्चे को डेन चुना जाता है। डेन चुनने के लिए तुम अक्कड़-बक्कड़ का सहारा ले सकते हो। फिर बाकी बचे सभी बच्चे अलग-अलग जगहों पर छुप जाते हैं और डेन उन्हें ढूंढता है। जिस बच्चे को वह सबसे पहले ढूंढ लेता है, अगली बार उसे ही डेन बनना होता है। लेकिन एक को ढूंढने से ही काम नहीं चलता। उसे सभी को ढूंढना होता है। अगर कोई छुपा बच्चा पीछे से जाकर उसे धप्पा कर दे तो डेन को फिर दोबारा डेन बनना होता है।

## स्टापू

इस खेल में जमीन में चौकोर बॉक्सेज डिजाइन कर दिए जाते हैं। फिर इनमें एक से दस तक गिनती लिखी जाती है। हर बच्चा एक-एक करके दस खानों में स्टापू फेंकता है। लंगड़ी करते हुए उस पत्थर तक पहुंचना होता है और उसे पैर से खिसकाते हुए वापस लाना होता है। इस गेम से ब्रीदिंग प्रैक्टिस होती है और हमारे पैर बेहद मजबूत होते हैं।

## स्पाइंग गेम्स

ये चोर-पुलिस की तरह का गेम होता है। इसमें दो टीम होती हैं। एक टीम चोर बनती है तो दूसरी पुलिस। पुलिस वाली टीम चोर वाली टीम को खोज कर उसे कैद करती है।

## क्रिकेट

इसका जन्म इंग्लैंड में हुआ था। क्रिकेट के पहले क्लब की स्थापना 1787 में हुई थी और पहला टैस्ट मैच 1877 में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच मेलबर्न में खेला गया था। शुरुआत में क्रिकेट में टैस्ट मैच ही खेला जाता था, वनडे मैच की शुरुआत 1971 में हुई। पहला वनडे मैच भी इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच ही खेला गया था। तुमने आईसीसी का नाम तो जरूर सुना होगा। आईसीसी का पूरा नाम इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल है। जितने भी अंतरराष्ट्रीय मैच होते हैं, सभी की रूपरेखा आईसीसी निर्धारित करती है और वर्ल्ड कप का आयोजन करती है। अब तक क्रिकेट का वर्ल्ड कप सबसे ज्यादा पांच बार ऑस्ट्रेलिया ने जीता है, वहीं भारत दो बार विश्व विजेता बना है।

## हॉकी

हमारे देश भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है। ब्लैकहीथ एबी एंड क्लब को हॉकी का पहला संगठित क्लब माना जाता है। इसकी स्थापना 1861 में हुई थी। हॉकी का पहला इंटरनेशनल मैच 1895 में वेल्स और इंग्लैंड के बीच खेला गया था और पहला वर्ल्ड कप 1971 में पाकिस्तान और स्पेन के बीच खेला गया था, जिसमें पाकिस्तान ने खिताब अपने नाम किया था। जानते हो, ओलंपिक में सबसे ज्यादा आठ बार भारत ने हॉकी का मैच जीता है।

## फुटबॉल

तुममें से काफी बच्चों को फुटबॉल खेलना पसंद होगा। जानते हो इस खेल का जन्मदाता भी इंग्लैंड ही है। भारत में अंग्रेज इस खेल को लाए और यहां के लोगों को खेलना सिखाया। फुटबॉल का पहला क्लब 1857 में स्थापित किया गया। इसका नाम शेफील्ड फुटबॉल क्लब था। फुटबॉल की सर्वोच्च संस्था फीफा है। फुटबॉल का पहला वर्ल्ड कप वर्ष 1930 में उरुग्वे और अर्जेंटीना के बीच खेला गया था, जिसमें उरुग्वे विजेता घोषित किया गया।

## टेबल टेनिस

इस खेल का जन्म भी इंग्लैंड में ही हुआ था। वर्ष 1926 में इंटरनेशनल टेबल टेनिस एसोसिएशन की स्थापना हुई।

इसका पहला वर्ल्ड चैंपियनशिप मैच 1927 में खेला गया।

## वॉलीबॉल

वॉलीबॉल का जन्मदाता यूएसए है। 1895 में इसकी शुरुआत हुई। वॉलीबॉल की प्रमुख संस्था इंटरनेशनल वॉलीबॉल फेडरेशन की स्थापना 1948 में हुई और पहला वर्ल्ड कप 1949 में हुआ। तो तुम भी खेलो इसे दोस्तों के साथ।

## बास्केटबॉल

इस खेल का जन्म अमेरिका में हुआ था। 1891 में जेम्स नेस्मिथ नामक अमेरिकी ने इसे खेलना शुरू किया। पहला मैच 1930 में खेला गया। बास्केटबॉल की सर्वोच्च संस्था फेडरेशन इंटरनेशनल डे बॉस्केटबॉल एसोसिएशन 1932 में बनी।

## पिट्ठू

इस खेल में भी दो टीमें होती हैं। एक टीम पत्थरों से बने पिरामिड को बॉल से तोड़ती है और फिर से उस पिरामिड को बनाने की कोशिश करती है, जबकि दूसरी टीम पिरामिड बनाने वाली टीम के सदस्य को बॉल मार कर आउट करने की कोशिश करती है।

## बैडमिंटन

ऐसा माना जाता है कि बैडमिंटन की शुरुआत भी इंग्लैंड में हुई। इसकी प्रमुख संस्था इंटरनेशनल बैडमिंटन फेडरेशन का गठन 1934 में किया गया।

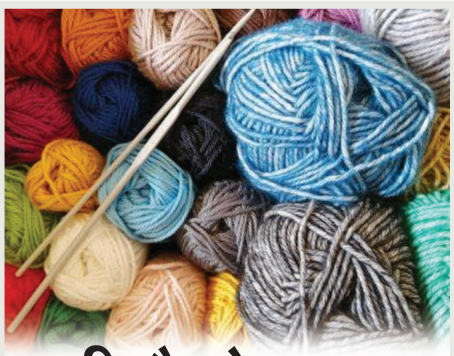

# बनी कैसे ऊन?

दोस्तों, क्या तुमने कभी यह सोचा है कि जिस ऊन का स्वेटर पहन हम सर्दी से बचते हैं, वह बनी कैसे? जरूर वो इंसान बहुत ही बुद्धिमान होगा, जिसने भेड़ को देखकर उससे ऊन बनाने के प्रयोग करने के बारे में सोचा होगा। यह माना जाता है कि बुनने के लिए ऊन का ही सर्वप्रथम उपयोग प्रारंभ हुआ। ऊनी वस्त्रों के टुकड़े मिस्त्र बैबिलोन की कब्रों, पुरातन ब्रिटेन निवासियों के झोपड़ों के साथ मिले हैं। रोमन आक्रमण से पहले भी ब्रिटेन वासी इनका उपयोग करते थे। विंचेस्टर फैक्टरी ने ऊन का तरह-तरह से इस्तेमाल करना शुरू किया। इसके बाद इसका इंग्लैंड में खूब प्रयोग किया जाने लगा। हेनरी द्वितीय ने कानून, वस्त्रहाट और बुनकारी संघ बनाकर इस उद्योग को प्रोत्साहित किया। सन् 1788 में हार्टफोर्ड (अमेरिका) में जल-शक्ति-चालित ऊन फैक्टरी आरंभ हुई। ऊन सफेद, काले और भूरे रंग में ही मिलती है। पालतू भेड़ों की ऊन सफेद रंग की होती है। रंगीन ऊन सबसे अधिक पुरानी नस्ल की उन भेड़ों से मिली है, जो कालीन बुनने लायक मोटे किस्म की ऊन पैदा करती हैं।

## ये होंगे फायदे

आउटडोर गेम्स से हमें कई नए दोस्त मिलते हैं, जो हमारे घर के आसपास रहते हैं और जिनसे स्कूल आने-जाने, होमवर्क और इनडोर गेम्स में बिजी रहने की वजह से हम मिल नहीं पाते। इसके अलावा, बाहर निकल कर खेलने से पढ़ाई और आसपास की तमाम दूसरी चीजों के बारे में सीख सकते हो। सबसे बड़ा फायदा तो यह है कि आउटडोर गेम्स से तुम्हारा शरीर चुस्त रहेगा, भूख ज्यादा लगेगी और तुम बीमार भी नहीं पड़ोगे। इन गेम्स में कई ऐसे गेम्स भी हैं, जिनमें एक्सपर्ट होने पर तुम उस गेम की डिस्ट्रिक्ट, स्टेट और नेशनल टीम में चुने जा सकते हो, जैसे बैडमिंटन, कबड्डी, खो-खो, बास्केटबॉल। आउटडोर गेम्स से एक बेहतर कॅरियर भी मिल सकता है।

# नीदरलैंड में है दुनिया का पहला माइक्रोब जू

नीदरलैंड की राजधानी एम्सटर्डम में दुनिया का पहला माइक्रोब जू यानी सूक्ष्म जीव 'वाटिका' खुला है। माइक्रोपिया नामक इस जीव-जंतु वाटिका को शहर के उस जंतु पार्क 'आर्टिस' में खोला गया है जिसकी स्थापना 176 साल पहले हुई थी। यह दुनिया की सबसे पुरानी जीव-जंतु वाटिकाओं में से एक है।

140 वर्ष पुरानी इमारत में रखा एक खूबसूरत भूरे रंग का बक्सा बैक्टीरिया, फंगस, काई तथा अन्य एक कोशिका वाले जीवों का आवास है। ये वे जीव हैं जिन्हें नंगी आंखों से देखा नहीं जा सकता परंतु धरती पर जीवन इनसे ही संभव है। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि सूक्ष्म जीवों में से केवल 1 प्रतिशत के बारे में ही आज तक इंसान जान सका है। कई लोगों के लिए सूक्ष्म जीव नफरत व भय की भावनाएं पैदा करते हैं। दरअसल, यह डर उस चीज से है जिसके बारे में उन्हें ज्यादा जानकारी नहीं है और लोगों के मन से सूक्ष्म जीवों के बारे में इसी डर को दूर करना इस जीव-जंतु वाटिका का पहला मकसद है। हेग कहते हैं कि यदि हम प्रकृति को जानना चाहते हैं तो हमें सूक्ष्म जीवों को भी जानना होगा। वैज्ञानिकों के अनुसार इंसान इन सूक्ष्म जीवों से बेशक नफरत करता हो लेकिन हर इंसान का शरीर अरबों सूक्ष्म जीवों का घर होता है। केवल इंसानों की एड़ी में ही 80 प्रकार के अलग-अलग सूक्ष्म जीव पाए जाते हैं। इस बात की पुष्टि के लिए यहां आने वाला हर व्यक्ति अपने शरीर का बॉडी स्कैन करवा कर देख सकता है।

चाहें तो यहां एक अन्य दिलचस्प तरीका भी है। एक जगह फर्श पर लाल रंग का दिल बना है। जैसे ही यहां खड़े होकर कोई जोड़ा एक-दूसरे का चुम्बन लेता है, करीब लगे 'किस' मीटर की स्क्रीन पर नम्बर बढ़ते जाते हैं, जब तक कि मीटर में से संदेश न आने लगे कि 'आप दोनों ने अभी 10 लाख सूक्ष्म जीवों का आदान-प्रदान किया है।' माइक्रोपिया में दिखाया जाता है कि सूक्ष्म जीव कैसे जीते हैं, कैसे भोजन करते हैं और कैसे प्रजनन करते हैं? बैक्टीरिया इतने छोटे होते हैं कि एक सूई की नोक पर 10 लाख बैक्टीरिया आराम से समा सकते हैं। डच विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञानी इन धारणाओं पर 12 साल से अधिक वक्त से माथापच्ची कर रहे हैं।

यहां उन सूक्ष्म जीवों को प्रदर्शित किया गया है जो कृत्रिम वातावरण में भी जीवित रह सकते हैं। खतरनाक बीमारियां फैलाने वाले एड्स वायरस जैसे सूक्ष्म जीवों को केवल मॉडल के रूप में प्रदर्शित किया गया है। सूक्ष्म जीवों को देखने के लिए यहां माइक्रोस्कोप के लैंस के साथ जोड़ा गया एक थ्री डी टैलीस्कोप है, जो नंगी आंखों से न दिखने वाले सूक्ष्म जीवों को हजार गुणा बड़ा करके दिखाता है।

# इनका रखो ध्यान

- आउटडोर गेम्स के साथ इतनी सारी अच्छी बातें जुड़ी हैं, लेकिन फिर भी कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। इन बातों का ख्याल रखने पर ही आउटडोर गेम्स खेल कर भी तुम पढ़ाई को और परिवार को पूरा टाइम दे सकते हो।
- सबसे पहले तो खेलने के लिए ऐसी जगह चुनो, जो घर के आसपास हो, यानी जहां से घर वाले तुम्हें आवाज देकर बुला सकें। अगर आसपास खेलने की जगह नहीं है तो अपने पड़ोस के दोस्तों के साथ करीब की किसी जगह पर खेलने जा सकते हो, लेकिन रोज नहीं। और इस जगह के बारे में घर वालों को पता भी होना चाहिए।
- ऐसे दोस्तों के साथ खेलना शुरू करो, जिन्हें तुम पहचानते हो या जो तुम्हारे ही जैसे हों। बाहर खेलने का यह मतलब नहीं है कि तुम इनडोर गेम्स को पूरी तरह गुडबाय कह दो, क्योंकि एक तो इनसे भी तुम्हें काफी कुछ सीखने को मिलता है, दूसरे आउटडोर गेम्स रोज नहीं खेले जा सकते।
- ज्यादातर ऐसे गेम्स के लिए टीम की जरूरत पडम्ती है और कभी-कभी दोस्तों का बाहर आकर खेलने का मन नहीं होता। अगर इन सारी बातों का ध्यान रखोगे तो तुम्हें आडटडोर गेम्स के बहाने एक नई दुनिया देखने को मिलेगी। नए दोस्त बनेंगे, फिजिकल फिटनेस रहेगी और कई सारी नई बातें भी सीख सकोगे। तो फिर देर किस बात की है, तुम अपने आसपास के दोस्तों के साथ मिल कर गेम प्लान करो और खेलने के लिए तैयार हो जाओ।

## आरबीआई फिनटेक कंपनियों के लिए रेगुलेशन लाएगाः टी रवि शंकर

**नई दिल्ली ।** भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई ) के डिप्टी गवर्नर टी रवि शंकर ने कहा कि केंद्रीय बैंक वित्तीय-प्रौद्योगिकी कंपनियों के लिए नियमन लाने पर विचार कर रहा है। एक कार्यक्रम में शंकर ने कहा` कि आरबीआई वित्तीय-प्रौद्योगिकी क्षेत्र के बदलते माहौल को बारीकी से देख रहा है। इस संबंध में अभी कोई नियमन नहीं है। हम उद्योग जगत से बात कर रहे हैं और समझ रहे हैं कि क्या उन्हें नियमन में लाने की जरूरत है। शंकर ने कहा कि वित्तीय-प्रौद्योगिकी कंपनियों को लेकर नियमन उद्योग से विमर्श करने के बाद ही आएंगे। कार्यक्रम आयोजकों के बयान के अनुसार उन्होंने इस संबंध में कोई निश्चित समय बताने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि आरबीआई अपने नियमों को ऐसे तय करेगा कि उद्योग को बढ़ने का मौका मिले। उन्होंने कहा कि युवा नवप्रवर्तकों का ध्यान नवोन्मेष पर है, फिलहाल नियमों पर इतना नहीं है। शंकर ने यह भी कहा कि लोगों द्वारा किया जाने वाला क्रिप्टोकरेंसी में व्यापार आरबीआई के लिए चिंता का विषय नहीं है लेकिन निजी क्रिप्टोकरेंसी स्वयं एक समस्या वाला क्षेत्र है।

## स्काई एयर और हिमाचल प्रदेश ने ड्रोन यातायात प्रबंधन के लिए किया समझौता

**नई दिल्ली ।** ड्रोन सेवा प्रदाता स्काई एयर ने हिमाचल प्रदेश में मानव-रहित यातायात प्रबंधन (यूटीएम) प्रणाली लागू करने के लिए राज्य सरकार के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किये हैं। एमओयू के तहत राज्य सरकार कंपनी को परियोजना संचालन के लिए सहायता, आंकड़ा और सूचना प्रदान करेगी। साथ ही ड्रोन उड़ान संचालन पर नजर रखने तथा कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए मानव रहित यातायात प्रबंधन प्रणाली के साथ राज्य के स्वामित्व वाले ड्रोन का समन्वय सुनिश्चित करेगी। स्काई एयर ने कहा` कि हिमाचल प्रदेश सरकार के साथ यह साझेदारी एक मजबूत और सुरक्षित ड्रोन परिवेश विकसित करने के हमारे दृष्टिकोण के अनुरूप है। स्काई यूटीएम प्रणाली मनोरंजन के साथ-साथ माल परिवहन से लेकर कृषि और निगरानी तक की पेशेवर सेवाओं में ड्रोन संचालन में सहयोग करेगी।

## व्यापार सुविधा मामलों में भारत ने दक्षिण एशियाई क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन कियाः यूएनईएससीएपी

**नई दिल्ली ।** एशिया प्रशांत संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग (यूएनईएससीएपी) ने कहा है कि व्यापार सुविधा के मामले में भारत अब दक्षिण-एशियाई क्षेत्र में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाला देश है। यूएनईएससीएपी के डिजिटल और सतत व्यापार सुविधा पर नवीनतम वैश्विक सर्वेक्षण के अनुसार, साल 2021 की तुलना में भारत ने अपनी स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया है।इस वर्ष के सर्वेक्षण में 140 से अधिक अर्थव्यवस्थाओं को शामिल किया गया है और 60 व्यापार सुविधा उपायों का मूल्यांकन किया गया है। इस सर्वेक्षण में 2021 में 90.32 प्रतिशत के स्कोर की तुलना में 2023 में 93.55 प्रतिशत के बेहतर अंक के साथ भारत को वैश्विक व्यापार सुविधा प्रयासों में सबसे आगे रखा गया है। हालिया सर्वेक्षण में विभिन्न उप संकेतकों में भारत की असाधारण प्रगति को स्वीकार किया गया है। इसके अनुसार भारत ने चार प्रमुख क्षेत्रों- पारदर्शिता, औपचारिकताएं, संस्थागत व्यवस्था एवं सहयोग तथा कागज रहित व्यापार में 100 प्रतिशत का अंक हासिल किया है। ये उल्लेखनीय अंक व्यापार प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने, पारदर्शिता बढ़ाने और व्यापार की सुविधा के लिए एकल खिड़की व्यवस्था (स्विफ्ट), प्री-अराइवल डेटा प्रोसेसिंग, समन्वित सीमा प्रबंधन जैसे उपायों के माध्यम से संबंधित पक्षों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में भारत के अथक प्रयासों का प्रमाण हैं।

# विनिर्माण गुणवत्ता, पर्यावरण अनुकूल उत्पादों पर नजर रखे प्लास्टिक उद्योग : गोयल

**मुंबई ।**

वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने प्लास्टिक उद्योग से वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनने और निर्यात में तेजी लाने के लिए नई प्रौद्योगिकी तथा नवोन्मेष के साथ गुणवत्तापूर्ण एवं टिकाऊ उत्पादों के विनिर्माण पर ध्यान देने के` लिए कहा। मंत्री ने ऑल इंडिया प्लाईवुड मेन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एआईपीएमए) द्वारा आयोजित प्लास्टिक उद्योग के विकास के लिए प्रौद्योगिकी सम्मेलन में कहा` कि हम निम्न-मानक और गुणवत्ता वाली एवं सस्ती वस्तुओं के उत्पादन या खपत को रोकने के लिए गुणवत्ता जांच और गुणवत्ता नियंत्रण शुरू कर रहे हैं। ये उत्पाद हमारे उपभोक्ताओं के हितों को नुकसान पहुंचाने के साथ हमारे देश की प्रतिष्ठा और छवि को हानि पहुंचाते हैं। गोयल ने कहा कि सरकार इस उद्योग की क्षमता और समस्याओं को लेकर बहुत संवेदनशील है। प्लास्टिक कचरे के पुनर्चक्रण या प्लास्टिक के कच्चे माल के पुन- उपयोग को बढ़ावा कैसे दे सकते हैं। हम प्लास्टिक को अधिक प्रभावी और कुशल तरीके से नष्ट होने वाला कैसे बना सकते हैं। पुनर्चक्रण की वैश्विक औसत दर

केवल नौ प्रतिशत है और कई विकसित देशों में तो यह सिर्फ चार प्रतिशत ही है। इसमें भारत ने बाजी मार ली है, क्योंकि हमारा 13 फीसदी प्लास्टिक पुनर्चक्रित किया जा रहा है। हम चाहेंगे कि निकट भविष्य में इसमें तेजी से वृद्धि हो। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए प्लास्टिक उद्योग को नए विचारों, नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाने, अनुसंधान और विकास के लिए संबंधित पक्षों से सहयोग के साथ-साथ उभरते समय एवं इस दुनिया की जरूरतों के साथ खुद को ढालना जरूरी है।

## सुजलान एनर्जी जुटाएगी 2,000 करोड़

**मुंबई ।** सुजलॉन एनर्जी ने कहा कि उसके बोर्ड ने कंपनी के धन एक त्रित करने की योजना को हरी झंडी दे दी है। कंपनी के बोर्ड ने 2,000 करोड़ रुपए तक धन जुटाने के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया है। शेयर बाजार को दी गई सूचना के मुताबिक कंपनी रकम जुटाने के लिए विभिन्न वित्तीय रास्ते तलाशेगी। बोर्ड ने इतनी संख्या में पूरी तरह से भुगतान किए गए इक्विटी शेयर और परिवर्तनीय बॉन्ड या गैर-परिवर्तनीय ऋण उपकरण या किसी भी अन्य उपकरण या उपकरणों के संयोजन को डिटैचेबल वारंट के साथ या बिना अधिकार के साथ जारी करने को मंजूरी दे दी है। सुजलान एनर्जी ने एक्सचेंज फाइलिंग में कहा कि वारंट धारकों को इक्विटी शेयरों को परिवर्तित करने या सदस्यता लेने के लिए या अन्य किसी रूप से इस्तेमाल करने का अधिकार होगा। हालांकि इसका मूल्य एक या अधिक किश्तों में 2,000 करोड़ रुपए से अधिक नहीं होना चाहिए।

## भारतीय रुपए में कारोबार करेगा पड़ोसी देश? दो बैंकों ने की घोषणा

नई दिल्ली । बांग्लादेश के दो बैंक अब भारत के साथ कारोबार भारतीय रुपए में ही करने की योजना बना रहे हैं। ईस्टर्न बैंक और सोनाली बैंक ने ऐसा करने की घोषणा की है। ईस्टर्न बैंक इस संबंध में 11 जुलाई को घोषणा कर सकता है। यह कदम ऐसे मौके पर उठाया गया है जब बांग्लादेश के विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट देखने को मिल रही है। ये बैंक डॉलर पर निर्भरता को कम करने के लिए भारतीय रुपए के इस्तेमाल की योजना बना रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार ईस्टर्न बैंक 11 जुलाई को इसकी घोषणा कर देगा। यह बैंक एसबीआई और आईसीआईसीआई के साथ पहले ही रुपया खाता खोल चुका है। बांग्लादेश के सरकारी बैंक सोनाली बैंक ने भी इसी तरह का कदम उठाया है। गौरतलब है कि दुनियाभर में डॉलर की बजाय स्थानीय करेंसी को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि वित्तीय संकट के समय विदेशी मुद्रा भंडार बचान में मदद मिल सके। ईस्टर्न बैंक के एमडी ने रुपए में कारोबार के फायदों के बारे में कुछ अन्य बातें भी कही हैं। ईस्टर्न बैंक के एक व रिष्ठ अ धिकारी ने बताया कि दोनों देशों के बीच व्यापार के लिए भारतीय रुपए का इस्तेमाल सुविधाजनक और तुलनात्मक रूप से सस्ता लेनदेन मार्ग उपलब्ध कराता है। उन्होंने कहा कि इससे क्सचेंज कॉस्ट और व्यापार करने की लागत में गिरावट आएगी। उनका मानना है कि एक्सचेंज रेट के कारण कारोबारियों को लेनदेन के समय होने वाला नुकसान इसकी वजह से कम हो जाएगा।

# सेबी ने एफएमआरसी पर लगाया 1 करोड़ का जुर्माना

### - एफपीआई नियमों का उल्लंघन करने का मामला

**नई दिल्ली ।**

बाजार नियामक सेबी ने एक आदेश में एफपीआई नियमों का उल्लंघन करने के लिए फिडेलिटी मैनेजमेंट एंड रिसर्च कंपनी (एफएमआरसी) पर 1 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया है। एफएमआरसी को एक साल और छह महीने तक आवश्यक पंजीकरण के बिना एक विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक एफपीआई के रूप में काम करते पाया गया। एक अलग आदेश में, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने एफपीआई रेगुलेशन, 2019 के तहत धाराओं का उल्लंघन करते हुए जेपी मॉर्गन चेस बैंक पर 22.1 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। सेबी के नियमों के अनुसार, केवल पंजीकृत फॉरेन पोर्टफोलियो निवेशकों को ही शेयर बाजार में भाग लेने की अनुमति है। इसके अलावा, नियम में यह भी कहा गया है कि अगर एफपीआई निवेशकों के ओनरशिप में कोई भी बदलाव होता है, तो एफपीआई की योग्यता का एक बार फिर से मूल्यांकन किया जाएगा। अगस्त 2021 में डेजिग्नेटेड डिपॉजिटरी पार्टिसिपेंट (डीडीपी) जेपीएमसी ने सेबी को फिडेलिटी इन्वेस्टमेंट्स मनी मैनेजमेंट (एफआईएमएम) की मटेरियल इन्फॉर्मेशन में बदलाव की सूचना में देरी के बारे में सूचित किया। एफआईएमएम) को एक एफपीआई के रूप में पंजीकृत किया गया था और मटेरियल इन्फॉर्मेशन में इसकी सहयोगी फिडेलिटी मैनेजमेंट एंड रिसर्च कंपनी (एफएमआरसी) के साथ इसका मर्जर शामिल था। इसके बाद सेबी ने मटेरियल इन्फॉर्मेशन में बदलाव की सूचना में देरी को लेकर जांच शुरू की। सेबी को जांच से पता चला कि एफएमआरसी के साथ एफआईएमएम के मर्जर से एफआईएमएम बंद हो गया, जो

कि एक यूनिट एफपीआई के रूप में पंजीकृत थी। हालांकि, विलय के बाद, सर्वांइविंग एंटिटी एफएमआरसी जिसने एफपीआई रजिस्ट्रेशन प्राप्त नहीं किया था, एफआईएमएम के नाम, खातों और एफपीआई पंजीकरण के तहत सिक्योरिटी मार्केट में काम कर रही थी।

सेबी द्वारा एफएमआरसी के खिलाफ न्यायिक कार्यवाही शुरू करने के बाद, एफएमआरसी को एक कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था, जिसमें एफएमआरसी से पूछा गया था कि उसके खिलाफ जांच क्यों नहीं की जानी चाहिए और उस पर जुर्माना क्यों नहीं लगाया जाना चाहिए। एफएमआरसी ने सेबी को बताया कि उसका मानना है कि विलय के परिणामस्वरूप केवल नाम परिवर्तन हुआ है, कोई मटेरियल परिवर्तन नहीं हुआ है उन्होंने आगे कहा कि जब उन्होंने अपने डीडीपी के साथ अपने मर्जर के दस्तावेज साझा किए, तो उनके डीडीपी ने उन्हें स्पष्ट रूप से सूचित नहीं किया कि एफआईएमएम का एफएमआरसी में मर्जर एक महत्वपूर्ण मटेरियल परिवर्तन है।

# 3जी एक्का ने तैयार किया न्यू कैटेलिटिक सुपर 5 जी एक्का -

### -हार्ड वाटर को सॉफ्ट वाटर में बदल कर देगा कई घरेलू, कृषि और औद्योगिक लाभ -

**इन्दौर ।** आधुनिक जीवनशैली में पानी की गुणवत्ता को लेकर हमेशा सवाल खड़े किए जाते रहे हैं और इससे संबंधित उत्पादों का महत्व भी बढ़ा है। इसी कड़ी में 3 जी एक्का वाटर ट्रीटमेंट टेक्नोलॉजी ने लॉन्च किया है न्यू कैटेलिटिक सुपर 5 जी एक्का। यह प्रोडक्ट हार्ड वाटर को सॉफ्ट वाटर में बदलने के लिए ट्रिपल फॉर्मूलेशन का उपयोग करता है जो बिना किसी मेंटेनेंस के तीन गुना क्षमता के साथ काम करता है। 3जी एक्का के डायरेक्टर शलभ नामदेव ने कहा -न्यू कैटेलिटिक सुपर 5 जी एक्का, ताकतवर और प्रभावी प्रोडक्ट है, जिसमें नोबल और सेमी-नोबल धातुओं के साथ हेवी सुपर मेटल्स का उपयोग किया गया है। इसकी परफॉरमेंस ट्रिपल स्पीड के साथ बढ़ती है और उच्च उत्पाद गुणवत्ता को सुनिश्चित करती है। साथ ही साथ यह बिना मेंटेनेंस के 10 साल की गारंटी के साथ उपलब्ध है।

यह टंकी के आउटलेट के पाइप डायमीटर में फिट हो जाता है एवं कोई भी साधारण प्लंबर इसको 10 मिनट में इंस्टाल कर सकते हैं। हम नासा द्वारा वैज्ञानिक मान्यता प्राप्त ऑक्सीडाइजेशन रिडक्शन टेक्नोलॉजी से इसका उत्पादन कर रहे हैं। पिछले 18 सालों में 3जी एक्का लाखों डिवाइस भारत और दुनिया के कई देशों में इंस्टॉल कर चुकी है जो सुचारू रूप से काम कर रही है। नामदेव आगे कहते हैं 'न्यू कैटेलिटिक सुपर 5 जी एक्का एक एंटी-स्केलिंग प्रोडक्ट है।

मल्टीपल एप्लिकेशन के लिए सुपर 5 जी एक्का प्रोडक्ट स्केलिंग या खार और क्षार को किसी भी घरेलू, कृषि और औद्योगिक उपकरणों पर जमने नहीं देता जो मशीन की उत्पादकता एवं उम्र को लम्बी करता है।

**घरेलू लाभ** - 5 जी एक्का ने नई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करते हुए अपने प्रोडक्ट को इस तरह से तैयार किया गया है कि यह घरेलू लाभ पहुंचाएगा, बालों का झड़ना कम करेगा, त्वचा को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाएगा। यह टेक्नोलॉजी पुरानी स्केलिंग हटाती है जिससे टाइल्स, वॉशबेसिन, गिज़र और महत्वपूर्ण प्लंबिंग उपकरणों पर स्केलिंग और खार से बचाता है। यह हार्ड वाटर को सॉफ्ट में बदलने का कारगर उपाय है।

**कृषि लाभ** - कृषि क्षेत्र में न्यू कैटेलिटिक सुपर 5 जी एक्का मिट्टी को मुलायम करते हुए नमी की मात्रा बढ़ाता है जिससे अंकुरण अच्छा होगा और फसलों की वृद्धि 45 से 55 प्रतिशत तक बढ़ेगी। स्प्रिंकलर से पानी सींचते हुए खार के कारण लाइन ब्लॉक नहीं होगी और पत्तों की जलने की समस्या पर नियंत्रण होगा।

**औद्योगिक लाभ** -औद्योगिक क्षेत्र में, न्यू कैटेलिटिक सुपर 5 जी एक्का बॉयलर और मशीनरी की क्षमता को हार्ड वाटर से नकारात्मक रूप से प्रभावित होने से बचाएगा और पार्ट्स को खराब होने से रोकेगा। इसके साथ ही, यह कैल्शियम और मैग्नीशियम की उपस्थिति से होने वाले हार्ड डिपॉजिट्स को कम करता है और मशीनरी के अंदर हीट ट्रांसफॉर्मेशन पर सक्रिय प्रभाव डालता है।

## आईओसी राइट इश्यू के जरिये जुटाएगी 2,000 करोड़

**नई दिल्ली ।** देश की प्रमुख तेल कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी) ने राइट इश्यू के माध्यम से 22,000 करोड़ रुपए जुटाने की योजना बनाई है। आईओसी ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि उसने पूंजी जुटाने की योजना शुद्ध रूप से शून्य कार्बन उत्सर्जन परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के तीन खुदरा ईंधन विक्रेताओं में पूंजी निवेश की सरकार की योजना के तहत बनाई है। आईओसी ने बताया कि उसके निदेशक मंडल ने राइट्स इश्यू आधार पर इक्विटी शेयर जारी कर अधिकतम 22,000 करोड़ रुपए तक जुटाने को मंजूरी दे दी है। यह अन्य जरूरी मंजूरी पर निर्भर है। कंपनी में बहुलांश हिस्सेदारी रखने वाली सरकार के राइट इश्यू लेने और कंपनी में इक्विटी डालने की संभावना है। इससे पहले भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) के निदेशक मंडल ने 28 जून को राइट इश्यू के माध्यम से 18,000 करोड़ रुपए जुटाने को मंजूरी दी थी।



# IIFD द्वारा आयोजित अरासा प्रदर्शनी का भव्य उद्घाटन

**सूरत भूमि, सूरत।**

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन डिजाइनिंग (IIFD) ने शनिवार से सूरत में इंटीरियर प्रदर्शनी अरासा का आयोजन किया है। जिसका उद्घाटन भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता छोटू भाई पाटिल और विनोद अग्रवाल ने किया।

इस प्रदर्शनी में IIFD के प्रथम और द्वितीय वर्ष के 75 छात्रों ने बीच साइड ब्लिस, शेप इस्केप, वर्ली आर्ट, वाबी सबी जैसे विभिन्न दस थीम पर इंटीरियर डिजाइन किया है और उन्हें प्रदर्शन पर रखा गया है। साथ ही गाबा फैशन के तहत फैशन डिजाइनिंग के 150 छात्रों द्वारा डिजाइन किए गए आउटफिट भी प्रदर्शनी में रखे गए हैं। इसके अलावा प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को प्रशिक्षित कर उनके द्वारा तैयार इंटीरियर और आउटफिट के शो पीस भी प्रदर्शन हेतु रखे गए हैं।

प्रदर्शनी में आगंतुक इंटीरियर आइटम और आउट- फिट भी देखने के साथ ही खरीदी भी कर सकेंगे। प्रदर्शनी के निर्णायक के रूप में प्रसिद्ध आर्किटेक्ट संजय पंजाबी, अहमदाबाद से पधारी आर्किटेक्ट हिमानी गौर और प्रसिद्ध इंटीरियर डिजाइनर मोनिका भट्ट उपस्थित थे। संस्थान की ओर से रविवार को सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार समारोह का आयोजन किया जाएगा। प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर IIFD के संस्थापक निदेशक मुकेश माहेश्वरी और सह- संस्थापक पल्लवी माहेश्वरी विशेष रूप से उपस्थित रहे और छात्रों का उत्साह बढ़ाया।

## इफको का "इफको किसान ड्रोन" के माध्यम से कृषि-ड्रोन क्षेत्र में प्रवेश

**सूरत ।** इफको ने माननीय प्रधानमंत्री के 'सहकार से समृद्धि' के ध्येय से प्रेरित होकर अपने क्रांतिकारी उत्पादों नैनो यूरिया और नैनो डीएपी के आसान उपयोग हेतु स्प्रे समाधान के रूप में 2500 "इफको किसान ड्रोन" खरीदने के लिए एक भव्य राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है। इससे 5000 ग्रामीण उद्यमियों का विकास होगा, जिनकी पहचान इफको द्वारा ड्रोन छिड़काव हेतु प्रशिक्षित करने के लिए की गई है। माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के दूरदर्शी नेतृत्व में यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान हेतु और सतत कृषि एवं समग्र सहकारी विकास की दिशा में बड़ा कदम है।

तकनीकी क्षमताओं, विनिर्माण क्षमता, विनिर्माण प्रक्रिया, गुणवत्ता प्रक्रियाओं, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, बुनियादी ढांचे तक पहुंचने के लिए इफको प्रबंधन प्रतिष्ठित सलाहकार, मैसर्स ड्रोन फेडरेशन ऑफ इंडिया, नई दिल्ली की सेवाएँ ले रहा है। मैसर्स ड्रोन फेडरेशन ऑफ इंडिया ने विशिष्टताओं का मूल्यांकन किया और बताया किया कि नैनो उर्वरकों के स्प्रे हेतु इफको द्वारा खरीदे जा रहे कृषि ड्रोन की तकनीकी विशिष्टताएं उद्योग मानकों के अनुसार हैं। अनुमान है कि एक ड्रोन बैकअप के साथ प्रति दिन 20 एकड़ क्षेत्र में इफको नैनो उर्वरक, जल विलेय उर्वरक, सागरिका जैसे जैव-उत्तेजक, कृषि-रसायन आदि का छिड़काव करने में सक्षम होगा।

इफको नैनो उर्वरकों और संबंधित उपयोगिताओं के साथ ड्रोन को किसानों के खेत तक ले जाने के लिए एल-5 श्रेणी के 2500 इलेक्ट्रिक थ्री व्हीलर (लोडर) भी खरीदेगा। ये थ्री व्हीलर इलेक्ट्रिक वाहन पर्यावरण हितैषी हैं। यह रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम करने और योजना के तहत राज्यों को अधिक सक्षम बनाकर पीएम प्रणाम योजना का भी समर्थन करेगा।

इसके अतिरिक्त, इस राष्ट्रव्यापी अभियान को मजबूत करने के लिए, इफको ने नैनो उर्वरकों के पर्णीय छिड़काव हेतु ट्रैक्टर माउंटेड बूम स्प्रेयर, ट्रैक्टर माउंटेड होज़ रील स्प्रेयर, गन वाले एचटीपी पावर स्प्रेयर, स्टेटिक/पोर्टेबल स्प्रेयर, नियो स्प्रेयर का भी ऑर्डर दिया है। कृषि स्प्रेयर और ड्रोन द्वारा विभिन्न फसलों पर नैनो उर्वरकों का उपयोग पर्णीय छिड़काव कर किया जाता है। ड्रोन और स्प्रेयर का उपयोग किसी भी प्रकार के छिड़काव के लिए किया जा सकता है।

## भगवान महावीर कैंपस में तीन दिवसीय करियर एक्सपो में 900 विद्यार्थियों को ऑफर लेटर दिए गए

**सूरत।**

भगवान महावीर एजुकेशन फाउंडेशन, भगवान महावीर विश्वविद्यालय और रोजगार विनिमय कार्यालय, सूरत द्वारा आयोजित तीन दिवसीय "कैरियर एक्सपो-2023" का शनिवार को भगवान महावीर परिसर में समापन हुआ। करियर एक्सपो के अंतिम दिन भारत की पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी और गुजरात के शिक्षा मंत्री प्रफुल्ल पंशेरिया मौजूद रहे। किरण बेदी और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में नौकरी के इच्छुक उम्मीदवारों से बातचीत की। किरण बेदी ने छात्रों को केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।

गुजरात अपने युवा कौशल, सुरक्षा और सुशासन के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। पंजाब सेना के जवानों के लिए, हरियाणा खेल पहलवानों के लिए, बेंगलुरु आईटी के लिए, गुजरात उद्यम के लिए जाना जाता है। उन्होंने आगे कहा कि विभिन्न सरकारी, अर्ध-सरकारी, कॉर्पोरेट और स्वायत्त संगठनों के साथ एक छतरी के नीचे आयोजित एक्सपो छात्रों के लिए करियर और शैक्षणिक मार्गदर्शन प्राप्त करने का सबसे अच्छा मंच साबित होगा। राज्य के शिक्षा मंत्री प्रफुल्ल पानशेरिया ने कहा कि आज रोजगार मेले का समापन है। इंटर्नशिप पूरी करने के बाद, छात्र एक अच्छी नौकरी के लिए अपना करियर विकसित करने और इसके लिए कुछ दिखाने के लिए उत्सुक रहते हैं।

एक छात्र के रूप में आपकी बाहरी और आंतरिक शांति जीवित रहे। आप जहां भी जाएंगे, जहां भी जाएंगे, अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। दुनिया में जिन लोगों ने अपना काम और कर्तव्य ईमानदारी से किया है उन्होंने अच्छी प्रगति की है, मुझे आशा है कि आप भी अपने जीवन में ऐसी ही प्रगति करेंगे और आपको शुभकामनाएं देता हूं। भगवान महावीर विश्वविद्यालय के प्रबंध न्यासी अनिल जैन ने बताया कि आज तीन दिवसीय रोजगार मेले का समापन दिवस था। 2500 विद्यार्थियों में से चयनित 900 विद्यार्थियों को राज्य शिक्षा मंत्री द्वारा ऑफर लेटर दिये गये।

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष संजय जैन ने बताया कि तीन दिवसीय रोजगार मेले में कई कार्यक्रम आयोजित किये गये जिसमें नौकरी, काउंसलिंग, एचआर, विश्वविद्यालयों के बीच संबंध, स्टार्ट अप, निवेशकों जैसे करियर से संबंधित सभी विषयों को आमंत्रित किया गया था। तीन दिवसीय रोजगार मेले में कई बच्चों को शिक्षा मंत्री द्वारा ऑफर लेटर दिये गये। कक्षा 9 से 12 तक के 10,000 बच्चों का मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं परामर्श दिया गया। विद्यार्थियों को एक अच्छा मंच प्रदान करने का प्रयास किया गया। तीन दिवसीय जॉब फेयर में चयनित विद्यार्थियों को विभिन्न कंपनियों द्वारा उच्चतम पैकेज 12 लाख तथा न्यूनतम पैकेज 5 लाख दिया गया है।

# निकिता अग्रवाल अध्यक्षा व प्रशांत मित्तल बने सचिव

**सूरत भूमि, सूरत।**

अग्रवाल विकास ट्रस्ट युवा शाखा की 18 वीं वार्षिक साधारण सभा का आयोजन रविवार को सिटी-लाइट स्थित महाराजा अग्रसेन भवन के वृंदावन हॉल में ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय सरावगी, उपाध्यक्ष प्रमोद पोद्दार, सचिव राजीव गुप्ता, कोषाध्यक्ष राहुल अग्रवाल, सहसचिव अनिल शोरेवाला की उपस्थित में हुआ ।

सभा में ट्रस्ट के अध्यक्ष ने युवा शाखा के वर्तमान अध्यक्ष नीरज अग्रवाल एवं युवा शाखा की गतिविधियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों सहित पूरी युवा टीम की प्रशंसा की । इस मौके पर सभा में गत वर्ष किये गए सभी आयोजनों के बारे में बताया गया एवं उनकी झलक LED के दिखाई गयी । इसके पश्चात् वर्ष 2023-24 के लिए नई टीम की घोषणा की गयी । जिसमे निकिता अग्रवाल को अध्यक्षा, प्रशांत अग्रवाल को उपाध्यक्ष, प्रशांत मित्तल को सचिव, संवेद पंसारी को कोषाध्यक्ष, प्रणय चौधरी को सहसचिव एवं समर्थ केडिया को सहकोषाध्यक्ष बनाया गया । ट्रस्ट पदाधिकारियों द्वारा सभी का सम्मान भी किया गया । नवनियुक्त युवा अध्यक्षा निकिता अग्रवाल एवं समस्त टीम ने सभी के सामने अपना संकल्प जाहिर किया एवं युवा शाखा को ट्रस्ट के साथ मिलकर आगे ले जाने की बात कही । इस अवसर पर ट्रस्ट कल्चरल कमेटी संयोजक विनोद अग्रवाल, मनीष अग्रवाल, मीडिया प्रभारी कपीश खाटूवाला सहित अनेकों सदस्यों सहित सम्पूर्ण युवा शाखा व महिला शाखा के सदस्य उपस्थित रहें ।

# फ्री ब्रेस्ट चेक अप कैंप का हुआ आयोजन

**सूरत भूमि, सूरत।** ब्रेस्ट कैंसर अवेयरनेस ग्रुप द्वारा शनिवार को वीआईपी रोड स्थित डा डिंपल छतवानी के चेरिश हॉस्पिटल में महिलाओं के लिए फ्री ब्रेस्ट चेक अप कैंप का आयोजन किया गया । बी कैग की संस्थापक पूनम पाराशर ने बताया की कैंप में सौ से ज्यादा महिलाओ की जाँच की गयी एवं उचित मार्गदर्शन किया गया । ज्ञात रहे की ब्रेस्ट कैंसर अवेयरनेस ग्रुप बी कैग द्वारा समय-समय पर सूरत के अनेकों विस्तार में फ्री ब्रेस्ट चेक अप कैंप का आयोजन किया जाता है । कैंप में रेडियोलॉजिस्ट डा ज्योति नंदवानी और लाइफ स्टाइल एक्सपर्ट डा मुकेश पाराशर ने भी अपनी सेवाएं दी।

# एशिया खेलों में महिला, पुरुष टीम भेजेगा बीसीसीआई, विश्व कप नहीं खेलने वालों को मिलेगी जगह

**मुंबई (एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने चीन के हांग्झोउ में सितंबर में होने वाले एशियाई खेलों के लिए महिला और पुरुष टीम भेजने का निर्णय लिया है। बोर्ड ने शीर्ष परिषद की बैठक के बाद शनिवार को इसकी घोषणा की। बीसीसीआई की ओर से जारी विज्ञप्ति में कहा गया कि विश्व कप 2023 में हिस्सा न लेने वाले खिलाड़ी एशिया कप के लिये चुने जा सकेंगे। एशिया कप का आयोजन 23 सितंबर से आठ अक्टूबर के बीच होना है, जबकि विश्व कप पांच अक्टूबर को शुरू हो जायेगा।

इस बीच, बीसीसीआई के सचिव जय शाह ने कहा कि बोर्ड संन्यास ले चुके खिलाड़ियों सहित सभी भारतीय क्रिकेटरों के लिये अन्य टी20 लीगों में भाग लेने के संबंध में नीति तैयार करेगा। शाह ने कहा कि बोर्ड ने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के आगामी सीज़न में इम्पैक्ट प्लेयर नियम को जारी रखने का फैसला लिया है। शाह ने कहा, 'टीमों को टॉस से पहले अपनी एकादश और चार स्थानापन्न खिलाड़ी चुनने होंगे। टीमें मैच के किसी भी समय इम्पैक्ट प्लेयर का इस्तेमाल कर सकती हैं। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के पिछले सीजन में एक टीम इम्पैक्ट प्लेयर को पारी के 14वें ओवर से पहले ही इस्तेमाल कर सकती थी।' सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के आगामी सीजन में एक ओवर में दो बाउंसर फेंकी जा सकेंगी। बोर्ड ने बैठक के दौरान दो चरणों में देशभर के स्टेडियमों के नवीनीकरण का निर्णय भी लिया। शाह ने कहा, 'पहला चरण आईसीसी पुरुष विश्व कप 2023 के आयोजन स्थलों के नवीनीकरण पर केंद्रित होगा। इससे जुड़ा काम विश्व कप से पहले पूरा जायेगा। दूसरा चरण अन्य आयोजन स्थलों के नवीनीकरण पर काम करेगा।'

# सिंधू और सेन कनाडा ओपन के सेमीफाइनल में

**जुब्लजाना। (एजेंसी)।** कैलगरी-राष्ट्रमंडल खेलों के चैंपियन पीवी सिंधू और लक्ष्य सेन ने विपरीत अंदाज में जीत दर्ज करके यहां कनाडा ओपन सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली सिंधू ने शुक्रवार की रात को खेले गए महिला एकल के क्वार्टर फाइनल में फैंग जी को आसानी से 21-13 21-7 से हराया। यह इस खिलाड़ी के खिलाफ उनकी चार मुकाबलों में पहली जीत है। सेन ने पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में जर्मन क्वालीफायर जूलियन कैरागी को 21-8, 17-21, 21-10 से हराया।

सिंधू का मुकाबला अब दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी जापान की यामागुची से जबकि सेन का जापान के ही चौथी वरीयता प्राप्त केंटा निशिमोतो से होगा। पीवी सिंधू का जापान की शीर्ष वरीयता प्राप्त खिलाड़ी के खिलाफ रिकॉर्ड 14-10 है। इन दोनों के बीच पिछला मुकाबला पिछले साल सिंगापुर ओपन में खेला गया था जिसमें जापानी खिलाड़ी ने जीत दर्ज की थी। दूसरी तरफ सेन का निशिमोतो के खिलाफ रिकॉर्ड 1-1 से बराबर है। सिंधू ने फैंग जी के खिलाफ अच्छी शुरुआत की और 5-1 से बढ़त हासिल कर ली।

इंटरवल तक भारतीय खिलाड़ी 11-6 से आगे थी। सिंधू ने कोर्ट को अच्छी तरह से कवर किया। फैंग जी ने इसके बाद वापसी की कोशिश की और स्कोर 12-16 कर दिया लेकिन सिंधू ने उन्हें आगे मौका नहीं दिया और पहला गेम आसानी से अपने नाम किया। फैंग जी ने दूसरे गेम के शुरू में 5-1 से बढ़त बनाई लेकिन सिंधू ने जल्द ही वापसी की और इंटरवल तक वह 11-5 से आगे थी। इसके बाद उन्होंने मैच जीतने में देर नहीं लगाई।

## वेस्टइंडीज ने सबसे भारी खिलाड़ी के साथ दो अनकैप्ड प्लेयर्स को किया टीम में शामिल

**रोसीयू (एजेंसी)।** वेस्टइंडीज ने भारत के खिलाफ 12 जुलाई से यहां शुरू होने वाले पहले टेस्ट मैच के लिए बाएं हाथ के बल्लेबाज किर्क मैकेंजी और एलिक अथानाजे के रूप में नए चेहरों को अपनी टीम में शामिल किया है जबकि ऑलराउंडर रहकीम कॉर्नवाल ने टीम में वापसी की है। चयन समिति ने दो मैचों की श्रृंखला के पहले मैच के लिए शुक्रवार को 13 सदस्यीय टीम का चयन किया। इसके अलावा दो रिजर्व खिलाड़ियों को भी चुना गया है। मैकेंजी और अथानाजे ने एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं और उन्हें टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण का मौका मिल सकता है। कॉर्नवाल ने अपना अंतिम टेस्ट मैच नवंबर 2021 में खेला था। उनके अलावा बाएं हाथ के स्पिनर जोमेल वारिकन को भी टीम में लिया गया है। वारिकन जिंबाब्वे का दौरा करने वाली टीम का हिस्सा थे लेकिन वह फरवरी में दक्षिण अफ्रीका का दौरा करने वाली टीम में शामिल नहीं थे। उन्होंने अब तक 13 टेस्ट मैच खेले हैं। बाएं हाथ के स्पिनर गुडाकेश मोती चयन के लिए उपलब्ध नहीं थे क्योंकि वह चोट से उबर रहे हैं। चयन समिति के अध्यक्ष डेसमंड हेंस ने कहा,''मैकेंजी और अथानाजे ने वेस्टइंडीज ए टीम के बांग्लादेश के हालिया दौरे में बल्लेबाजी में जिस तरह का रवैया अपनाया उससे हम काफी प्रभावित थे। इन दोनों युवा खिलाड़ियों ने अच्छे रन बनाए और अपनी बल्लेबाजी में परिपक्वता दिखाई और हमारा मानना है कि वह मौका पाने के हकदार हैं।'' उन्होंने कहा,'' हमें मोती के बिना खेलना होगा जो चोट से उबर रहे हैं। इससे स्पिन विभाग में वारिकन और कॉर्नवाल को मौका मिला है। वह दोनों पूर्व में टेस्ट मैच खेल चुके हैं और अपनी भूमिका निभाने में सक्षम हैं।'' हेंस ने कहा,'' हमने कायल मायर्स के नाम पर भी विचार किया लेकिन उनके कुछ कमजोर पक्ष हैं और उन्हें अभी पांच दिवसीय मैच में उतारना हमने उचित नहीं समझा।'' इस श्रृंखला से भारत और वेस्टइंडीज दोनों ही विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के अपने नए चक्र की शुरुआत भी करेंगे। वेस्टइंडीज की टीम इस प्रकार है-क्रैग ब्रैथवेट (कप्तान), जर्मेन ब्लैकवुड (उप कप्तान), एलिक अथानाजे, तेगनारायण चंद्रपॉल, रहकीम कॉर्नवाल, जोशुआ दा सिल्वा, शैनन गेब्रियल, जेसन होल्डर, अल्ज़ारी जोसेफ, किर्क मैकेंज़ी, रेमन रीफ़र, केमर रोच, जोमेल वारिकन। रिजर्व : टेविन इमलाच, अकीम जॉर्डन।

# एशेज का तीसरा टेस्ट : ऑस्ट्रेलिया ने 142 रनों की बढ़त हासिल की

**लीड्स (एजेंसी)।** ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम ने एशेज के तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में अब तक कुल 142 रनों की बढ़त हासिल कर ली है। दूसरे दिन का खेल समाप्त होने से पहले चार विकेट खोने के बाद भी ऑस्ट्रेलिया ने तीसरे एशेज टेस्ट में अपनी दूसरी पारी में चार विकेट पर 116 रन बनाने के साथ ही 142 रनों की बढ़त हासिल कर ली है। ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 263 जबकि इंग्लैंड ने 237 रन बनाये थे। इंग्लैंड की टीम कप्तान बेन स्टोक्स की शानदार बल्लेबाजी 80 रन और गेंदबाजों के अच्छे प्रदर्शन के कारण ही मैच में बनी हुई है।

ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों के सामने दूसरे दिन इंग्लैंड 237 रन पर आउट हो गयी। इससे ऑस्ट्रेलिया को केवल 26 रनों की बढ़त मिल पायी। ऑस्ट्रेलिया के डेविड वार्नर फिर असफल रहे और दो अंकों तक भी नहीं पहुंच पाये। इसके बाद उस्मान ख्वाजा और मार्नस लाबुशेन ने स्कोर आगे बढ़ाया।

लाबुशेन 33 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। अपने अगले ओवर में, मोईन ने स्टीव स्मिथ को आउट कर टेस्ट में अपना 200 वां विकेट लिया। इसके बाद ख्वाजा 43 रन पर आउट हो गए।

ट्रैविस हेड और मिशेल मार्श ने नाबाद 26 रनों की साझेदारी की, जिससे टीम का स्कोर खेल समाप्त होने के समय तक चार विकेट पर 116 रन हो गया। इससे पहले, इंग्लैंड ने दूसरे दिन की शुरुआत 68/3 के साथ की और वह ऑस्ट्रेलिया से 195 रनों से पीछे है। पैट कमिंस ने दिन की दूसरी गेंद पर जो रूट को आउट कर इंग्लैंड को करारा झटका दिया।

रूट को दूसरी स्लिप में डेविड वार्नर ने कैच किया। वह पहले दिन के स्कोर में एक भी रन जोड़े बिना 19 रन बनाकर आउट हो गए। इंग्लैंड ने जॉनी बेयरस्टो के रुप में दूसरा विकेट खोया। इसके बाद मोईन ने बेन स्टोक्स के साथ मिलकर पारी को संभाला।

कमिंस ने मोईन अली 21 को आउट किया, जिन्हें स्मिथ ने स्लिप में कैच किया। पहले सत्र में ऑस्ट्रेलिया हावी रहा। लंच के तुरंत बाद क्रिस वोक्स को आउट करने के बाद इंग्लैंड की 142 पर सात विकेट खोकर दबाव में आ गयी। इंग्लैंड ने दूसरे सत्र की शुरुआत नए बल्लेबाज मार्क वुड के साथ शानदार ढंग से की, जिन्होंने पहली तीन गेंदों पर दो छक्के और एक चौका लगा दिये। अगले ओवर में आउट होने से पहले उन्होंने एक और छक्का लगाया। दूसरे छोर पर विकेट गिरने के साथ, स्टोक्स ने तेजी से रन बनाना शुरू कर दिया और कई चौके लगाए।

## एशिया ओलंपिक परिषद के अध्यक्ष बने शेख तलाल

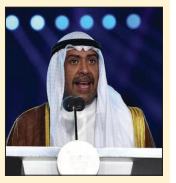

बैंकाक - शेख तलाल फहद अल सबाह एशियाई ओलंपिक परिषद (ओसीए) के अध्यक्ष के रूप में अपने निलंबित भाई की जगह लेंगे। शेख तलाल ने शनिवार को चार वोट से ओसीए अध्यक्ष पद का चुनाव जीत लिया। उनके पिता शेख फहद अल अहमद अल जबर अल सबाह 1980 के दशक की शुरुआत में संगठन के पहले अध्यक्ष थे। उनके भाई शेख अहमद अल फहद अल सबाह ने 1991 से 2021 तक 45 देशों के ओसीए के अध्यक्ष रहे थे। लेकिन जिनीवा में जालसाजी के लिए दोषी ठहराए जाने के बाद उन्हें ओसीए से निलंबित कर दिया गया था। उन्होंने हालांकि आरोपों से इनकार किया और वह इसके खिलाफ अपील कर चुके हैं। ओसीए के पूर्व महासचिव रणधीर सिंह ने 2021 से चुनाव तक अंतरिम आधार पर अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाली थी।

## 1070 करोड़ की संपत्ति के मालिक हैं धोनी

रांची । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी खेल के मैदान के साथ ही बाहर भी शीर्ष पर रहे। धोनी खेल में जहां शिखर पर पहुंचे। वहीं कारोबार जगत के साथ ही कई अन्य क्षेत्रों में भी वह छाये रहे। एक रिपोर्ट के अनुसार धोनी करीब 1070 करोड़ की संपत्ति के मालिक हैं। वह हर महीने 4 करोड़ से ज्यादा कमाते हैं जबकि साल में वह 50 करोड़ से ज्यादा की कमाई करते हैं। उनकी आईपीएल सैलरी 12 करोड़ है। गल 16 आईपीएल सत्र में उन्होंने केवल क्रिकेट के जरिए ही करीब 178 करोड़ रुपए कमाए हैं। धोनी सोशल मीडिया में भी बेहद लोकप्रिय हैं। वह सोशल मीडिया पर कोई एक पोस्ट साझा करने के लिए ही 1 से 2 करोड़ रुपये लेते हैं। इसके अलावा धोनी विज्ञापन के जरिए भी काफी पैसा कमाते हैं। वह अभी 35 से ज्यादा ब्रांड का विज्ञापन कर रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार ब्रांड धोनी की कीमत करीब 663 करोड़ रुपये के करीब है। संन्यास लेने के बाद भी ब्रांड धोनी की वैल्यू बढ़ रही है। धोनी ने जब संन्यास लिया था तो उनकी ब्रांड वैल्यू 61.2 मिलियन डॉलर थी और उनके पास 28 ब्रांड थे। साल 2022 में उनकी वैल्यू जबरदस्त तरीके से बढ़ी और ब्रांड की संख्या 36 हो गई। अभी वह इंडिगो पेंट्स, फायर बोल्ट, अनएकैडमी, गरुड़ एयरोस्पेस, मास्टरकार्ड, मैट्रिमोनी डॉट कॉम, खाता बुक, कार्स 24 समेत कई ब्रांड के चेहरे बने हुए हैं। धोनी खाता बुक, गरुड़ एयरोस्पेस, कार्स 24 जैसी कई कंपनियों में शेयर धारक भी हैं। उनके पास कई आलीशान कारें और सुपरबाइक्स भी हैं। कारों क बात करें तो उनके पास मर्सिडीज बेंज जीएलई 250डी, ऑडी क्यू7, विंटेज रोल्स रॉयस सिल्वर रेथ आदि हैं।

## आईपीएल के बाद इस लीग में खेलने जा रहे थे अंबाती रायुडु , अब किया खेलने से इंकार, फैंस को लगा झटका

**नई दिल्ली (एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड की अगुवाई में भारत में हर वर्ष इंडियन प्रीमियर लीग का आयोजन किया जाता है। इस लीग में भारत के खिलाड़ियों के अलावा कई विदेशी खिलाड़ी भी हिस्सा ले सकते है। इंडियन प्रीमियर लीग की तरह ही दुनिया भर के कई देशों में विभिन्न लीग का आयोजन किया जाता है।

इन लीग में देश और दुनिया भर के खिलाड़ी हिस्सा लेते है। हालांकि भारतीय खिलाड़ियों को इन लीग में हिस्सा लेने की अनुमति अब नहीं होगी। इससे पहले तक भारतीय खिलाड़ी विदेशी लीगों में हिस्सा ले सकते थे, मगर अब बीसीसीआई ने नियमों में बदलाव कर दिया है जिससे रिटायर हो चुके खिलाड़ियों को धक्का लगा है।

इसी नए नियम के कारण अब भारत के पूर्व बल्लेबाज और आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स के लिए खेल चुके अंबाती रायुडु ने भी अमेरिका के क्रिकेट टूर्नामेंट मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) से हटने का फैसला किया है। इस टूर्नामेंट में हिस्सा ना लेने के पीछे उन्होंने निजी कारण बताया है। हालांकि संभावना जताई जा रही है कि इसके

पीछे बीसीसीआई के नियम कारण हो सकते हैं, जिसमें एक दिन पहले ही बदलाव किया गया है जो कि सात जुलाई को हुई थी।

बता दें कि अंबाती रायुडु ने इस वर्ष ही जून में इंडियन प्रीमियर लीग से संन्यास लेने के बाद चेन्नई सुपर किंग्स की फ्रेंचाइजी टैक्सास सुपर किंग्स के साथ कॉन्ट्रैक्ट किया था। ये लीग अमेरिका में 13 जुलाई से 30 जुलाई तक खेली जानी है। खास बात है कि अंबाती रायडू ने ये अहम फैसला उस समय लिया था जब भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) भारतीय खिलाड़ियों के पूर्व निर्धारित संन्यास को रोकने के लिए 'कूलिंग ऑफ पीरियड' की व्यवस्था करने पर विचार कर रहा है। भारत के सक्रिय खिलाड़ी विदेशी लीग में नहीं खेल सकते हैं लेकिन सन्यास लेने के बाद वे इनमें खेल सकते हैं।

### अंबाती के हटने के बाद आया लीग का बयान

अंबाती रायुडु द्वारा इस अमेरिकन लीग से नाम वापस लिए जाने के बाद अब खास बयान भी आया है। टैक्सास सुपर किंग्स ने बयान में कहा,'' अंबाती रायुडु निजी कारणों से टैक्सास सुपर किंग्स की तरफ से एमएलसी के पहले सत्र में भाग लेने के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगे।'' मेजर लीग क्रिकेट अमेरिका में 13 जुलाई से 30 जुलाई तक खेला जाएगा।कोलकाता नाइट राइडर्स, चेन्नई सुपर किंग्स और मुंबई इंडियंस जैसी आईपीएल की फ्रेंचाइजी ने भी एमएलसी में टीम खरीद रखी हैं।

## विश्वकप क्वालीफायर के अंतिम मैच में भी हारी वेस्टइंडीज

हरारे । वेस्टइंडीज की क्रिकेट टीम को विश्वकप क्वालीफायर के सुपर सिक्स के अपने अंतिम मैच में भी करारी हार का सामना करना पड़ा है। श्रीलंकाई टीम ने इस मैच में आठ विकेट से जीत दर्ज की। श्रीलंकाई टीम ने स्पिनर महीश तीक्षणा की शानदार गेंदबाजी के बाद सलामी बल्लेबाज पाथुम निसांका के शानदार शतक से इस मैच को जीता। श्रीलंकाई टीम ने क्वालीयर मुकाबलो में सबसे अधिक जीत के कारण पहले ही विश्वकप के लिए क्वालीफाई कर लिया था जबकि वेस्टइंडीज टीम क्रिकेट इतिहास में पहली बार क्वालीफाई नहीं कर पायी है। इस मैच में श्रीलंकाई टीम ने टॉस जीतकर वेस्टइंडीज की टीम को पहले बल्लेबाजी के लिए बुलाया। इंडीज टीम 48.1 ओवर में 243 रनों पर ही सिमट गयी। कीसी कार्टी ने सबसे ज्यादा 87 रन बनाए। वहीं श्रीलंका की ओर से तीक्षणा ने 34 रन देकर चार जबकि दासुन हेमंता ने 49 रन देकर दो खिलाड़ियों को आउट किया। श्रीलंकाई टीम ने जीत के लिए मिले लक्ष्य को 44.2 ओवर में ही दो विकेट पर 244 रन बनाकर आसान कर लिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका की शुरुआत अच्छी रही। पाथुम निसांका ने 104 रन बनाए। इसके अलावा दिमुथ करुणारत्ने ने 83 रन बनाये।

## ऋषभ के विश्वकप के बाद फिट होने की उम्मीदें : डीडीसीए

बेंगलुरु । दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) के निदेशक श्याम शर्मा ने कहा है कि आक्रामक विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत एकदिवसीय विश्वकप के बाद फिट हो सकते हैं। डीडीसीए निदेशक के अनुसार ऋषभ बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के रिहैब कार्यक्रम में तेजी से उबर रहे हैं। उम्मीद की जा सकती है कि उन्हें इस साल एकदिवसी विश्व कप समाप्त होने के बाद फिट घोषित कर दिया जाये। अकादमी में ऋषभ से मिलकर आये श्याम ने कहा, ऋषभ पंत अच्छी प्रगति कर रहे हैं। वह ठीक प्रतिक्रिया दे रहे हैं। एकदिवसीय विश्वकप के बाद वह ठीक हो सकते हैं। हालांकि पूरी तरह से फिट घोषित होने के बाद ही वह अकादमी से निकलेंगे। अप्रैल से वह पंत एनसीए में पुनर्वास से गुजर रहे हैं, जहां उन्होंने बिना बैसाखी के चलना और बिना किसी सहारे के सीढ़ियां चढ़ना शुरू कर दिया है। शर्मा ने कहा कि इस क्रिकेटर को एनसीए में सीढ़ियों पर चढ़ने और मिट्टी के साथ-साथ घास पर चलने के माध्यम से अपनी रिकवरी में प्रगति करते हुए देखकर खुशी हुई। शर्मा ने कहा, एनसीए में उनका चल रहा पुनर्वास बहुत अच्छे से हो रहा है। वह खूब व्यायाम भी कर रहे हैं। मैं एनसीए में लगभग आधे घंटे तक था। उसे चलने, सीढ़ियाँ चढ़ने से संबंधित सभी व्यायाम कराए जा रहे हैं और वह मिट्टी या घास पर भी चल रहा है। माना जाता है कि एनसीए में फिजियो एस रजनीकांत और तुलसी राम इस क्रिकेटर के पुनर्वास पर काम कर रहे हैं। शर्मा के अलावा, डीडीसीए के निदेशक हरीश सिंगला भी अकादमी में इस क्रिकेटर से मिलने पहुंचे थे।

## वावरिंग को हराकर विंबलडन के अंतिम 16 में पहुंचे जोकोविच

लंदन । सर्सिया के नोवाक जोकोविच ने विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के तीसरे दौर में स्विटजरलैंड के स्टान वावरिंग को 6-3, 6-1, 7-6(5) से हराकर अगले दौर में प्रवेश किया। जोकोविच ने इस मैच में आसान जीत हासिल की। इस जीत के साथ ही जोकोविच अंतिम 16 में पहुंच गए। अब यहां उनका मुकाबला मुकाबला पोलैंड के 17वीं वरीयता प्राप्त ह्यूबर्ट हुरकाज से होगा। वहीं पुरुषों के एकल वर्ग में ही तीसरी वरीयता प्राप्त रुस के दानिल मेदवेदेव ने एड्रियन मन्नारिनो 6-3, 6-3, 7-6 से हराकर अगले दौर में जगह बनायी. दूसरी ओर महिला वर्ग की बात करें तो चेक गणराज्य की पेत्रा क्वितोवा ने अलेक्सांद्रा सासनोविच को हराकर विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के तीसरे दौर में प्रवेश किया है। दो बार की विजेता रही क्वितोवा ने बेलारूस की खिलाड़ी को 6-2, 6-2 से हराया। महिला एकल के अन्य मुकाबलों में अमेरिका की मैडिसन कीज ने विक्टोरिया गोलूबिक 7-5, 6-3 से हराकर तीसरे दौर में प्रवेश किया। अब कीज का सामना यूक्रेन की मार्ता कोस्तयुक से होगा। पाउला बडोसा के चोटिल होने के कारण बीच मुकाबले से हटने के बाद कोस्तयुक अगले दौर में पहुंच गयी हैं। बडोसा और कोस्तयुक के बीच जब मैच रोका गया तो कोस्तयुक 6-2, 1-0 से आगे थी।

## विश्व युवा तीरंदाजी चैम्पियनशिप में भारतीय टीम को कांस्य मिला

लिमेरिक । भारतीय अंडर-18 पुरुष तीरंदाजी टीम ने विश्व युवा चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता है। भारतीय टीम ने शानदार प्रदर्शन कर कोलंबिया को 6-0 से हराकर तीसरा स्थान हासिल करते ही कांस्य पर कब्जा किया। कांस्य पदक के लिए हुए प्लेऑफ मुकाबले में भारतीय खिलाड़ियों उज्जवल धामा, गोल्डी मिश्रा और अगस्त्य सिंह ने मैक्सिको की टीम को सीधे सेटों में 49-47, 50-49 में हराया। वहीं एक अन्य मुकाबले में भारत की महिला कम्पाउंड टीम ने एक दिन पहले ही अंडर-18 और अंडर-21 टीम खिताब जीतने के साथ ही दो और स्वर्ण पदक अपने नाम किये। इस प्रकार भारतीय टीम ने अभी तक इस चैम्पियनशिप में कुल 3 स्वर्ण, एक रजत और तीन कांस्य पदक जीते हैं। इससे पहले प्रियांश और अवनीत कौर ने जूनियर मिश्रित टीम कम्पाउंड स्पर्धा में जीत दर्ज की थी। भारत ने पुरुष अंडर-18 कम्पाउंड टीम स्पर्धा में एक रजत और दो कांस्य पदक जीते थे।

# विश्व कप : पाकिस्तान भारत आएगा या नहीं? पीसीबी के पत्र के बाद शाहबाज शरीफ ने उठाया बड़ा कदम

**मुम्बई (एजेंसी)।** पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड द्वारा आईसीसी विश्व कप 2023 के लिए अपनी पुरुष क्रिकेट टीम की भारत यात्रा के बारे में सलाह मांगने के लिए सरकार को पत्र लिखने के बाद, पाकिस्तान के प्रधान मंत्री शाहबाज शरीफ ने इस पर निर्णय लेने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है। समिति की अध्यक्षता विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी करेंगे और अन्य सदस्यों में खेल मंत्री अहसान मजारी, कानून और न्याय मंत्री आजम नजीर तरार शामिल हैं।

### भागीदारी सरकारी मंजूरी के अधीन

इसके अलावा इस कमेटी में मरियम औरंगजेब, असद महमूद, अमीन उल हक, कमर ज़मान कैरा, पूर्व राजनयिक तारिक फातमी और खुफिया एजेंसियों के अन्य हाई प्रोफाइल सदस्य भी हैं। समिति का मुख्य काम पीएम शरीफ को सलाह देना होगा कि क्या पाकिस्तान को विश्व कप के लिए अपनी पुरुष क्रिकेट टीम भारत भेजनी चाहिए, जिसका कार्यक्रम जून के आखिरी सप्ताह में घोषित किया गया था। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) को उम्मीद है कि पाकिस्तान 5 अक्टूबर से शुरू होने वाले एकदिवसीय विश्व कप के लिए भारत की यात्रा करेगा। हालाँकि, पीसीबी ने उन्हें बताया है कि दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण संबंधों के कारण प्रमुख कार्यक्रम में राष्ट्रीय टीम की भागीदारी सरकारी मंजूरी के अधीन है।

### ये है पाकिस्तान के कार्यक्रम

पीसीबी ने पाकिस्तान सरकार को पत्र लिखकर आगे की राह पर स्पष्टता मांगी थी और यह भी पूछा था कि क्या अधिकारियों को भारत और उन पांच स्थानों पर कोई सुरक्षा चिंता है जहां पाकिस्तान को अपने नौ ग्रुप मैच खेलने हैं। इस विश्व कप में पाकिस्तान का सबसे लंबा प्रवास हैदराबाद में है। राजी गांधी स्टेडियम में दो अभ्यास मैच खेलने के बाद, वे नीदरलैंड और श्रीलंका के खिलाफ उसी स्थान पर अपना अभियान शुरू करेंगे। उन्हें भारत के खिलाफ अहमदाबाद में एक, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के खिलाफ बेंगलुरु में दो, बांग्लादेश और इंग्लैंड के खिलाफ कोलकाता में दो और अफगानिस्तान और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ चेन्नई में दो मैच खेलने हैं।

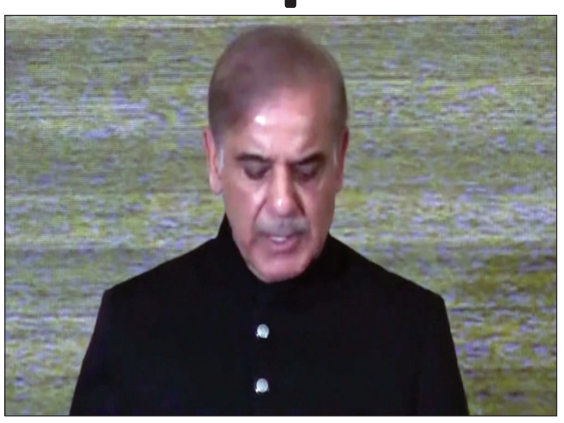

# मुख्यमंत्री ने भारत की जी20 अध्यक्षता के तहत यू20 मेयरल समिट का उद्घाटन किया

**अहमदाबाद** । गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने जी20 समिट के अंतर्गत शुक्रवार को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर में आयोजित अर्बन20 (यू20) मेयरल समिट का उद्घाटन करते हुए यह साफ किया कि दुनिया के शहरों के आधुनिक विकास एवं भविष्य की चुनौतियों के समाधान के लिए यू20 एक सक्षम मंच साबित होगा। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि इस यू20 के जरिए वैश्विक नेता और महापौर एक मंच पर इकट्ठे हुए हैं। वे तीव्र शहरीकरण के इस युग में शहरों के लिए आर्थिक विकास के अवसर ही नहीं, बल्कि अपने-अपने देशों के लिए सामाजिक-आर्थिक एवं आर्थिक केंद्र बनाने के अवसरों के संबंध में भी विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। मुख्यमंत्री ने ग्लोबल लीडर और यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सफल प्रयासों से भारत को मिली जी20 की अध्यक्षता पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि 'वसुधैव कुटुम्बकम' - 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' की थीम के साथ आयोजित यह यू20 सतत शहरी विकास के साझा एजेंडा के लिए सभी को साथ जोड़ने वाली समिट है। उन्होंने यह भी कहा कि एक वैश्विक समुदाय के रूप में भविष्य में हमारे सामने जो चुनौतियां आएंगी, वह कई मायनों में एक जैसी चुनौतियां होंगी। मुख्यमंत्री ने इस पर विस्तार से रोशनी डालते हुए कहा कि बढ़ते शहरीकरण को टिकाऊ विकास, जलवायु परिवर्तन, सार्वजनिक सेवा वितरण तथा यातायात संबंधित समस्याओं के समाधान के अनुरूप बनाना मौजूदा समय की मांग है। उन्होंने गुजरात को देश के सर्वाधिक शहरीकृत राज्यों में से एक बताते हुए यह भी जानकारी दी कि गुजरात के शहरीकरण का इतिहास 4500 वर्ष पहले सिंधु घाटी की सभ्यता से शुरू हुआ है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने यह भी कहा कि गुजरात के शहरी विकास क्षेत्र की सफलता की गाथा का श्रेय नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा और दूरदर्शी नेतृत्व को जाता है। उन्होंने कहा कि राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने शहरी नागरिकों के 'ईज ऑफ लिविंग' यानी जीवन जीने की सुगमता की वृद्धि के लिए नागरिक सुविधाओं में आधुनिक टेक्नोलॉजी का उपयोग करने की दिशा दी है। उनके इस विजन के परिणामस्वरूप ही राज्य के शहरों में पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और नागरिक सुविधआओं के विकास में नवाचार और फ्यूचरिस्टिक प्रोजेक्ट आए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने गुजरात के शहरीकरण को वैश्विक मानक बनाने वाले प्रकल्पों की भेंट दी है। उन्होंने इस संदर्भ में गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी), सूरत डायमंड बूर्स, धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (एसआईआर) और साबरमती रिवरफ्रंट का उदाहरण दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके मार्गदर्शन में गुजरात ने टॉप-डाउन एप्रोच और जन केंद्रित शहरी विकास को प्रोत्साहन दिया है। इतना ही नहीं, शहरी विकास के मास्टर प्लान को समावेशिता के साथ तैयार कर सतत विकास को हरेक प्रोजेक्ट के केंद्र में कोर वैल्यू के रूप में रखा जाता है। इस दो दिवसीय समिट में शहरी क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के जटिल प्रभाव के विरुद्ध जनजागरूकता पैदा करने सहित जल सुरक्षा, डिजिटलाइजेशन को बढ़ावा देने, महिला एवं बच्चों को शहरी विकास की मुख्यधारा में शामिल करने जैसे गहन विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने समिट में भाग ले रहे महापौरों और शहरी नेताओं से अनुरोध किया कि यह आवश्यक है कि इन सभी क्षेत्रों में अपने शहरों की सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान हो। उन्होंने इस अवसर पर स्विट्जरलैंड के भारत स्थित राजदूत डॉ. राल्फ हेकनर की उपस्थिति में अहमदाबाद महानगर पालिका द्वारा तैयार किए गए 'क्लाइमेट रेजिलिएंट सिटी एक्शन प्लान फॉर अहमदाबाद' का विमोचन किया। इस प्लान को वर्ष 2070 तक नेट जीरो एमिशन को साकार करने के लिए स्विस एजेंसी फॉर डेवलपमेंट एंड कोऑपरेशन के सहयोग से तैयार किया गया है।

केंद्रीय आवास और शहरी विकास राज्य मंत्री कौशल किशोर ने देश-विदेश से आए प्रतिनिधियों का भारत में स्वागत करते हुए कहा कि भारत प्राचीन हड़प्पा काल से ही शहरी विकास में आगे रहा है और आज के आधुनिक युग में भी भारत अपनी सतत एवं विशेष पहलों से अन्य राष्ट्रों को प्रेरणा दे रहा है। उन्होंने कहा कि भारत की जी20 अध्यक्षता के तहत आज आयोजित हो रही अर्बन20 मेयरल समिट दुनिया के विकसित देशों में लागू सर्वोत्तम प्रथाओं और विशेष पहलों के आदान-प्रदान का बेहतरीन माध्यम बनेगी। केंद्रीय राज्य मंत्री ने यह विश्वास व्यक्त किया कि गुजरात में इन दो दिनों के दौरान आयोजित हो रही यू20 समिट में विभिन्न विषयों पर हुए विचार-विमर्श आगामी समय में शहरी विकास क्षेत्र में अहम भूमिका निभाएंगे। केंद्रीय राज्य मंत्री ने आगे कहा कि भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज जी20 के जरिए देश के तेज विकास को पूरी दुनिया के समक्ष उजागर करने का काम किया है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में भारत ने शहरी विकास और टिकाऊ शहरीकरण की दिशा में सौर सहित नवीकरणीय ऊर्जा, जल सुरक्षा, सबको आवास, अपशिष्ट जल का पुनर्प्रयोग और ठोस कूड़ा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में विभिन्न नीतियों को अत्यंत तेजी से कार्यान्वित किया है। इसके साथ ही भारत ने 'मेक इन इंडिया' जैसे मिशन में आम जनमानस को साथ जोड़कर भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयास किए हैं। भारत ने स्टैंड अप योजना के अंतर्गत महिलाओं को बिना गारंटी कर्ज और सरकारी सेवाओं के डिजिटलीकरण जैसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। केंद्रीय राज्य मंत्री ने कहा कि आज की इस अर्बन20 समिट का दुनिया में बढ़ रहे शहरीकरण के बीच लोगों का उच्च गुणवत्तायुक्त जीवन सुनिश्चित करने में तथा दुनिया के शहरों के टिकाऊ विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। उन्होंने सभी प्रतिनिधियों से यह आग्रह किया कि वे 'वसुधैव कुटुम्बकम' की संकल्पना को साकार करने की दिशा में विचार-विमर्श करें।

अर्बन 20 की छठी श्रेणी की चेयर सिटी अहमदाबाद के महापौर किरीट परमार ने सभी मेहमानों का गुजरात में स्वागत करते हुए कहा कि दुनिया में बढ़ते शहरीकरण के साथ यू20 को काफी महत्व मिला है। जब से जी20 समिट पेरिस करार के साथ जुड़ी है, तभी से आर्थिक और टिकाऊ विकास की ओर ध्यान केंद्रित कर, यू20 के माध्यम से जलवायु परिवर्तन, डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन, सिटी लेवल इन्वेस्टमेंट और हेल्थ केयर जैसे अनेक मुद्दों को संबोधित किया गया है। इस अवसर पर अर्बन 20 के सहयोगी संगठन 'सी40 शहरों' के उप कार्यकारी निदेशक श्री केविन ऑस्टिन ने गुजरात की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए कहा कि शहरों में मेट्रो और बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम के द्वारा जनता की पहुंच और भी आसान बन गई है। साथ ही अहमदाबाद पहला ऐसा शहर है जिसका अपना एडवांस एक्शन प्लान तैयार है।

## आगामी 48 घंटे गुजरात में हो सकती है भारी से अतिभारी बारिश

**अहमदाबाद।**

बरसाती माहौल ने फिर एक बार गुजरात को अपनी आगोश में ले लिया। मानसून के दूसरे राउंड में तीन दिन से गुजरात के विभिन्न जिलों में सामान्य से भारी बारिश हो रही है। ऐसे में अगले 48 घंटे गुजरात में भारी से अतिभारी बारिश की भविष्यवाणी की गई है। कच्छ के अलावा सौराष्ट्र के जामनगर, देवभूमि द्वारका, जूनागढ़, गिर सोमनाथ समेत जिलों में 8 ईंच या उससे अधिक बारिश की संभावना है। मौसम विभाग को अगले दो दिन समुद्र में नहीं जाने की चेतावनी दी गई है। सौराष्ट्र-कच्छ के अलावा उत्तरी गुजरात के साबरकांठा, मेहसाणा, पाटन, बनासकांठा में 4 से 8 ईंच तक बारिश का पूर्वानुमान है। दक्षिण गुजरात के सूरत, वलसाड, नवसारी इत्यादि में भारी बारिश हो सकती है।अहमदाबाद में भी अतिभारी बारिश की संभावना है।

मौसम के जानकार अंबालाल शास्त्री के मुताबिक गुजरात के अनेक जिलों में भारी से अतिभारी बारिश की वजह से कई नदी-नाले समेत जलाशय छलक जाएंगे। अंबालाल ने नर्मदा, तापी और रूपेण समेत बनासकांठा की नदियों में बाढ़ आने की भी संभावना व्यक्त की है। अंबालाल ने दक्षिण गुजरात, सौराष्ट्र के बाद उत्तरी गुजरात में भी भारी बारिश की भविष्यवाणी की है। मध्य गुजरात के दाहोद, महीसागर, छोटाउदेपुर और वडोदरा में भारी से अतिभारी बारिश की संभावना है। 11 जुलाई के बाद गुजरात को बारिश से राहत मिलेगी। हांलाकि चार दिन बाद यानी 15 जुलाई से फिर एक बार बारिश का दौर शुरू होगा, जो 20 जुलाई तक जारी रहेगा। जिसके बाद 24 से 28 जुलाई के दौरान फिर एक बार मूशलाधार बारिश होगी। इस दौरान उत्तर-मध्य गुजरात में भारी से अतिभारी बारिश हो सकती है। अंबालाल के मुताबिक 8 अगस्त तक गुजरात के अधिकतम हिस्सों में बारिश होगी।

## जामनगर से अमृतसर को जोड़ने वाले एक्सप्रेस वे बनकर तैयार, पीएम मोदी करेंगे लोकार्पण

**अहमदाबाद।**

गुजरात समेत चार राज्यों को जोड़ने वाला एक्सप्रेस वे बनकर तैयार हो गया है और इसका लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी करेंगे। 22500 करोड़ रुपए की लागत से तैयार जामनगर-अमृतसर कोरिडोर गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पंजाब को जोड़ेगा। अमृतसर को जामनगर से जोड़ने वाला 91। किलोमीटर लंबा यह ग्रीनफिल्ड 6 लेन एक्सेस कंट्रोल्ड कोरिडोर उत्तर और मध्य भारत के बीच कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। यह एक्सप्रेस वे के साथ पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्य जामनगर और कंडला के मुख्य बंदरगाहों से सीधे जुड़ जाएंगे। इस कोरिडोर से । पोर्ट, 9 बड़े एयरपोर्ट और एक मल्टी मॉडल लोजिस्टिक पार्क भी जुड़ेगा। इस एक्सप्रेस वे से अमृतसर, बिकानेर, जोधपुर, बाडमेर और कच्छ जैसे पर्यटन स्थलों को बेहतर कनेक्टिविटी मिलेगी। भटिंडा, बाडमेर और जामनगर की 3 बड़ी ऑइल रिफाइनरी को जोड़ने वाला यह भारत का पहला एक्सप्रेस वे होगा। इस कोरिडोर का करीब 45 प्रतिशत हिस्सा राज-स्थान में है। 6 लेन ग्रीन फिल्ड इकोनोमिक कोरिडोर राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बिकानेर, जोधपुर, और बाड़मेर जिले को सीधे जोड़ेगा। राजस्थान में एक्सप्रेस वे की लंबाई 500 किलोमीटर से अधिक है। यह एक्सप्रेस वे हनुमानगढ़ जिले के जाखडावली गांव से जालोर जिले के खेतलावास के बीच चलेगा। इस एक्सप्रेस वे के उदघाटन के बाद यात्रियों का समय तो बचेगा ही, साथ ही बड़े शहरों और उद्योगों तक पहुंचना भी आसान हो जाएगा। यह कोरिडोर राजस्थान के पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देगा। रु. 22500 करोड़ की लागत से बनकर तैयार एक्सप्रेस वे पर एडवान्स ट्रैफिक मैनेजमेंट होगा। एक्सप्रेस वे पर इलेक्ट्रोनिक टोल प्लाजा होंगे। जिससे आप जितनी दूरी तय करोगे उतना ही टोल कटेगा।

## पानी में डूबने की दो अलग अलग घटनाओं में तीन युवकों की मौत, 10 लोगों का रेस्क्यू किया गया

**अहमदाबाद।** शहर समेत राज्यभर में मानसून का दूसरा राउंड शुरू हो चुका है और मूशलाधार बारिश बारिश की वजह से नदी-नाले उफान मार रहे हैं। बरसाती माहौल के बीच पानी में डूबन की दो अलग अलग घटनाओं में तीन युवकों की मौत हो गई। जबकि 10 लोगों को बचा लिया गया। जानकारी के मुताबिक अहमदाबाद के दाणीलीमडा क्षेत्र के तीन युवक धंधुका की नहर में नहाने गए थे। नहर में तीन युवक जब डूबने लगे तो मदद की गुहार लगाने लगे। युवकों की चीखपुकार सुनकर आसपास के लोग घटनास्थल पर जमा हो गए और फायर विभाग को जानकारी दी। घटनास्थल पर पहुंची फायर विभाग की टीम ने दो युवकों को बचा लिया। जबकि एक युवक की पानी में डूबने से मौत हो गई। बचाव टीम ने मृतक युवक का शव बाहर निकाला। दूसरी घटना महीसागर जिले की है। पंचमहल जिले के मानगढ़ हिल घूमने गए 10 युवकों में से 2 युवक महीसागर जिले के संतरामपुर स्थित नदी में नहाने गए थे। जिसमें 8 युवक को बचा लिया गया, जबकि दो युवकों की पानी में डूबकर मौत हो गई। काफी मशक्कत के बाद मृतक युवकों के शव नदी से बाहर निकाले गए।

## अदालती नोटिस

**सम्मन वास्ते करारदार उमूर तनकीह तलब ( आर्डर 5 कायदा 1 व 5 )**
**न्यायालय श्रीमान सिविल जज ( जू0डी0 ) शाहगंज जौनपुर उ.प्र.**
**मु.नं. 992 सन् 2022**
**दयाशंकर शुक्ल**
**बनाम विद्याशंकर शुक्ला**

**बनाम ( 2 ) चन्दन शुक्ला उ.त. 47 वर्ष पुत्र स्व.दुर्गा प्रसाद शुक्ला निवासी सुप्रभ अपार्टमेन्ट अपोजिट टोरेन्ट टॉवर वेजलपुर अहमदाबाद सिटी अहमदाबाद गुजरात 380051 ( 3 ) उषा शुक्ला उ.त. 73 वर्ष पत्नी स्व.दुर्गा प्रसाद शुक्ला निवासिनी सुप्रभ अपार्टमेन्ट अपोजिट टोरेन्ट टॉवर वेजलपुर अहमदाबाद सिटी अहमदाबाद गुजरात 380051**

**हरगाह उपरोक्त ने आपके नाम एक नालिश बाबत दायर की हैं। लेहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख माह सन ई0 बवक्त बजे अदालत या मारफत अपने वकील के जो मुकदमा के हालात के करार वाकई वाकिफ हो और कुल उमराह अहम मुतलिका मुकदमा का कागज देखके या जिनके साथ कोई शख्स हो जो ऐसे सवालात का जबाब दे सके हाजिर हो और जबाब देही दावा की करें और हरगाह वही तारीख को आप इजहार के लिए हाजिर हो जो बावत इनफिसाल कत्तई मुकदमा मजकूर हुई हैं और आपको लाजिम हैं उस रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हो पेश करें। आपको इत्तिला दी जाती हैं कि नालिश मजकूर में हाजिर न होंगे तो आपकी गैर हाजिरी में आपके खिलाफ फैसला सादिर कर दिया जायेगा।**

**तारीख पेशी 15-07-2023**
**जवाब / तनकीह**

**बदस्त मेरे दस्तखत और मोहर अदालत के बतारीख माह सन् को जारी किया गया।**

**( न्यायालय )**

## तीन अलग अलग घटनाओं में एक महिला समेत तीन लोगों की मौत

**अहमदाबाद ।**

राज्य के अलग अलग जिलों में तीन दुर्घटनाओं में एक महिला समेत तीन लोगों की मौत हो गई। जबकि एक बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पहली घटना दाहोद की जिसमें एक कार चालक की लापरवाही की वजह से बाइक सवार महिला की जान चली गई। दाहोद के एपीएमसी सर्कल के निकट पार्क कार के चालक ने अचानक गेट खोल दिया। जिसकी वजह से पीछे आ रही मोटर साइकिल कार के दरवाजे से टकराकर सड़क पर गिर पड़ी। बाइक पर सवार महिला भी सड़क भी जा गिरी। उसी वक्त पीछे से आया ट्रक महिला को रौंदते हुए आगे बढ़ गया। गंभीर हालत में महिला को तुरंत अस्पताल के लिए रवाना किया गया। लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले ही रास्ते में महिला ने दम तोड़ दिया। खबर पाते ही घटनास्थल पर पहुंची पुलिस ने आगे की कार्यवाही शुरू की। दूसरी घटना राजकोट में माधापर सर्कल से अयोध्या चौक के बीच हुई, जिसमें दो सगे भाइयों की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक भावेश नारीगर और जीतेन्द्र नारीगर कोठारिया रोड से माधापर सर्कल की ओर जा रहे थे। उस वक्त माधापर सर्कल और अयोध्या चौक के बीच ट्रक ने दोनों को अपनी चपेट में ले लिया। इस हादसे में भावेश और जीतेन्द्र की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। दो जवान बेटों की मौत से परिवार में शोक व्याप्त है। तीसरी घटना घटना आणंद के सामरखा चौराहे के निकट गामडी ब्रिज पर हुई। दरअसल एक युवक रोंग साइड में ब्रिज पर जा रहा था। उस वक्त सामने आ रहे आइशर ट्रक से टकरा गया। इस घटना में घायल बाइक सवार को तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। दुर्घटना के बाद ब्रिज पर कुछ समय के जाम लग गया।

## श्रमिकों के लिए पायलट प्रोजेक्ट के रूप में अंत्योदय श्रमिक सुरक्षा योजना शुरू की गई

**गाँधीनगर** । मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल द्वारा सर्व समावेशी विकास तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के प्रति राज्य सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए शनिवार को खेड़ा जिले के नडियाद में डाक विभाग, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक तथा श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के सहयोग से ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकृत खेड़ा जिले के श्रमिकों के लिए च्अंत्योदय श्रमिक सुरक्षा अकस्मात बीमा योजनाज्ञ का पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया गया। श्रमयोगियों के लाभ के लिए खेड़ा जिले में प्रायोगिक आधार पर इस अनूठी योजना को शुरू करने वाला गुजरात देश का पहला राज्य बन गया है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सुशासन की चर्चा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जनता और सरकार दोनों एक हो गए हैं। जिसके परिणाम स्वरूप समाज में अंतिम छोर पर रहने वाले लोगों की चिंता करने वाली सरकार सड़क,पानी, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे, लगभग सभी मापदंडों में अग्रणी रहकर प्रत्येक सरकारी योजना का 100त्न लाभ लोगों तक पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। डबल इंजन सरकार के अविरत प्रयासों के बारे में बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि परिणामस्वरूप सरकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करने का कार्य अपने सेचुरेशन पॉइंट तक पहुंचने लगा है। नल से जल योजना, आयुष्मान कार्ड, विधवा पेंशन, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, स्वच्छ भारत मिशन आदि से लोगों के जीवन स्तर में काफी सुधार हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के इतिहास में पहली बार विकास की राजनीति का आरंभ हुआ है। आज देश के किसी भी भूभाग में चुनाव की चर्चा के केंद्र में विकास की बात को रखना पड़ता है। प्रधानमंत्री के 9 साल के सुशासन के दौरान गुजरात को विकास का सबसे अधिक लाभ प्राप्त हुआ है। केन्द्र सरकार की योजनाओं के लाभ के बारे में बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत गुजरात में 3 लाख लोगों को लोन का लाभ मिला है। प्रधानमंत्री जनधन योजना के माध्यम से 46 करोड़ खाताधारकों को सरकारी योजनाओं का पैसा छ्वक्चञ्ज (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) के माध्यम से सीधे उनके बैंक खाते में दिया जा रहा है, इससे पहले चलने वाली बिचौलिया संस्कृति पूरी तरह से समाप्त हो गई है।

## गुजरात एटीएस ने कच्छ में बीएसएफ यूनिट के चपराशी को पकड़ा, पाक को भेजता था खुफिया जानकारी

**अहमदाबाद।** गुजरात एटीएस ने कच्छ में बड़ी कार्यवाही करते हुए नीलेश वडिया नामक एक शख्स को पकड़ लिया। गिरफ्तार नीलेश कच्छ में बीएसएफ यूनिट में चपराशी है और भारत की खुफिया जानकारी पाकिस्तानी हेन्डलर को भेजता था। पाकिस्तान भारत की खुफिया और संवेदनशील जानकारी हासिल कर कुछ करे उससे पहले ही गुजरात एटीएस ने एक बड़े षडयंत्र का पर्दाफाश कर दिया। पाकिस्तान ने कच्छ में बीएसएफ यूनिट में बतौर चपराशी काम करने वाले नीलेश को अपना मुहरा बनाया था। अपने हेन्डलर के जरिए पाकिस्तान गुजरात के बीएसएफ की यूनिट में काम करनेवाले नीलेश से खुफिया जानकारी मंगवाता था। लेकिन इसकी भनक गुजरात एटीएस को लग गई और उसने नीलेश को गिरफ्तार कर लिया। जानकारी के मुताबिक नीलेश ने भारत की खुफिया जानकारी पाकिस्तान को पहुंचाने के




बदले में रु. 25 हजार से भी अधिक की रकम ली थी। नीलेश ने एक युवती का फेक आईडी भी बनाया था। नीलेश की गतिविधियां संदिग्ध लगने पर एटीएस पिछले काफी समय से उसकी एक्टिविटी पर नजर गड़ाए हुई थी। नीलेश का मोबाइल के मोबाइल की एफएसएल जांच में हकीकत सामने आई है। फिलहाल नीलेश के खिलाफ ऑफिशियल सिक्रेट एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है। फिलहाल गुजरात एटीएस पूरे मामले की जांच कर रही है।

## गुजरात में राज्यसभा का चुनाव नहीं लड़ेगी कांग्रेस, संख्याबल कम होने से किया फैसला

**अहमदाबाद ।**

गुजरात में राज्यसभा चुनाव को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। 24 जुलाई को गुजरात में राज्यसभा की 3 तीन सीटों के लिए चुनाव होगा और इस चुनाव में कांग्रेस का कोई उम्मीदवार नहीं होगा। कांग्रेस का उम्मीदवार नहीं होने से भाजपा के तीनों प्रत्याशियों का निर्विरोध चुना जाना तय है। दरअसल 182 सीटों वाली गुजरात विधानसभा में कांग्रेस के केवल 1। विधायक हैं, जबकि भाजपा का संख्याबल 156 है। ऐसे में कांग्रेस के एक भी उम्मीदवार के जीतने की कोई संभावना नहीं है। इसे देखते



हुए गुजरात कांग्रेस ने राज्यसभा चुनाव में को उम्मीदवार नहीं उतारने का फैसला किया है। दूसरी ओर राज्यसभा चुनाव को लेकर भाजपा एक्शन है और कभी भी अपने तीन उम्मीदवारों के नाम का ऐलान कर सकती है। विदेश मंत्री एस जयशंकर समेत जुगलजी ठाकोर और दिनेश अनावडिया की टर्म अगस्त महीने में खत्म हो रही है। गुजरात से राज्यसभा सांसद एस जयशंकर को भाजपा रिपीट करे इसकी ज्यादा संभावना है। जबकि जुगलजी ठाकोर और दिनेश अनावडिया के स्थान पर किसी और अवसर मिल सकता है। गुजरात में राज्यसभा की कुल 11 सीटें हैं। जिसमें 8 भाजपा के पास हैं और कांग्रेस के खाते में 3 सीटें हैं। सौराष्ट्र और उत्तर गुजरात के नेता को भाजपा राज्यसभा भेज चुकी है। संभावना है कि अबकी बार भाजपा दक्षिण गुजरात और मध्य गुजरात के किसी नेता को अवसर दे सकती है। राज्यसभा में भाजपा के 8 सांसदों में 3 सौराष्ट्र के, 3 उत्तर गुजरात के, 1 अहमदाबाद के और एक सांसद एस जयशंकर अन्य राज्य से हैं और मौजूदा विदेश मंत्री है। पूरी संभावना है कि भाजपा फिर एक बार गुजरात से एस जयशंकर को राज्यसभा भेज सकती है।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत ( गुजरात ) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ ( गुजरात ) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत ( गुजरात ) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, ( न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा )